بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

विशेषांक

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अल्लाह तआला का अस्तित्व

अंक 52-53

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

8-15 जमादियुल अव्वल 1442 हिज्री कम्री 24-31 फतेह 1399 हिज्री शम्सी 24-31 दिसम्बर 2020 ई.

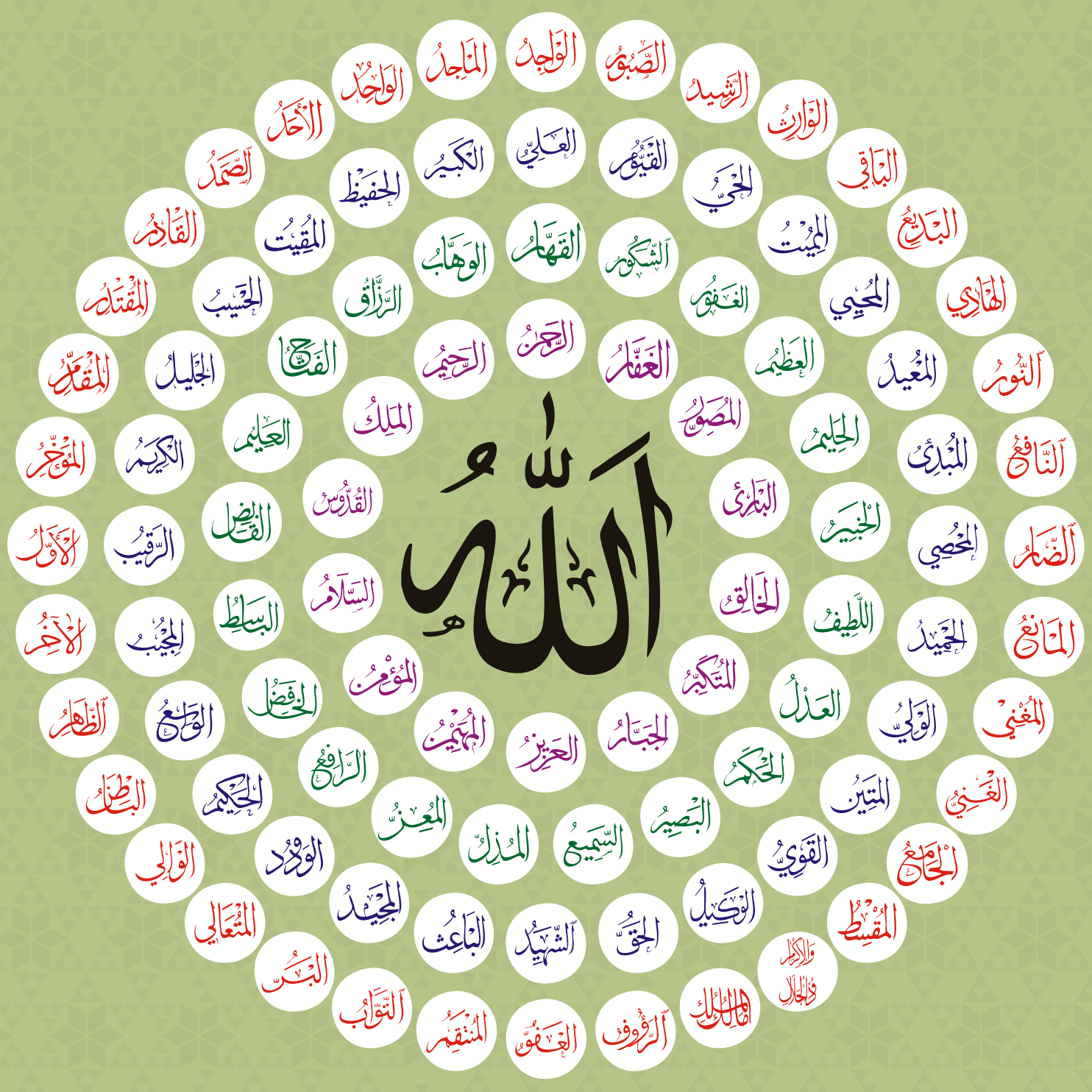

قُلِ ادۡعُوا اللّٰہَ اَوِ ادۡعُوا الرَّحۡمٰنَ ؕ اَیًّامَّا تَدۡعُوۡا فَلَہُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰی (الاسراء:111)

तू कह दे कि चाहे अल्लाह को पुकारो चाहे रहमान को, जिस नाम से भी तुम पुकारो सब अच्छे नाम उसी के हैं।

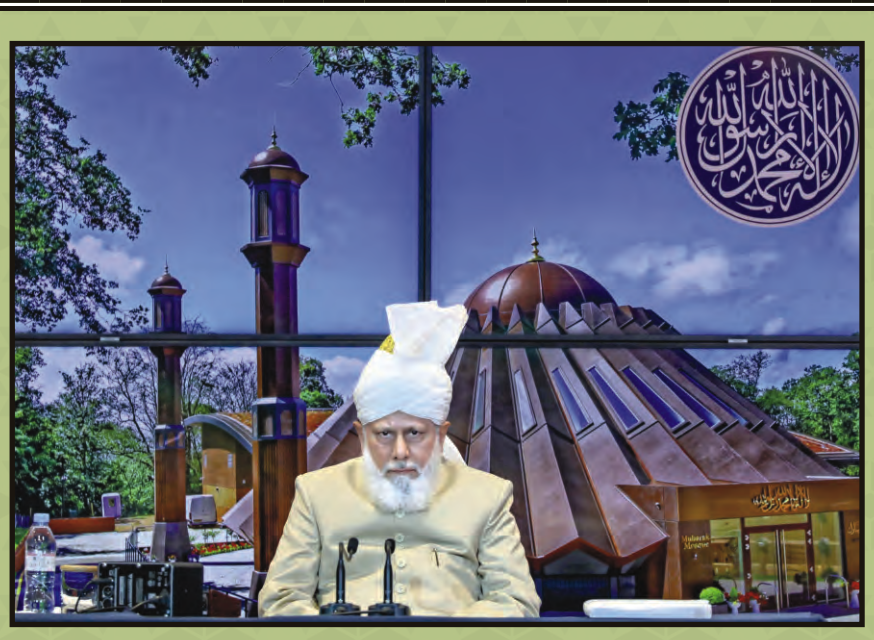

जलसा सालाना यूनाइटेड किंगडम 9 अगस्त 2020 ई के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्टेज पर उपस्थित और दुआ करवाते हुए।

जलसा सालाना यूनाइटेड किंगडम 9 अगस्त 2020 के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज भाषण देते हुए।

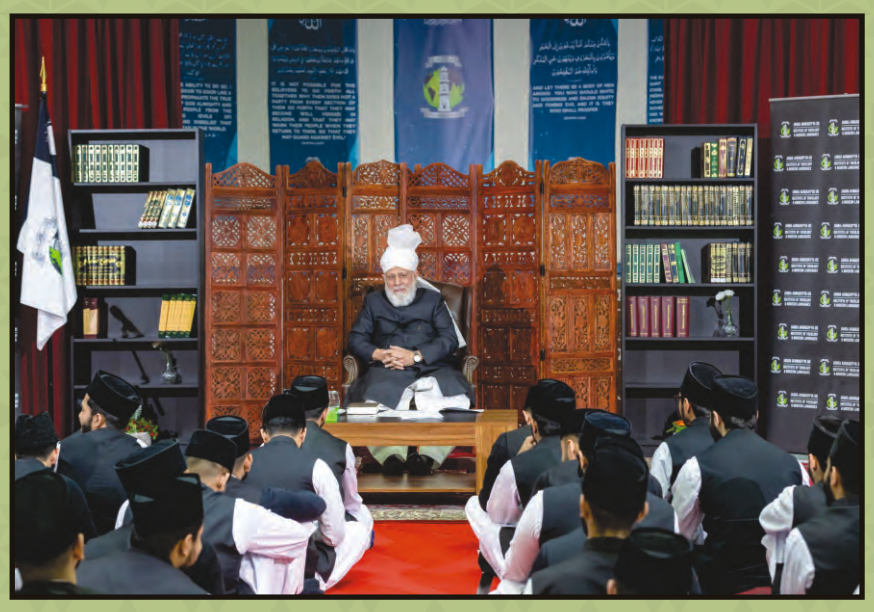

15 दिसम्बर 2019 को जामिआ अहमदिया यूनाइटेड किंगडम के विद्यार्थियों की हुज़ूर के साथ एक बैठक।

31 अक्तूबर 2020 को जामिया अहमदिया इंडोनेशिया के विद्यार्थियों की हुज़ूर के साथ ऑनलाइन क्लास।

12 दिसम्बर 2020 को मेम्बरान मजलिस आमला, क़ायदीन मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया ऑस्ट्रेलिया की हुज़ूर के साथ ऑनलाइन मीटिंग।

25 अक्तूबर 2020 को मुरब्बियान, मेम्बरान नेशनल मज्लिस आमला और ज़ैली तन्ज़ीमों की हुज़ूर के साथ ऑनलाइन मीटिंग।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम (1835-1908 ई.)

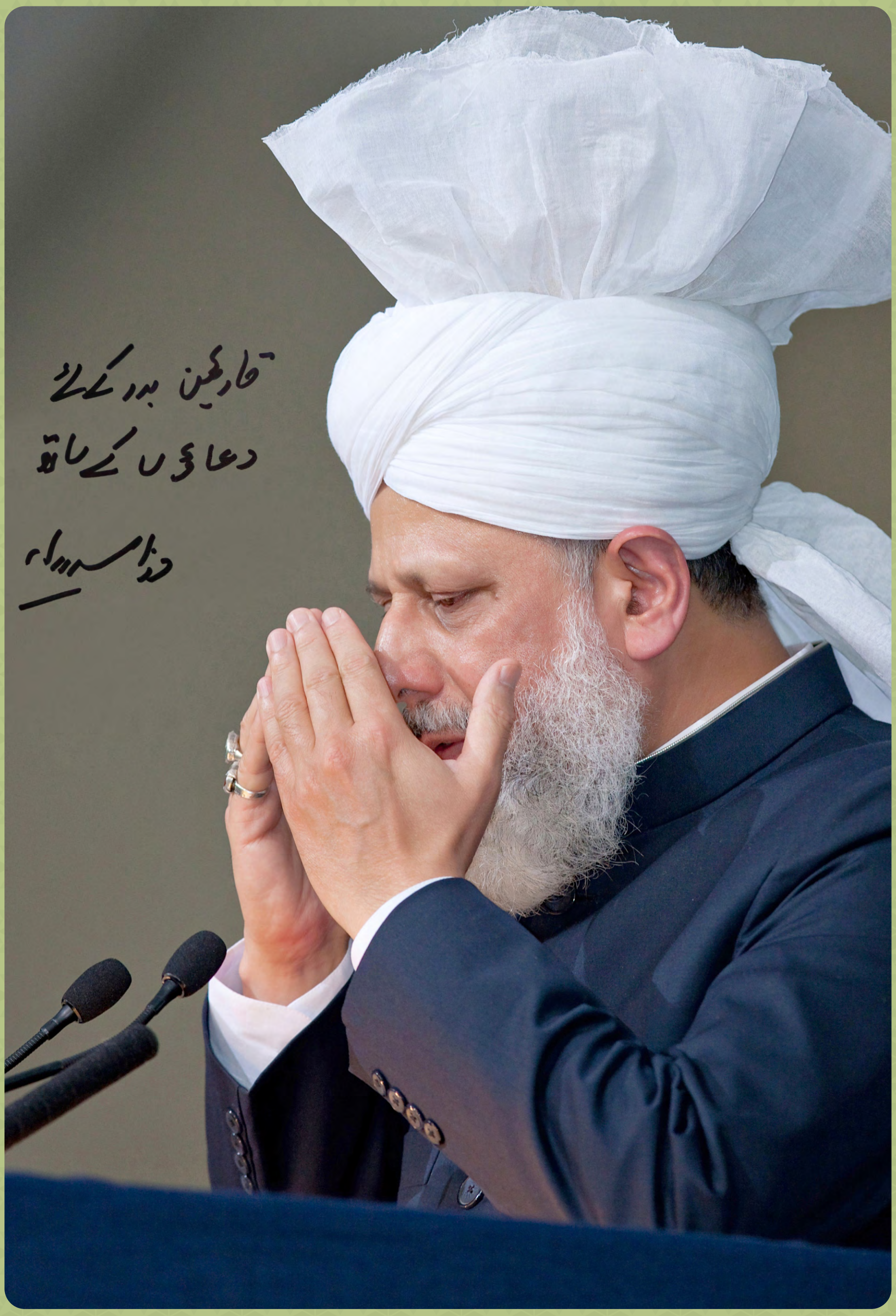

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब

ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहल अज़ीज़

بسم اللہ الرحمن الرحیم
نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم
وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود
خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ
ھوالناصر

इस्लामाबाद टिल्फर्ड
MA 30-11-2020

आज जब की दुनिया माद्दा परस्त हो चुकी है, धर्म से दूर और अपने स्त्रष्टा को भूल चुकी है। इन हालात में हर अहमदी का यह काम है की हस्ती बारी तआला की दलीलें सीखे ख़ुदा तआला से संबंध पैदा करने में तरक्की करे और सबको इस जीवन प्रदान करने वाली सच्चाई से अवगत कराएँ, अल्लाह तआला आपको इस की तौफ़ीक़ प्रदान करे, आमीन

बदर के प्रिय पाठको के लिए सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज का प्रेम भरा संदेश

साप्ताहिक बदर क़ादियान के प्रिय पाठको !

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहो

मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि अख़बार बदर को "अल्लाह तआला का अस्तित्व" के विषय पर एक विशेष नम्बर प्रकाशित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। अल्लाह तआला इसे प्रत्येक प्रकार से बहुत बरकतों फ़रमाए। आमीन

मुझ से इस अवसर पर सन्देश भिजवाने का निवेदन किया गया है। मेरा सन्देश यह है कि हम बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं कि अल्लाह तआला ने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को स्वीकार करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई। आप अपनी पुस्तकों में अल्लाह तआला की ओर से आप के पक्ष में प्रकट होने वाले निशानों और तर्कों के साथ हस्ती बारी तआला को साबित फ़रमाया है। आप अपनी किताब "किश्ती नूह" में फ़रमाते हैं :

"हमारा बहिश्त हमारा ख़ुदा है हमारी आला लज़्ज़ात हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हमने उस को देखा और हर एक ख़ूबसूरती उस में पाई ..... हे वंचितो इस चश्मा की ओर दौड़ो कि वह तुम्हें तृप्त करेगा। यह ज़िन्दगी का स्रोत है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और किस तरह इस ख़ुशख़बरी को दलों मैं बिठा दूं। किस ढोल से मैं बाज़ारों में घोषणा करूँ कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें और किस दवा से मैं इलाज करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।"

(रूहानी ख़ज़ायन ,भाग 19 पृष्ठ 21-22)

हमारी जमाअत के लिट्रेचर में हस्ती बारी तआला पर काफ़ी मवाद मौजूद है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की एक किताब "हस्ती बारी तआला" के शीर्षक से प्रकाशित है। इसी तरह आप की एक और किताब "हस्ती बारी तआला के दस प्रमाण" भी है जिसमें से संक्षेप में कुछ बिन्दुओं का अर्थ यहां प्रस्तुत है।

आप फ़रमाते हैं कि इन्सान विभिन्न चीज़ों को विभिन्न ज्ञानेंद्रियों से पहचानता है किसी चीज़ को देख कर, किसी को छू कर, किसी को सूंघ कर, किसी को सुनकर, किसी को चख कर। फिर बहुत सी वस्तुएँ ऐसी हैं कि जिनका इल्म सीधे इन पांचों ज्ञानेद्रियों से भी नहीं होता बल्कि उनके मालूम करने का माध्यम ही और है उदाहरणतया अल्लाह तआला सूक्ष्म है वह नज़र तो आता है लेकिन उन्हीं आँखों से जो उसके देखने के योग्य हैं। हाँ यदि कोई उसके देखने की इच्छा रखता हो तो वह अपनी क़ुदरतों और शक्तियों से दुनिया के सामने है और छुपे हुए होने अतिरिक्त सबसे अधिक प्रकट है। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٤﴾

(सूरः अल-अनआम आयत 104)

अर्थात अल्लाह तआला की ज़ात ऐसी है कि नज़रें उस तक नहीं पहुंच सकतीं बल्कि वह नज़रों तक पहुंचता है और वह सूक्ष्म और ख़बरदार है।

हस्ती बारी तआला की एक और दुनिया वालों का इस आस्था पर ईमान है। इसलिए हम देखते हैं कि जितने नेकी और ख़लक़ के फैलाने वाले गुज़रे हैं और जिन्होंने अपने कर्मों से दुनिया पर अपनी सच्चाई का सिक्का बिठा दिया था वह सबके सब इस बात पर गवाही देते हैं कि एक ऐसी हस्ती है जिसे विभिन्न भाषाओं में अल्लाह या गाड या परमेश्वर कहा गया है हिंदुस्तान के अवतार ज़रतशत,

अलैहिस्सलाम मिस्र के अवतार मूसा,नासिरा के अवतार मसीह अलैहिस्सलाम, पंजाब का एक अवतार नानक अलैहिस्सलाम फिर सब अवतारों के सरताज हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। और इनके अतिरिक्त और हज़ारों अवतार जो समय-समय पर दुनिया में हुए हैं एक आवाज़ हो कर पुकारते हैं कि एक ख़ुदा है और यही नहीं बल्कि कहते हैं कि हम ने उससे मुलाक़ात की और उस से बातचीत की।

इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ से मालूम होता है कि इन्सान का अस्तित्व ख़ुदा तआला की हस्ती पर एक दलील है क्योंकि कुछ ऐसे गुनाह हैं जिन को इन्सानी फितरत निश्चित रूप से नापसंद करती है माँ बहन और लड़की के साथ व्यभिचार , गंदगी के साथ सम्पर्क और झूठ से एक नास्तिक भी परहेज़ करता है परन्तु क्यों? गुनाहों से बचना या उनके इज़्हार से बचना इसके लिए एक दलील है कि किसी बादशाह को जवाब देने का भय है जो उसके दिल पर पड़ा है जब जबकि वह उसकी बादशाहत का इन्कार ही करता है।

हस्ती बारी तआला की एक और दलील यह भी है कि हर एक कर्म का एक कर्ता होता है। कहते हैं कि किसी ने एक देहाती से पूछा था कि तेरे पास ख़ुदा की क्या दलील है उसने उत्तर दिया कि जंगल में एक ऊंट की मेंगनी पड़ी हुई हो तो देखकर बता देता हूँ कि यहां से कोई ऊंट गुज़रा है फिर इतनी बड़ी सृष्टि को देखकर में मालूम नहीं कर सकता कि इस का कोई सृष्टा है। निश्चित रूप से यह उत्तर सच्चा और फितरत के अनुसार उत्तर है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह समस्त सृष्टि संयोग से पैदा हो गई। उन का उत्तर अल्लाह तआला सूरत अल-मुल्क की आयत 2 से 5 में देता है कि ,संयोग से जुड़ने वाली चीज़ों में कभी एक सिल्सिला और प्रणाली नहीं होती बल्कि बेजोड़ होता है। सल्तनतों में हज़ारों विचारक उनकी दुरुस्ती के लिए रात-दिन लगे रहते हैं लेकिन फिर भी देखते हैं कि उन से ऐसी-ऐसी गलतियां होती हैं कि जिन से सल्तनतों को ख़तरनाक नुक़्सान पहुंच जाता है बल्कि कभी कभी बिलकुल नष्ट हो जाती हैं लेकिन इस दुनिया का कारोबार ग़लती नहीं करता। सच्ची बात यही है कि इस कायनात का एक सृष्टा है जो बड़े विस्तृत संसार का मालिक और प्रिय है और अगर यह न होता तो यह सब व्यवस्था नज़र न आती।

क़ुरआन शरीफ़ से मालूम होता है कि अल्लाह तआला का इन्कार करने वाले सदैव अपमानित और लज्जित होते हैं। इस लिए फ़िरऔन की घटना एक स्पष्ट प्रमाण है कि किस प्रकार ख़ुदा का इंकार करने वाले सदैव अपमानित और शर्मिंदा होते रहते हैं।
ख़ुदा तआला की हस्ती के मनवाने वाले हर मुल्क में पैदा हुए हैं और जितना उनका विरोध हुआ है उतना और किसी की नहीं लेकिन फिर दुनिया इसके ख़िलाफ़ क्या कर सकी। अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है कि

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۷﴾ (अल-मायदा 57)

अर्थात और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों से दोस्ती करता है अत याद रखना चाहिए कि यही लोग, ख़ुदा के मानने वाले ही ग़ालिब रहते हैं।

क़ुरआन शरीफ़ से मालूम होता है कि अल्लाह तआला दुआओं को स्वीकार करता है। दुआ की क़बूलीयत अपने साथ निशान रखती है इसलिए हमारे आक़ा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला के अस्तित्व के प्रमाण में यह पेश किया था कि कुछ बीमार जो ख़तरनाक रूप से बीमार हों चुने जाएं और बांट लिए जाएं और एक गिरोह का डाक्टर इलाज करें और एक तरफ़ मैं अपने हिस्सा वालों के लिए दुआ करूँ फिर देखो कि किस के बीमार अच्छे होते हैं। अब इस परीक्षा के ढंग में क्या संदेह हो सकता है इसलिए एक कुत्ते का काटा जो पागल हो गया हो और जिस के इलाज से कसौली के डाक्टरों ने निश्चित रूप से इन्कार कर दिया था और लिख दिया था कि इस का कोई इलाज नहीं उसके लिए आपने दुआ की और वह अच्छा हो गया हालाँकि पागल कुत्ते के कटे हुए पागल हो कर कभी अच्छे नहीं होते। अत: दुआओं की क़बूलियत इस बात का सबूत है कि कोई ऐसी हस्ती मौजूद है जो हर युग में उन्हें क़बूल करती है।

अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है कि जो लोग हमारे सम्बन्ध में कोशिश करते हैं हम उनको अपनी राह दिखा देते हैं। अगर इस तरह सच्चे दिल से कोई व्यक्ति दुआ करेगा और कम से कम चालीस दिन तक इस पर अनुकरण करेगा तो चाहे उसका जन्म किसी भी धर्म में हुआ है और वह किसी भी देश का रहने वाला हो रब्बुल आलमीन उसको ज़रूर हिदायत देगा और वह शीघ्र देख लेगा कि अल्लाह तआला ऐसे रंग में उस पर अपना होना प्रमाणित कर देगा कि उसके दिल से शंका और संदेह की गन्दगी बिल्कुल दूर हो जाएगी।

आज जबकि दुनिया भौतिकता में डूब चुकी है। धर्म से दूर और अपने स्रष्टा को भूल चुकी है इन हालात में हर अहमदी का यह काम है कि हस्ती बारी तआला के प्रमाण सीखे। ख़ुदा तआला से सम्पर्क पैदा करने में तरक़्क़ी करे और सब दुनिया को इस ज़िन्दगी प्रदान करने वाली हक़ीक़त से अवगत किराए। अल्लाह तआला आप को इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

वस्सलाम

ख़ाकसार

ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला से अतुलनीय इश्क़ तथा मुहब्बत

मुस्लमान होने के लिए सबसे पहले जिस बात का इक़रार करना पड़ता है वह है ला इलाहा सल्लल्लाहो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। सिर्फ और सिर्फ यही एक हस्ती है जो उपासना के योग्य है। यही एक हस्ती है जो इस योग्य है कि इन्सान उस के आगे सिज्दा करे और इसी से मांगे और इसी से अपनी ज़रूरतों को चाहे क्योंकि अल्लाह ही हमारा स्रष्टा तथा मालिक है। अल्लाह ही हमारा रब है। वह रहमान है अर्थात असीमित रहम करने वाला और बिन मांगे देने वाला। और रहीम है अर्थात मांगने पर देने वाला और बार-बार रहम करने वाला। अल्लाह तआला को अपनी तौहीद तथा एकत्तव इतना प्रिय है कि शिर्क को वह महान अत्याचार क़रार देता है। प्रताप वाला अल्लाह तआला सब गुनाह माफ़ कर सकता है परन्तु शिर्क के गुनाह को वह माफ़ी योग्य क़रार देता है। फ़रमाता है اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ (अन्निसा 117)इस का अनुवाद यह है

अल्लाह इस (गुनाह) को हरगिज़ नहीं क्षमा करेगा कि उसका (किसी को) शिर्क बनाया जाए और जो (गुनाह) इस से निम्न होगा (उसे) जिसके हक़ में चाहेगा माफ़ कर देगा और जो शख़्स (किसी को) अल्लाह का साझी बनाए तो (समझो) कि वह (सीधे) रास्ता से बहुत दूर जा पड़ा।

एक जगह अल्लाह तआला ने शिर्क की से नफरत बहुत ही कठोर शब्दों में की है , फ़रमाता है

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿۸۹﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ﴿۹۰﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿۹۱﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿۹۲﴾ (मर्यम 89 से 92)

और ये (लोग) कहते हैं कि (ख़ुदा) रहमान ने बेटा बना लिया है।(तू कह दे) तुम एक बड़ी सख़्त बात कह रहे हो। क़रीब है कि (तुम्हारी बात से) आसमान फट कर गिर जाएं और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए और पहाड़ कण कण हो कर (ज़मीन पर) जा पड़ें इस लिए कि इन लोगों ने (ख़ुदा) रहमान का बेटा क़रार दिया है।

यही नहीं जो शिर्क की हालत में फ़ौत हो जाएगा उस की दुआ मग़्फ़िरत के लिए भी ख़ुदा तआला के दरबार से मनाही है। इस में यही भेद है कि जिस ख़ुदा को वह सारी ज़िन्दगी साझी क़रार देता रहे इसी ख़ुदा से इस की क्षमा की दुआ आख़िर किस मुँह से मांगी जाए।

निम्न की पंक्तियों में हम सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपने आक़ा तथा मौला से अद्वितीय मुहब्बत तौहीद की तब्लीग़ तथा प्रसार के लिए अनुपमीय क़ुर्बानी तथा चेष्टाओं की एक मामूली झलक पेश करने की कोशिश करेंगे।

अरब का माहौल शिर्क से भरा हुआ था। ख़ुद ख़ाना कअबा में जो तौहीद का निशान था और ख़ुदा का पहला घर था 360 बुत थे। ऐसे माहौल में शिर्क से बच कर रहना एक कठिन कार्य था। परन्तु अल्लाह तआला ने हमेशा आप को शिर्क की गन्दगी से सुरक्षित रखा। मानव जाति की फ़ितरत में अल्लाह तआला ने अपनी तौहीद की कशिश रखी हुई है। यह कशिश हमारे आक़ा, दोनों जहान की सरकार की फ़ितरत में इस उच्च स्तर पर थी कि आप को ख़ुदा की तलाश में हिरा पहाड़ के एक ग़ार में ले जाती जहां आप कई कई दिन तक निरन्तर इबादत में व्यस्त रहते और घर न आते। इसी की तरफ़ इशारा करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى कि अल्लाह ने तुझे अपनी तलाश में अपने वजूद से, दुनिया से बे-ख़बर और फना हुआ पाया अत: उसने तुझे अपनी राह दी।

साप्ताहिक हिन्दी बदर अल्लाह तआला का अस्तित्व विशेषांक

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	सम्पादकीय एवं विषय सूची	1
2	अल्लाह के अस्तित्व के बारे में अल्लाह तआला के उपदेश	2
3	अल्लाह के अस्तित्व के बारे में आंहज़रत (स) के उपदेश	3
4	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेश	5
5	ख़ुदा तआला के मौजूद होने के दस प्रमाण - हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफा सानी	6
6	मेरी रात दिन बस यही इक सदा है।	13
7	हमारा ख़ुदा- हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए साहिब	14
8	अल्लाह तआला के गुणवाचक नाम	19
9	अल्लाह तआला की हस्ती की बौधिक दलीलें	26
10	अल्लाह तआला के महानतम आशिक़ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ☆ ☆ ☆	30

नबुव्वत की पदवी पर सुशोभित होने के बाद तौहीद की तब्लीग़ तथा प्रसार में आप ने जो कष्ट उठाए और अत्याचार बर्दाश्त किए ,यह दास्तान बहुत लंबी है। मक्का वाले आप पर मिट्टी डालते, आप की राह में कांटे बिछाते, नमाज़ पढ़ते हुए सिज्दे में ऊंट की ओझड़ी आप की पीठ पर डाल दी, गालियां देना तो एक आम बात थी, आप को अपने मिशन में असफल करने के लिए हर तर हके अत्याचार किए और हर तरह के हथकंडे अपनाए और अन्त में क़त्ल करने का दृढ़ मन्सूबा बनाया। ताइफ में जब आप गए तो वहां के आवारा नौजवानों ने आप को बहुत अधिक ज़ख़्मी किया। आप ने ताइफ के बड़े रईस अब्द यालैल को तब्लीग़ की तो न सिर्फ यह कि वह आप के साथ अपहास करने लगा अपितु इस ने शहर के आवारा नौजवानों को आप के पीछे लगा दिया। "जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहर से निकले तो ये लोग शोर करते हुए आप के पीछे हो लिए और आप पर पत्थर बरसाने शुरू किए जिससे आपका सारा शरीर ख़ून से लतपत हो गया। बराबर तीन मील तक ये लोग आप के साथ साथ गालियां देते और पत्थर बरसाते चले आए।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम-ए रज़ि अल्लाह अन्हो पृष्ठ 204)

"आप के इस सफ़र के बारे में दुश्मनों को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि इस सफ़र में आप ने अनुपमीय क़ुर्बानी और दृढ़ता का नमूना दिखाया है। सर विल्यम म्यूर अपनी किताब "लाईफ़ आफ़ मुहम्मद" में लिखते हैं कि

"मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के ताइफ के सफ़र में एक शानदार और बहादुरी वाला रंग पाया जाता है। अकेला आदमी जिसकी अपनी क़ौम ने इस को तिरस्कार की दृष्टि से देखा और उसे धुतकार दिया ख़दा के नाम पर बहादुरी के साथ नैनवा के यूनाह नबी की तरह एक बुतों की उपासना करने वाले शहर को तौबा की और ख़ुदाई मिश्न की दावत देने के लिए निकला। यह बात उस के उस ईमान पर कि वह अपने आपको सम्पूर्ण रूप से ख़ुदा की तरफ़ से समझता था एक बहुत तेज़ रोशनी डालती है।" (नबियों का सरदार लेखक मुस्लेह मौऊद पृष्ठ 46)

एक और घटना तौहीद के लिए आप की जान कुर्बानी पर ख़ूब रोशनी डालती है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

शेष पृष्ठ 29 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह एक है इसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और स्वंय क़ायम है।

अल्लाह के अस्तित्व के बारे में अल्लाह तआला के उपदेश

अल्लाह एक है उस के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं।

وَ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

(सूरः अल्बकरहः आयत:164)

अनुवादः और तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है। कोई उपास्य नहीं परन्तु वही रहमान (और) रहीम।

अल्लाह धरती तथा आकाश का नूर है।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ○ (सूरः अन्नूर आयत 36)

अनुवादः अल्लाह आकाशों और धरती का नूर है।

ज़िन्दगी और मौत अल्लाह ही की तरफ़ से है।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ○

(सूरः अल-बक़रः आयत 29)

अनुवादः तुम किस तरह अल्लाह का इन्कार करते हो जबकि तुम मुर्दा थे फिर उस ने तुम्हें ज़िन्दा किया फिर वह तुम्हें मारेगा और फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

अल्लाह ही बाक़ी रहने वाला है।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿۲۷﴾ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿۲۸﴾

(सूरः अर्रहमान आयत 27-28)

अनुवादः हर चीज़ जो इस पर है नश्वर है परन्तु तेरे रब का सम्मान बाक़ी रहेगा जो सम्मान वाला तथा प्रताप वाला है

हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और स्वंय क़ायम रहने वाला है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۲۵۶﴾

(सूरः अल-बकरः आयत 256)

अनुवादः अल्लाह के अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं। वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और स्वंय क़ायम है उसे न तो ऊंघ पकड़ती है और न नींद। उसी के लिए है जो आकाशों में है और जो धरती में है कौन है जो उसके सामने शफ़ाअत करे परन्तु उसकी आज्ञा के साथ वह सब जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है और वह इसके इल्म की कुछ भी परिसीमा नहीं कर सकते परन्तु जितना वह चाहे उसकी बादशाहत आकाशों और धरती पर फैली है और उन दोनों की सुरक्षा उसे थकाती नहीं। और वह बहुत बुलंद (और) बड़ी शान वाला है।

अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं है उसका कोई बराबर नहीं।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۲﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿۳﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَ لَمْ يُوْلَدْ ﴿۴﴾ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۵﴾

(सूरः इख़्लास आयत 2-5)

अनुवादः तू कह दे कि वह अल्लाह एक ही है। अल्लाह को किसी की ज़रूरत नहीं है। न उस ने किसी को पैदा किया और न वह पैदा किया गया और उसके कभी कोई बराबर नहीं हुआ।

हर चीज़ अल्लाह की प्रशंसा के साथ उसकी गुणगान कर रही है।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۵﴾

(सूरः बनी इस्राईल आयत 45)

अनुवादः उसी का गुणगान कर रहे हैं सात आकाश और धरती और जो भी इन में है। और कोई (ऐसी) चीज़ नहीं जो उसकी प्रशंसा के साथ गुणगान न कर रही हो। वास्तविकता यह है कि तुम उनके गुणगान को समझते नहीं। वह यक़ीनन बहुत धैर्यवान और क्षमा करने वाला है।

हिदायत अल्लाह के फ़ज़ल पर आधारित है

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَ هُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَ هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۰۴﴾

(सूरः अन्आम आयत 104)

अनुवादः आँखें उस को नहीं पा सकतीं हैं। वह ख़ुद आँखों तक पहुंचता है और वह बहुत सूक्ष्म बातों को देखने वाला और हमेशा ख़बरदार रहने वाला है।

अल्लाह इन्सान की रगे जान (प्राण स्नायु) से भी अधिक निकट है।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَ نَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿۱۷﴾

(सूरः क़ाफ आयत 17)

अनुवादः और यक़ीनन हमने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं कि उसका नफ़्स उसे कैसी कैसी शंकाओं में डालता है और हम उस से उस की रगे जान(प्राण स्नायु) से भी अधिक निकट हैं।

जिसे चाहे इज़्ज़त प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۷﴾

(सूरः आले इम्रान आयत 27)

अनुवादः तू कह दे हे मेरे अल्लाह सल्तनत के मालिक !तू जिसे चाहे हुकूमत प्रदान करता है और जिससे चाहे हुकूमत छीन लेता है और तू जिसे चाहे इज़्ज़त प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है भलाई तेरे ही हाथ में है। यक़ीनन तू हर चीज़ पर जिसे तू चाहे स्थायी क़ुदरत रखता है।

☆ ☆ ☆

हे मेरे बंदो ! मैंने स्वंय पर अत्याचार हराम कर रखा है। तुम सब राह खो गए हो सिवाय उन लोगों के जिन को मैं सही रास्ता की हिदायत दूं। इसलिए मुझ से हिदायत मांगो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा।

अल्लाह के अस्तित्व के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰی تِسْعَةً وَ تِسْعِیْنَ اسْمًا مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ هُوَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ، الرَّحِیْمُ، الْمَلِكُ، الْقُدُّوْسُ ، السَّلَامُ ،الْمُؤْمِنُ، الْمُهَیْمِنُ، الْعَزِیْزُ، الْجَبَّارُ، الْمُتَكَبِّرُ، الْخَالِقُ، الْبَارِئُ، الْمُصَوِّرُ، الْغَفَّارُ، الْقَهَّارُ، الْوَهَّابُ، الرَّزَّاقُ، الْفَتَّاحُ، الْعَلِیْمُ، الْقَابِضُ، الْبَاسِطُ، الْخَافِضُ، الرَّافِعُ، الْمُعِزُّ، الْمُذِلُّ، السَّمِیْعُ، الْبَصِیْرُ، الْحَكَمُ، الْعَدْلُ، اللَّطِیْفُ، الْخَبِیْرُ، الْحَلِیْمُ، الْعَظِیْمُ، الْغَفُوْرُ، الشَّكُوْرُ، الْعَلِیُّ، الْكَبِیْرُ، الْحَفِیْظُ، الْمُقِیْتُ، الْحَسِیْبُ، الْجَلِیْلُ، الْكَرِیْمُ، الرَّقِیْبُ، الْمُجِیْبُ، الْوَاسِعُ، الْحَكِیْمُ، الْوَدُوْدُ، الْمَجِیْدُ، الْبَاعِثُ، الشَّهِیْدُ، الْحَقُّ، الْوَكِیْلُ، الْقَوِیُّ، الْمَتِیْنُ، الْوَلِیُّ، الْحَمِیْدُ، الْمُحْصِیْ، الْمُبْدِئُ، الْمُعِیْدُ، الْمُحْیِ، الْمُمِیْتُ، الْحَیُّ، الْقَیُّوْمُ، الْوَاجِدُ، الْمَاجِدُ، الْوَاحِدُ، الْاَحَدُ، الصَّمَدُ، الْقَادِرُ، الْمُقْتَدِرُ، الْمُقَدِّمُ، الْمُؤَخِّرُ، الْاَوَّلُ، الْاٰخِرُ، الظَّاهِرُ، الْبَاطِنُ، الْوَالِیْ، الْمُتَعَالِیْ، الْبَرُّ، التَّوَّابُ، الْمُنْتَقِمُ، الْعَفُوُّ، الرَّءُوْفُ، مَالِكُ الْمُلْكِ، ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، الْمُقْسِطُ، الْجَامِعُ، الْغَنِیُّ، الْمُغْنِیْ، الْمَانِعُ، الضَّآرُّ، النَّافِعُ، النُّوْرُ، الْهَادِیْ، الْبَدِیْعُ، الْبَاقِیْ، الْوَارِثُ، الرَّشِیْدُ، الصَّبُوْرُ۔

(ترمذی کتاب الدعوات باب جامع الدعوات)

अनुवाद: हज़रत अबु हुरैरा (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (संज्ञा 'अल्लाह तआला' के अतिरिक्त) अल्लाह तआला के निनान्वे नाम हैं, जो जीवन में इन्हें ध्यान में रखेगा और उनके अनुसार बनने की कोशिश करेगा वह जन्नत में दाखिल होगा। यह नाम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने इस तरह गिने अल्लाह तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं, वह बिन मांगे देने वाला, बार बार रहम करने वाला, मालिक़, हर प्रकार की कमियों से मुक्त और पवित्र, सभी आपदाओं से बचाने वाला, शांति देने वाला, हर प्रकार के विकृतियों से सुरक्षित रखने वाला, ताकतवर, नुकसान की भरपाई करने वाला ,सम्मान वाला, पैदा करने वाला,नीस्त से हस्त करने वाला आकार देने वाला,ढांपने और पर्दा करने वाला,संपूर्ण प्रभुत्व रखने वाला, जमकर प्रदान करने वाला आजीविका देने वाला, मुश्किलें दूर करने वाला, सब कुछ जानने वाला, रोक लेने वाला,खुलापन पैदा करने वाला, नीचा करने वाला, ऊपर करने वाला,सम्मान देने वाला,अपमान करने वाला, सुनने वाला, देखने वाला, निर्णय करने वाला,न्याय करने वाला,सूक्ष्मदर्शी ज्ञाता,नर्मी वाला,महिमावाला, ग़ल्तियां छुपाने वाला,सराहना करने वाला,उच्च,बड़ी शान वाला,सब का हाफिज़ और नासिर, हिसाब करने वाला, ऊंची शान वाला, रहम करने वाला,रक्षक,स्वीकार करने वाला,विस्तार वाला, समझदार,बहुत प्यार करने वाला, बुज़ुर्गी वाला, फिर जीवन देने वाला, प्रत्येक समय चौकस,प्रत्येक चीज़ को देखने वाला,शानदार चिरस्थायी सक्षम ,प्रत्येक चरम का वास्तविक अधिकारी,बचत करने वाला साहब शक्ति,सामर्थ्य वाला,मददगार, प्रशंसा योग्य,गिनने वाला, पहली बार पैदा करने वाला, पुन: पैदा करने वाला,जीवन देने वाला, मौत देने वाला,सदैव जीवित तथा स्वंय स्थापित रहने वाला,बेनियाज़,सम्मान वाला,अकेला,एक,बेनियाज़ प्रकृति वाला,सत्ता वाला,आगे बढ़ाने वाला, पीछे हटाने वाला, पहला, अंतिम, उजागर, छिपा हुआ,मालिक, प्रभुत्तव वाला,ऊंचाई वाला,नेकियों का सम्मान करने वाला, तौबा स्वीकार करने वाला, बदला लेने वाला, क्षमा करने वाला, कोमल व्यवहार करने वाला, राज्य का मालिक, गरिमा व करामत वाला, न्याय करने वाला, इकट्ठा करने वाला, बेनियाज़, बेनियाज़ करने वाला, रोकने वाला, हानि का मालिक, लाभ देने वाला, नूर ही नूर, मार्गदर्शन देने वाला, नए नए आविष्कार करने वाला ,अस्तित्व वाला, मूल स्वामी, मार्गदर्शक, सज़ा देने में धीमा,

(तिर्मिज़ी किताबुल् दावात बाब जामिउल्दावात)

-"عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ قَالَ هٰذَا مَا حَدَّثَنَا بِهٖ اَبُوْهُرَیْرَةَ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ كَذَّبَنِیْ عَبْدِیْ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ ذٰلِكَ، وَشَتَمَنِیْ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ ذٰلِكَ، تَكْذِیْبُهٗ اِیَّایَ اَنْ یَّقُوْلَ لَنْ یُّعِیْدَنَا كَمَا بَدَاَنَا، وَاَمَّا شَتْمُهٗ اِیَّایَ یَقُوْلُ اِتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا، وَاَنَا الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ اَلِدْ وَلَمْ اُوْلَدْ، وَلَمْ یَكُنْ لِّیْ كُفُوًا اَحَدٌ

अनुवाद: हज़रत अबु हुरैरह (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआला फरमाता है मेरा बन्दा मेरा इंकार करता है हालांकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। वह मुझे गाली देता है हालांकि उसे ऐसा करने का अधिकार नहीं था। मेरा इंकार करने का अर्थ यह है कि वह कहता है अल्लाह तआला फिर हमें इस तरह पैदा नहीं कर सकता जिस तरह उसने हमें पहले पैदा किया है। और मुझे गाली देने का अर्थ है कि वह कहता है अल्लाह तआला ने किसी को अपना बेटा बना लिया है हालांकि मेरी ज़ात समद अर्थात बेनियाज़ है और न मेरा कोई बेटा है और न मैं पैदा किया गया हूँ अर्थात् न किसी का बेटा हूँ और न ही कोई मेरे बराबर हो सकता है।"

(मुस्नद अहमद भाग 2 पृष्ठ 317)

عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فِیْمَا یَرْوِیْ عَنِ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی اَنَّهٗ قَالَ یَا عِبَادِیْ اِنِّیْ حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلٰی نَفْسِیْ وَجَعَلْتُهٗ بَیْنَكُمْ مُحَرَّمًا فَلَا تَظَالَمُوْا، یَا عِبَادِیْ كُلُّكُمْ ضَآلٌّ

अच्छा परिणाम निकले वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे और जो व्यक्ति इसके अलावा कोई और चीज़ पाए अर्थात विफलता का मुंह देखे तो वह अपनी ही ज़ात को बुरा कहे कि अपने ही बुरे कर्मों का परिणाम है।

(मुस्लिम किताबुल्बिर वस्सिलह बाब तहरीम अ)

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰی اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ بِیْ وَاَنَا مَعَهٗ حِیْنَ یَذْکُرُنِیْ فَاِنْ ذَکَرَنِیْ فِیْ نَفْسِهٖ ذَکَرْتُهٗ فِیْ نَفْسِیْ وَاِنْ ذَکَرَنِیْ فِیْ مَلَاٍ ذَکَرْتُهٗ فِیْ مَلَاٍ خَیْرٍ مِنْهُمْ وَاِنِ اقْتَرَبَ اِلَیَّ شِبْرًا اِقْتَرَبْتُ اِلَیْهِ ذِرَاعًا وَاِنِ اقْتَرَبَ اِلَیَّ ذِرَاعًا اِقْتَرَبْتُ اِلَیْهِ بَاعًا وَاِنْ اَتَانِیْ یَمْشِیْ اَتَیْتُهٗ هَرْوَلَةً۔

(ترمذی ابواب الدعوات)

अनुवाद: हज़रत अबु हुरैरा वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला फर्माता है मैं बंदे की सोच के अनुसार व्यवहार करता हूं। जिस समय बंदा मुझे याद करता है मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वह मुझे अपने दिल में याद करेगा तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करूंगा और अगर वह मेरा ज़िक्र महफ़िल में करेगा तो मैं उस बन्दे का ज़िक्र बेहतर महफ़िल में करूँगा। अगर वह मेरी ओर एक बालिशत भर आएगा तो मैं उसकी ओर एक हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी ओर एक हाथ आएगा तो मैं उसकी ओर दो हाथ जाऊँगा। अगर वह मेरी ओर चल कर आएगा तो मैं उसकी ओर दौड़कर जाऊँगा।

(तिर्मिज़ी आबवाबुद्दअवात)

.عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا قَالَ قَرَأَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ هٰذِهِ الْاٰیَةَ وَهُوَ عَلَی الْمِنْبَرِ : وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِیَّاتٌ بِیَمِیْنِهٖ ، سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی عَمَّا یُشْرِکُوْنَ۔ قَالَ یَقُوْلُ اللّٰهُ اَنَا الْجَبَّارُ، اَنَا الْمُتَکَبِّرُ، اَنَا الْمَلِکُ، اَنَا الْمُتَعَالُ یُمَجِّدُ نَفْسَهٗ قَالَ فَجَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یُرَدِّدُهَا، حَتّٰی رَجِفَ بِهَا الْمِنْبَرُ ظَنَنَّا اَنَّهٗ سَیَخِرُّ بِهٖ۔)

(مسند احمد صفحہ جلد)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि) बताते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेम्बर पर भाषण देते हुए यह आयत पढ़ी 'आकाश लपेटे हुए हैं उसके दाहिने हाथ में। वह पवित्र है और बहुत ऊंचा उन शरिकों से जो लोग उसके मुक़ाबले पर ठहराते हैं कि हुज़ूर ने कहा। अल्लाह तआला कहता है 'मैं बड़ी शक्तियों वाला और नुकसान की भरपाई करने वाला हूँ। मेरे लिए ही महिमा है। राजा हूँ। बुलंद शान वाला हूँ। अल्लाह तआला इस तरह अपनी ज़ात का सम्मान और बुज़ुर्गी वर्णन करता है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन शब्दों को बार बार बड़े उत्साह से दोहरा रहे थे यहां तक कि मेम्बर कांपने लगा और हमें लगता था कि कहीं आप मेम्बर से गिर न जाएं।

☆ ☆ ☆

اِلَّا مَنْ هَدَیْتُهٗ فَاسْتَهْدُوْنِیْ اَهْدِکُمْ ، یَا عِبَادِیْ کُلُّکُمْ جَائِعٌ اِلَّا مَنْ اَطْعَمْتُهٗ فَاسْتَطْعِمُوْنِیْ اُطْعِمْکُمْ ، یَا عِبَادِیْ کُلُّکُمْ عَارٍ اِلَّا مَنْ کَسَوْتُهٗ فَاسْتَکْسُوْنِیْ اَکْسُکُمْ، یَاعِبَادِیْ اِنَّکُمْ تَخْطِئُوْنَ بِاللَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَاَنَا اَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعًا فَاسْتَغْفِرُوْنِیْ اَغْفِرْ لَکُمْ، یَاعِبَادِیْ اِنَّکُمْ لَنْ تَبْلُغُوْا ضُرِّیْ فَتَضُرُّوْنِیْ وَلَنْ تَبْلُغُوْا نَفْعِیْ فَتَنْفَعُوْنِیْ، یَاعِبَادِیْ لَوْ اَنَّ اَوَّلَکُمْ وَاٰخِرَکُمْ وَاِنْسَکُمْ وَجِنَّکُمْ کَانُوْا عَلٰی اَتْقٰی قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِّنْکُمْ مَا زَادَ ذٰلِكَ فِیْ مُلْکِیْ شَیْئًا، یَاعِبَادِیْ لَوْ اَنَّ اَوَّلَکُمْ وَاٰخِرَکُمْ وَاِنْسَکُمْ وَجِنَّکُمْ کَانُوْا عَلٰی اَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِّنْکُمْ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِنْ مُلْکِیْ شَیْئًا، یَاعِبَادِیْ لَوْ اَنَّ اَوَّلَکُمْ وَاٰخِرَکُمْ وَاِنْسَکُمْ وَجِنَّکُمْ قَامُوْا فِیْ صَعِیْدٍ وَاحِدٍ فَسَاَلُوْنِیْ فَاَعْطَیْتُ کُلَّ اِنْسَانٍ مَسْئَالَتَهٗ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِمَّا عِنْدِیْ اِلَّا کَمَا یَنْقُصُ الْمِخْیَطُ اِذَا اُدْخِلَ الْبَحْرَ، یَا عِبَادِیْ اِنَّمَا هِیَ اَعْمَالُکُمْ اُحْصِیْهَا لَکُمْ ثُمَّ اُوَفِّیْکُمْ اِیَّاهَا فَمَنْ وَجَدَ خَیْرًا فَلْیَحْمَدِ اللّٰهَ وَمَنْ وَجَدَ غَیْرَ ذٰلِكَ فَلَا یَلُوْمَنَّ اِلَّا نَفْسَهٗ۔

(مسلم کتاب البرّ والصلة باب تحریم الظلم)

अनुवाद: हज़रत अबूज़र (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की तरफ़ से यह बताया कि अल्लाह तआला फरमाता है। हे मेरे बंदो ! मैंने अपने ऊपर अत्याचार हराम कर रखा है। तुम सब राह खो गए हो सिवाय उन लोगों के जिन को मैं सही रास्ते की हिदायत दूं। इसलिए मुझ से हिदायत मांगो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा। हे मेरे बंदो! तुम सब भूखे हो सिवाय इसके जिस को मैं खाना खिलाऊं इसलिए मुझ से ही रिज़्क तलाश करो। मैं तुम्हें रिज़्क दूंगा। हे मेरे बंदो! तुम सब नंगे हो सिवाए इसके जो मैं कपड़े पहनाऊं इसलिए मुझसे कपड़े मांगों में तुम्हें कपड़े पहनाऊंगा। हे मेरे बंदो! तुम दिन रात त्रुटियां करो तो भी मैं तुम्हारे गुनाह माफ कर सकता हूं। इसलिए मुझ से माफी मांगो मैं तुम्हें बख्श दूंगा हे मेरे बंदो! तुम मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते कि नुकसान पुहंचाने का इरादा करो और न ही तुम मुझे लाभ पहुँचा सकते हो कि लाभ पहुंचाने की कोशिश करो। हे मेरे बंदो! अगर तुम्हारे सब अगले और पिछले जिन्न और इन्स सबके सब पहले दर्जे के परहेज़गार और संयमी बन जाऐं और उस व्यक्ति की तरह बन जाएं जो तुम में से सबसे अधिक संयम रखता है तो तुम्हारा ऐसा हो जाना भी मेरी बादशाहत में एक कण भर भी वृद्धि नहीं कर सकता। हे मेरे बंदो! अगर तुम्हारे सब अगले और पिछले जिन्न और इन्स सब के सब सबसे बदकार और बुरे हृदय वाले की तरह हो जाएं तो भी मेरी बादशाहत में किसी चीज़ की कमी नहीं कर सकते। हे मेरे बंदो! अगर तुम्हारे सब अगले और पिछले जिन और इन्स एक मैदान में इकट्ठे हो जांए और मुझ से ज़रुरतें मांगें और मैं प्रत्येक व्यक्ति की ज़रुरतें पूरी कर दूं तो मेरे ख़जाने में इतनी कमी नहीं आएगी जितनी समुद्र में सूई डालकर उसे बाहर निकालने से समुद्र के पानी में कमी आती है। हे मेरे बंदो! यह तुम्हारे कर्म हैं जिनकी मैंने गणना की है। मैं तुम्हें उनका पूरा पूरा बदला दूंगा इसलिए जिस व्यक्ति का

कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अब तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा एक ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। ख़ुदा एक प्यारा खज़ाना है उसकी क़द्र करो कि वह प्रत्येक पग पर तुम्हारी सहायता करता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं, तुम्हारे साधन, प्रयास और प्रयत्न महत्त्वहीन हैं।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अब तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा एक ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। **हे वंचित रहने वालो! इस झरने की ओर** दौड़ो कि यह तुम्हें **सींचेगा।** यह जीवनदायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, किस **ढपली** से मैं बाज़ारों में **मुनादी** करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

यदि तुम ख़ुदा के हो जाओ तो निस्सन्देह ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे, और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा। तुम शत्रु से बेख़बर होगे पर ख़ुदा उसे देखेगा और उसके प्रयत्नों को विफल करेगा। तुम्हें अभी तक ज्ञात नहीं कि तुम्हारे ख़ुदा में कौन-कौन सी शक्तियां विद्यमान हैं। यदि तुम्हें ज्ञात होता तो तुम पर कोई दिन ऐसा न आता कि तुम संसार के लिए सख्त दुखी होते। एक मनुष्य जो अपने पास एक खज़ाना रखता है क्या वह एक पैसे के व्यर्थ हो जाने से विलाप करता है, चीखें मारता है और मरने लगता है। यदि तुम को उस खज़ाने की सूचना होती कि तुम्हारा ख़ुदा प्रत्येक आवश्यकता के अवसर पर काम आने वाला है, तो तुम सांसारिक वस्तुओं के लिए इतने आपे से बाहर न होते। ख़ुदा एक **प्यारा खज़ाना** है उसकी क़द्र करो कि वह तुम्हारे प्रत्येक पग पर तुम्हारी सहायता करता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं, तुम्हारे साधन, प्रयास और प्रयत्न महत्त्वहीन हैं।"

(किश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 21-22)

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"ए सुनने वालो सुनो!! कि ख़ुदा तुमसे क्या चाहता है केवल यही कि तुम उसी के हो जाओ उसके साथ किसी को भी भागीदार न करो न आकाश में न धरती में। हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अब भी ज़िन्दा है जैसा कि पहले ज़िन्दा था और अब भी वह बोलता है जैसा कि वह पहले बोलता था और अब भी वह सुनता है जैसा कि पहले सुनता था। यह ग़ल्त विचार है कि इस ज़माना में वह सुनता तो है परन्तु बोलता नहीं। बल्कि वह सुनता है और बोलता भी है। उसकी सभी सिफ़ात (गुण) अनादि तथा अनन्त हैं, कोई गुण भी स्थगित नहीं और न कभी होगा। वह वही वाहिद लाशरीक (एक तथा बिना किसी सहयोगी के) है जिसका कोई बेटा नहीं और जिसकी कोई पत्नी नहीं वह वही अद्वितीय है जिसके (समान) कोई दूसरा नहीं और जिसकी तरह कोई व्यक्ति किसी विशेष गुण से विशिष्ट नहीं और जिसके समान कोई नहीं। जिसका कोई सम गुण नहीं जिसकी कोई शक्ति कम नहीं वह निकट है बावजूद दूर होने के और दूर है बावजूद निकट होने के। वह प्रतिरूप स्वरूप दैवीय ज्ञान वालों पर अपने आपको प्रकट कर सकता है। पर उसके लिए न कोई शरीर है और न कोई रूप है और वह सब से ऊपर है पर नहीं कह सकते कि उसके नीचे कोई और भी है और वह सिंहासन पर है पर नहीं कह सकते कि धरती पर नहीं। वह संग्रह है समस्त पूर्ण गुणों का और प्रकाशक है समस्त सत्य और प्रशंसाओं का तथा स्रोत है समस्त विशेषताओं का और जामिअ (संकलन) है सभी शक्तियों का स्रोत है समस्त वरदानों का और लौटने का स्थल है समस्त वस्तुओं का और स्वामी है हर एक देश का और गुणान्वित है हर एक पूर्णता से और पवित्र है हर एक अवगुण और कमज़ोरी से तथा विशिष्ट है उस कार्य में कि धरती वाले और आकाश वाले उसी की इबादत करें और उस के आगे कोई बात भी अनहोनी नहीं और समस्त आत्माएँ और उनकी शक्तियाँ और समस्त कण और उनकी शक्तियाँ उसी की उत्पत्ति हैं। उस के बिना कोई चीज़ प्रकट नहीं होती वह अपनी शक्तियों और अपनी क़ुदरतों और अपने चमत्कारों से स्वयं को अपने आप प्रकट करता है तथा उस को उसी द्वारा हम प्राप्त कर सकते हैं वह सच्चों पर हमेशा अपना वजूद प्रकट करता रहता है। तथा अपनी क़ुदरतें उन को दिखलाता है। इसी से वह परिचित किया जाता है और उसी से उसके पसन्दीदा मार्ग की पहचान की जाती है। वह देखता है बिना शारीरिक नेत्रों के और सुनता है बिना शारीरिक कानों के तथा बोलता है बना शारीरिक ज़ुबान के। इसी प्रकार नैस्ती (बिना-अस्तित्व) से अस्तित्व में लाना उस का कार्य है जैसा कि तुम देखते हो कि स्वप्न के दृश्य में बिना किसी वजूद के एक दुनिया पैदा कर देता है और हर एक नाशवान और लुप्त को विद्यमान दिखला देता है। अत:! इसी प्रकार उस की समस्त क़ुदरतें हैं। मूर्ख है वह जो उस की क़ुदरतों से इन्कार करे, नेत्रहीन है वह जो उसकी गहन शक्तियों से बेख़बर है। वह सब कुछ करता है और कर सकता है सिवाए उन कार्यों के जो उसकी शान के विरुद्ध हैं या उसके किए हुए वादों के विपरीत हैं तथा वह एक है अपने आप में और गुणों में और कार्यों में और क़ुदरतों में। तथा उस तक पहुँचने के लिए सारे दरवाज़े बन्द हैं पर एक दरवाज़ा जो क़ुर्आन मजीद ने खोला है और सारी नबुव्वतें और सारी किताबें जो पहले गुज़र चुकीं उनकी अलग तौर पर पैरवी की आवश्यकता नहीं रही क्योंकि नबुव्वते मुहम्मदिय्या उन सब की संयुक्त एवं व्यापक है और सिवाए इसके सब राहें बंद हैं। सारी सच्चईयाँ जो ख़ुदा तक पहुँचती हैं उसी के अन्दर हैं न इसके बाद कोई नई सच्चाई आएगी और न इस से पहले कोई ऐसी सच्चाई थी जो इस में विद्यामत नहीं। इसलिए इस नबुव्वत पर सारी नबुव्वतों का अन्त है और होना चाहिए था।"

(अल्वसीयत, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 309)

ख़ुदा तआला के मौजूद होने के दस प्रमाण

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰]

أَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

(क्या तुम अल्लाह के बारे में शक करते हो जिसने धरती और आसमान को पैदा किया है।)

इस युग में आस्था और विश्वास पर भौतिकवादियों ने जो ऐतराज़ किए हैं उनमें सबसे बड़ा विषय ख़ुदा का इन्कार है। मूर्तिपूजक यद्यपि मूर्तियों को ख़ुदा या उसका साझीदार ठहराता है, पर कम से कम वह ख़ुदा के अस्तित्व को तो स्वीकारता है लेकिन नास्तिक तो इसका पूर्णत: ही इन्कार करता है। आधुनिक विज्ञान ने प्रत्येक चीज़ का आधार अवलोकन को ठहराया है। इसलिए नास्तिक प्रश्न करते हैं कि अगर ख़ुदा है तो हमें दिखाओ, हम बिना देखे उसे कैसे मान लें। चूँकि इस युग की विचारधारा ने अधिकतर नवजवानों के दिलों से उस पवित्र हस्ती के नक़्श (कल्पना) को मिटा दिया है और कालेजों के सैकड़ों विद्यार्थी और बैरिस्टर (विधिवक्ता) इत्यादि, ख़ुदा तआला के अस्तित्व का इन्कार कर रहे हैं और उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। हज़ारों आदमी ऐसे पाए जाते हैं जो खुले तौर पर क़ौम और देश के डर से कहते तो नहीं, पर वस्तुत: वे अपने दिलों में ख़ुदा पर विश्वास नहीं रखते। इसलिए मैंने चाहा कि इस पर एक छोटी सी पुस्तिका लिखकर प्रकाशित करूँ। शायद किसी सौभाग्यशाली को लाभ पहुँच जाए।

1. नास्तिकों का पहला प्रश्न यह है कि अगर हमें ख़ुदा दिखा दो तो हम मान लेते हैं।

मुझे इस प्रश्न के सुनने का कई बार मौक़ा मिला है लेकिन इसके सुनने से हमेशा आश्चर्य होता है। मनुष्य विभिन्न चीज़ों को विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से पहचानता है। किसी को देख कर, किसी को छू कर, किसी को सूँघ कर, किसी को सुन कर, किसी को चख कर। रंग का ज्ञान देखने से हो सकता है, सूँघने या छूने या चखने से नहीं। अगर कोई कहे कि मैं तो रंग को तब मानूँगा जब मुझे उसकी आवाज़ सुनवाओ, तो बताओ क्या वह व्यक्ति मूर्ख है या नहीं। इसी तरह आवाज़ का ज्ञान सुनने से होता है, लेकिन अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि मुझे अमुक व्यक्ति की आवाज़ दिखाओ तब मैं देखकर मानूँगा कि वह बोलता है, तो बताओ कि क्या ऐसा व्यक्ति मूर्ख होगा कि नहीं। इसी तरह ख़ुशबू सूँघकर मालूम होती है लेकिन अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि अगर तुम मुझे गुलाब की ख़ुशबू चखा दो तो तब मैं मानूँगा, तो क्या ऐसे आदमी को बुद्धिमान कह सकते हैं। इसी तरह चखकर ज्ञात करने वाली चीज़ें अर्थात् खटाई, मिठाई, नमक और कड़वाहट इत्यादि को यदि कोई सूँघ कर मालूम करना चाहे, तो कभी नहीं कर सकता। अत: यह आवश्यक नहीं कि जो चीज़ सामने नज़र आए उसे तो हम मान लें और जो चीज़ सामने नज़र न आए उसे न मानें। इस तरह तो गुलाब की ख़ुशबू, नीबू की खटास, शहद की मिठास, एलवा की कड़वाहट, लोहे की सख़्ती, आवाज़ की ख़ूबी इत्यादि सब का इन्कार करना पड़ेगा क्योंकि यह चीज़ें तो दिखाई नहीं देतीं। बल्कि सूँघने, चखने, छूने और सुनने से ज्ञात होती हैं। अत: यह ऐतराज़ कितना ग़लत है कि ख़ुदा को हमें दिखाओ तब हम मानेंगे। क्या ये ऐतराज़ करने वाले गुलाब की ख़ुशबू या शहद की मिठास को देखकर मानते हैं। फिर क्या कारण है कि अल्लाह तआला के अस्तित्व के बारे में यह शर्त प्रस्तुत की जाती है कि दिखा दो तब मानेंगे।

इसके अतिरिक्त मनुष्य के अस्तित्व में स्वयं ऐसी चीज़ें मौजूद हैं कि जिनको बिना देखे वह मानता है और उसे मानना पड़ता है। क्या सब लोग अपने दिल, जिगर, दिमाग़, आँतें, फेफड़े और तिल्ली को देखकर मानते हैं या बिना देखे? अगर इन चीज़ों को उसे दिखाने के लिए निकाला जाए तो मनुष्य उसी समय मर जाए और देखने की नौबत ही न आए।

यह उदाहरण तो मैंने इस बात के लिए दिए हैं कि सब चीज़ें सिर्फ़ देखने से ही मालूम नहीं होतीं, बल्कि पाँच भिन्न-भिन्न ज्ञानेन्द्रियों से उनका पता चलता है। अब मैं बताता हूँ कि बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं कि जिनका पता इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से भी नहीं चलता, बल्कि उनके मालूम करने का साधन ही कुछ और है। उदाहरण के तौर पर बुद्धि या स्मरण शक्ति या टैलेन्ट (प्रतिभा) ऐसी चीज़ें हैं कि जिनका दुनिया में कोई भी इन्कार नहीं करता, लेकिन क्या किसी ने बुद्धि को देखा है या सुना है या चखा या सूँघा या स्पर्श किया है? फिर कैसे मालूम हुआ कि बुद्धि या स्मरण शक्ति भी कोई चीज़ है। शक्ति ही को ले लो, हर इन्सान में थोड़ी-बहुत ताक़त मौजूद है। कोई कमज़ोर हो या ताक़तवर कुछ न कुछ ताक़त उसके अन्दर ज़रूर पायी जाती है, लेकिन क्या ताक़त को आज तक किसी ने देखा है या सुना या छुआ या चखा है? फिर कैसे मालूम हुआ कि ताक़त भी कोई चीज़ है। इस बात को एक मूर्ख से मूर्ख इन्सान भी समझ सकता है कि इन चीज़ों को हमने अपनी ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञात नहीं किया, बल्कि उनके प्रभावों को ज्ञात करके उनका पता लगाया है उदाहरणत: जब हमने देखा कि मनुष्य विभिन्न मुश्किलों में घिरने पर कुछ देर ग़ौर करता है और कोई ऐसी युक्ति निकालता है जिससे वह अपनी मुश्किलों से बच जाता है। जब इस तरह मुश्किलों को हल होते हुए हमने देखा तो विश्वास कर लिया कि इन्सान में कोई ऐसी चीज़ मौजूद है जो इन अवसरों पर उसके काम आती है और उस चीज़ का नाम हमने बुद्धि रखा। अत: बुद्धि को हमने पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में से किसी के माध्यम से भी ज्ञात नहीं किया बल्कि उसके करिश्मों को देखकर उसका ज्ञान प्राप्त किया। इसी तरह जब हमने इन्सान को बड़े-बड़े बोझ उठाते देखा तो ज्ञात हुआ कि उसमें कुछ ऐसा तत्व है जिसके कारण यह बोझ उठा सकता है, अपने से कमज़ोर चीज़ों को क़ाबू कर लेता है। फिर उसका नाम शक्ति या ताक़त रख दिया।

इसी तरह जितनी सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ों को लेते जाओगे उनके अस्तित्व लोगों की नज़रों से ओझल ही दिखाई देंगे और उनके वजूद का पता हमेशा उनके असर से मालूम होगा, न कि उन्हें देखकर या सूँघकर और न ही चखकर या छू कर।

अत: अल्लाह तआला की हस्ती जो अत्यन्त सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर है उसका पता करने के लिए ऐसी शर्तें लगाना किस तरह उचित हो सकता है कि आँखों से देखे बिना उसे नहीं मानेंगे। क्या विद्युत को किसी ने देखा है? फिर क्या बिजली की सहायता से जो टेलीग्राम पहुँचते हैं या कल-कारखाने चलते हैं या रोशनी की जाती है इसका इन्कार किया जा सकता है? ईथर की खोज ने भौतिक ज्ञान के क्षेत्र में तहलका मचा दिया है। लेकिन क्या अब तक वैज्ञानिक इसके देखने, सुनने, सूँघने, छूने या चखने का कोई तरीक़ा निकाल सके। लेकिन इसका अस्तित्व न मानें तो फिर यह बात हल ही नहीं हो सकती कि सूरज का प्रकाश धरती तक कैसे पहुँचता है। अत: यह कैसी मूर्खता है कि इन प्रमाणों के होते हुए भी कहा जाता है कि ख़ुदा को दिखाओ तो हम मानेंगे। अल्लाह तआला दिखाई तो देता है, लेकिन उन्हीं आँखों से जो उसके देखने के योग्य हों। हाँ अगर कोई

उसके देखने का इच्छुक हो तो वह अपनी शक्तियों और चमत्कारों के द्वारा दुनिया के सामने है और ओझल होने के बावजूद सबसे अधिक सुस्पष्ट और परिभाषित है। क़ुर्आन शरीफ़ में इस विषय को अत्यन्त संक्षिप्त और अद्भुत अन्दाज़ में अल्लाह तआला ने इस तरह बयान फ़रमाया है कि:-

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝

(अल्-अनाम् - 104)

अर्थात् अल्लाह तआला का अस्तित्व ऐसा है कि आँखें उस तक नहीं पहुँच सकतीं, बल्कि वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है और वह अति सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ को जानने वाला है।

इसमें अल्लाह तआला ने मनुष्य का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है कि तेरी दृष्टि इस योग्य नहीं कि ख़ुदा के अस्तित्व को देख सके, क्योंकि वह तो अत्यन्त सूक्ष्म हस्ती है और सूक्ष्म चीज़ें तो दिखाई नहीं देतीं जैसे कि बल, बुद्धि, विद्युत, ईथर और आत्मा इत्यादि। इनको कोई देख नहीं सकता। फिर ख़ुदा की अत्यन्त सूक्ष्म हस्ती तक मनुष्य की आँखें कैसे पहुँच सकती हैं? फिर प्रश्न यह उठता है कि ख़ुदा को लोग किस तरह देख सकते हैं? और उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने का ढंग क्या है? इसका उत्तर यह दिया कि وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ अर्थात् वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है। मनुष्य की दृष्टि कमज़ोर होने के कारण उसकी जड़ तक नहीं पहुँच सकती, लेकिन इसके बावजूद वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य के चमत्कार और व्यापक विशेषताओं को प्रकट करके अपना अस्तित्व स्वयं लोगों पर प्रकट करता है। मनुष्य की आँख उसे देख नहीं सकती बल्कि वह स्वयं अपना अस्तित्व अपनी अनन्त शक्तियों और चमत्कारों से कभी प्रकोपीय निशानों के द्वारा, कभी अवतारों के द्वारा, कभी कृपा और दया करके और कभी दुआओं को स्वीकार करके विभिन्न प्रकारों से प्रकट करता रहता है।

अब इस बात को साबित कर चुकने के बाद अगर अल्लाह तआला को मानना इस बात पर आधारित किया जाए कि हम उसे दिखा दें और देखे बिना किसी चीज़ को माना ही न जाए तो संसार की लगभग 80 प्रतिशत चीज़ों का इन्कार करना पड़ेगा और कई फिलास्फरों के अनुसार तो सारी चीज़ों का। क्योंकि उनका मत है कि संसार में कोई चीज़ मूल रूप से दिखाई नहीं देती बल्कि केवल विशेषताएँ ही विशेषताएँ नज़र आती हैं। अब मैं यह बताना चाहता हूँ कि वे कौन से प्रमाण हैं जिनसे ख़ुदा (स्रष्टा) के विद्यमान होने का पता चलता है और मनुष्य को यक़ीन होता है कि मेरा स्रष्टा कोई और है, मैं अपने अस्तित्व का स्रष्टा नहीं।

पहला प्रमाण -

मैं अपनी इस धारणा के अनुसार कि क़ुर्आन शरीफ़ ने आध्यात्मिक पराकाष्ठा तक पहुँचने के सारे साधन बयान किए हैं। मैं ख़ुदा तआला के विद्यमान होने के सारे प्रमाण ख़ुदा के फ़ज़्ल से क़ुर्आन शरीफ़ से ही प्रस्तुत करूँगा। चूँकि सबसे पहला ज्ञान जो मनुष्य को इस संसार में आने के बाद होता है वह कानों से होता है। इसलिए मैं भी सबसे पहले सुनने के एहसास (अनुभूति) सम्बन्धी प्रमाण को लेता हूँ। अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ में एक जगह फ़रमाता है:-

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝

(अल्-आला - 15 से 20)

अर्थात्- जिसने अपने मन को शुद्ध किया और अपने प्रतिपालक का मुँह से इक़रार किया और फिर मुँह से इक़रार ही नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप से इबादत करके अपने इक़रार का प्रमाण दिया वह सफल और प्रशंसनीय हो गया। लेकिन तुम लोग तो दुनियादारी की ज़िन्दगी को अपनाते हो, हालाँकि अन्त भला तो सब भला ही बेहतर और देरपा ज़िन्दगी है और यह बात केवल क़ुर्आन शरीफ़ ही नहीं पेश करता, बल्कि पहले सब आसमानी धर्मग्रन्थों में यह दावा मौजूद है। अत: इब्राहीम और मूसा ने जो शिक्षा लोगों के सामने पेश की, उसमें भी यह शिक्षा मौजूद है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के मुख़ालिफ़ों के सामने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि अपनी भोग-विलासिताओं से बचने वाले और ख़ुदा की हस्ती का इक़रार करने वाले और फिर उसका सच्चा फ़रमाबर्दार बनने वाले हमेशा सफल और प्रशंसनीय होते हैं। इसके अतिरिक्त इस शिक्षा के सच्चे होने का प्रमाण यह है कि यह बात पहले धर्मों में भी पायी जाती है। अत: क़ुर्आन उस समय के बड़े-बड़े मज़हब ईसाई, यहूदी और कुफ़्फ़ार-ए-मक्का पर अकाट्य और तार्किक प्रमाण प्रस्तुत करते हुए हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा का उदाहरण देता है कि उनको तो तुम मानते हो, उन्होंने भी तो यही शिक्षा दी है। क़ुर्आन शरीफ़ ने ख़ुदा(स्रष्टा) के विद्यमान होने का एक बड़ा प्रमाण यह भी दिया है कि सारे धर्म इस पर एकमत हैं और सारी क़ौमों का यह एक सांझा विषय है। अत: इस प्रमाण पर जितना ग़ौर किया जाय उतना ही स्पष्ट और सच्चा मालूम होता है। दुनिया के सारे धर्म मूलत: इस बात पर एकमत हैं कि कोई हस्ती है जिसने सारे ब्रह्मांड की रचना की। भिन्न-भिन्न देशों और परिस्थितियों के बदलाव के कारण विचारों और आस्थाओं में भी अन्तर पड़ता है। लेकिन इसके बावजूद जितने ऐतिहासिक धर्म हैं सब अल्लाह तआला के अस्तित्व पर एकमत हैं चाहे उसकी विशेषताओं के बारे में उनमें कितने ही मतभेद हों। वर्तमान में पाये जाने वाले सारे धर्म अर्थात् इस्लाम, ईसाइयत, यहूदियत, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म, हिन्दू धर्म और पारसी इत्यादि सबके सब एक ख़ुदा ईलोहीम, परमेश्वर, परमात्मा, सतगुरू, या यज़दान के क़ायल हैं। इनके अतिरिक्त जो धर्म दुनिया से मिट चुके हैं उनके बारे में भी पुरातत्व से यह पता चलता है कि सब के सब एक ख़ुदा को मानने वाले और उस पर आस्था रखने वाले थे चाहे वे धर्म अमेरिका से दूर किसी देश में पैदा हुए हों या अफ़्रीका के जंगलों में या रोम में या ब्रिटेन में या जावा या सुमात्रा में या जापान और चीन में या साइबेरिया या मंचूरिया में। धर्मों में यह सहमति कैसे हो गई और कौन था जिसने अमेरिका के निवासियों को हिन्दुस्तानियों के अक़ीदों से या चीन के निवासियों को अफ़्रीकियों के अक़ीदों से अवगत किया। पहले ज़माने में रेल, तार और डाक इत्यादि का यह प्रबन्ध तो था ही नहीं जो अब है। न इस तरह अधिकता से जहाज़ आया –जाया करते थे। घोड़ों और ख़च्चरों की सवारी थी और हवा के सहारे चलने वाली नावें आजकल के दिनों की यात्रा महीनों में किया करती थीं और बहुत से देशों का तो उस समय पता भी नहीं चला था फिर उन भिन्न-भिन्न स्वभाव, चाल-चलन और एक-दूसरे से अनभिज्ञ देशों में इस एक अक़ीदे पर कैसे संयोग हो गया। मनगढ़त ढकोसलों में तो दो आदमियों का सहमत होना मुश्किल होता है। फिर इतनी क़ौमों और देशों का संयोग होना जो परस्पर विचारों के आदान-प्रदान का कोई साधन न रखती थीं क्या इस बात का प्रमाण नहीं कि यह अक़ीदा एक सच्ची बात है और किसी अज्ञात माध्यम से जिसे इस्लाम ने स्पष्ट कर दिया और हर क़ौम और हर देश में इसका बयान किया गया। इतिहासकारों का इस बात पर संयोग है कि जिस विषय पर विभिन्न क़ौमों के इतिहासकार सहमत हो जाएँ उसकी सच्चाई में शक नहीं करते। अत: जब इस विषय पर लाखों क़ौमों का संयोग है तो क्यों न विश्वास किया जाय कि किसी चमत्कार को देखकर ही तमाम् दुनिया इस विचार की क़ायल हुई है।

दूसरा प्रमाण -

दूसरा प्रमाण जो क़ुर्आन शरीफ़ ने ख़ुदा तआला के मौजूद होने के बारे में दिया है वह इन आयतों से स्पष्ट है:-

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝

(अल-अनाम - 84 से 87)

फिर कुछ आयतों के बाद फ़रमाया:-

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ

(अल-अनाम - 91)

कि एक दलील हमने इब्राहीम को भी उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसका स्थान चाहते हैं ऊँचा करते हैं वस्तुत: तेरा रब्ब बड़ी हिकमत और ज्ञान वाला है। फिर फ़रमाया हमने उसे इस्हाक़ और याक़ूब दिए और हर एक को हमने सच्चा रास्ता दिखाया और इससे पहले हमने नूह को सच्चा रास्ता दिखाया और उसकी औलाद में से दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को भी। हम नेक कामों में आगे बढ़ने वालों के साथ इसी तरह बर्ताव किया करते हैं और ज़करिया, यहया, ईसा और इलियास को भी राह दिखाई। ये सब लोग सदाचारी थे और इस्माईल, यस्अ और लूत को भी सच्ची राह दिखाई। इन सबको हमने अपने-अपने ज़माने के लोगों पर प्रतिष्ठा दी थी। फिर फ़रमाता है कि ये वे लोग थे जिनको ख़ुदा ने हिदायत दी थी। इसलिए तू उनके मार्ग का अनुसरण कर। इन आयतों में अल्लाह तआला ने बताया है कि इतने नेक और पवित्र लोग जिस बात की गवाही देते हैं वह बात मानी जाए या वह बात मानी जाए जो दूसरे अनभिज्ञ लोग कहते हैं और अपने चाल-चलन से उनके चाल-चलन का मुक़ाबला नहीं कर सकते। सीधी बात है कि उन्हीं लोगों की बात को महत्व दिया जाएगा जो अपने चाल-चलन और अपने कार्यों से दुनिया पर अपनी नेकी, पवित्रता, गुनाहों से बचना और झूठ से परहेज़ करना आदि साबित कर चुके हैं। इसलिए हर एक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह उन्हीं का अनुसरण करे और उनकी अपेक्षा दूसरे लोगों की बात का इन्कार कर दे। हम देखते हैं कि जितने नेकी और सद्भाव फैलाने वाले गुज़रे हैं और जिन्होंने अपने कर्मों से दुनिया पर अपनी सच्चाई का सिक्का बिठा दिया था, वे सब के सब इस बात की गवाही देते हैं कि एक ऐसी हस्ती है जिसे भिन्न-भिन्न भाषाओं में अल्लाह या गाड या परमेश्वर इत्यादि कहा गया है। हिन्दुस्तान के अवतार रामचन्द्र, कृष्ण, ईरान के अवतार ज़रथ्रुस्त, मिस्र के अवतार मूसा, नासरा के अवतार मसीह, पंजाब के अवतार नानक फिर सब अवतारों का सिरमौर अरब का नूर मुहम्मद मुस्तफ़ा जिसको उसकी क़ौम ने बचपन से ही सत्यवादी की उपाधि दी और जिसने कहा فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا (यूनुस - 17) मैंने तो तुम्हारे बीच अपनी उम्र गुज़ारी है क्या तुम मेरा कोई झूठ साबित कर सकते हो? और इस पर उसकी क़ौम कोई आरोप नहीं लगा पायी। उनके अतिरिक्त और भी हज़ारों सत्यनिष्ठ जो दुनिया में हुए हैं एक स्वर होकर पुकारते हैं कि ख़ुदा एक है और इतना ही नहीं बल्कि यह भी कहते हैं कि हम उससे मिले और उससे बातें भी कीं। बड़े से बड़े दार्शनिक जिन्होंने दुनिया में कोई काम किया हो वे इनमें से एक के काम का हज़ारवाँ अंश भी प्रस्तुत नहीं कर सकते। यदि इन सत्यनिष्ठों और दार्शनिकों के जीवन की तुलना की जाए तो दार्शनिकों के जीवन में कथनी की अपेक्षा करनी बहुत ही कम नज़र आएगी। जो सत्यनिष्ठता उन्होंने दिखलाई वह दार्शनिक कहाँ दिखा सके? दार्शनिक लोगों को सच्चाई की शिक्षा देते तो हैं लेकिन ख़ुद झूठ बोलना नहीं छोड़ते। लेकिन इसकी तुलना में वे लोग जिनका नाम मैं ऊपर ले चुका हूँ केवल सच्चाई के लिए हज़ारों कष्टों को बर्दाश्त करते रहे और कभी उनका क़दम इससे पीछे नहीं हटा। उनके क़त्ल के षडयन्त्र रचे गए, उनको उनके वतन से निकाला गया, उनको रास्तों और बाज़ारों में अपमानित करने की कोशिश की गयी, उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया, परन्तु उन्होंने अपनी बात न छोड़ी और ऐसा भी न किया कि लोगों से झूठ बोलकर अपने आपको बचा लेते। उनके कामों ने, उनके त्याग ने, दिखावे से दूरी ने इस बात को साबित कर दिया कि वे नि:स्वार्थ थे और किसी स्वार्थ परायणता से कोई काम न करते थे। फिर ऐसे सत्यनिष्ठ और ऐसे विश्वस्त एक स्वर होकर कह रहे हैं कि हमने अल्लाह तआला से बातें कीं, उसकी आवाज़ सुनी और उसके चमत्कार देखे, तो उनकी बात का इन्कार करने का किसी के पास क्या कारण है। जिन लोगों को हम रोज़ झूठ बोलते सुनते हैं वे भी कुछ थोड़े मिलकर एक बात की गवाही देते हैं तो मानना ही पड़ता है। जिनके हालात से हम बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं वे अख़बारों में अपनी खोज प्रकाशित करते हैं तो हम मान लेते हैं, लेकिन उन सत्यनिष्ठों की बात को नहीं मानते। लोग कहते हैं कि लन्दन एक शहर है और हम उसे मान लेते हैं, भूगोलशास्त्री लिखते हैं कि अमेरिका एक महाद्वीप है और हम उसको सच्चा मान लेते हैं, घुमक्कड़ कहते हैं कि साइबेरिया एक बड़ा और वीरान इलाक़ा है हम उसका इन्कार नहीं करते, क्यों? इसलिए कि बहुत से लोगों ने इस पर गवाही दी है। हालाँकि हम उन गवाहों के हालात से परिचित नहीं कि वे झूठे हैं या सच्चे। लेकिन अल्लाह तआला के वजूद पर चश्मदीद गवाही देने वाले वे लोग हैं कि जिनकी सच्चाई सूर्य की भाँति स्पष्ट है। उन्होंने अपनी जान, माल, वतन, और इज़्ज़त को क़ुर्बान करके सच्चाई को दुनिया में क़ायम किया। फिर इन सैलानियों और भूगोलशास्त्रियों की बात को मानना और उन सत्यनिष्ठों की बात को न मानना कहाँ की नेकी और सच्चाई है? अगर लन्दन का वजूद थोड़े से लोगों से सुनकर साबित हो सकता है तो अल्लाह तआला का वजूद हज़ारों सत्यनिष्ठों की गवाही से क्यों साबित नहीं हो सकता?

तात्पर्य यह कि हज़ारों सत्यनिष्ठों की गवाही जो अपनी आँखों देखी ख़ुदा के वजूद पर देते आए हैं उसका किसी भी दशा में खण्डन नहीं किया जा सकता। आश्चर्य है कि जो उस मार्ग में हैं वे तो सब एकमत होकर कह रहे हैं कि ख़ुदा है लेकिन जो रूहानियत (आध्यात्मिकता) से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं वे कहते हैं कि उन सत्यनिष्ठों की बात न मानो जो यह कहते हैं कि ख़ुदा है। हालाँकि गवाही के नियमानुसार अगर दो बराबर के सत्यनिष्ठ एक बात के बारे में गवाही दें तो जो कहता है कि मैंने अमुक चीज़ को देखा है उसकी गवाही को उस दूसरे की गवाही पर प्रधानता दी जाएगी जो यह कहता है कि मैंने उस चीज़ को नहीं देखा। क्योंकि यह सम्भव है कि उनमें से एक की नज़र उस चीज़ पर न पड़ी हो। लेकिन यह असम्भव है कि एक ने न देखा हो और कह दे कि मैंने देखा है। अतएव ख़ुदा को देखने वालों की गवाही उसके इन्कार करने वालों पर अवश्य अकाट्य और निर्णायक तर्क होगी।

तीसरा प्रमाण -

तीसरा प्रमाण जो क़ुर्आन शरीफ़ से मालूम होता है यह है कि मनुष्य की प्रकृति स्वयं ख़ुदा तआला के मौजूद होने का एक प्रमाण है क्योंकि कुछ ऐसे गुनाह हैं जिनको मनुष्य की प्रकृति बिल्कुल पसन्द नहीं करती जैसे माँ, बहन, और बेटी के साथ व्यभिचार, मल-मूत्र और इस प्रकार

की अन्य गन्दगियाँ, झूठ इत्यादि। यह सब ऐसी चीज़ें हैं कि जिनसे एक नास्तिक भी परहेज़ करता है। अगर कोई ख़ुदा नहीं तो क्यों वह माँ-बहन और दूसरी औरतों में अन्तर समझता है? झूठ को क्यों बुरा समझता है? वे कौन से कारण हैं जिन्होंने उपरोक्त चीज़ों को उसकी दृष्टि में बुरा ठहरा दिया है। अगर किसी महान शक्ति का रौब उसके दिल पर नहीं तो वह क्यों उनसे बचता है? उसके लिए तो झूठ-सच और न्याय-अन्याय सब एक होना चाहिए। जो दिल की ख़ुशी हुई कर लिया। वह कौन सा आदेश है जो उसकी भावनाओं पर शासन करता है जिसने दिल पर अपना सिंहासन बना रखा है। एक नास्तिक ज़बान से चाहे उसके शासन से निकल जाए लेकिन उसकी बनाई हुई प्रकृति से बाहर नहीं निकल सकता और गुनाहों या उनके बयान से परहेज़, यह उसके लिए एक प्रमाण है कि किसी बादशाह के सामने जवाबदेही का डर है जो उसके दिल पर छाया है हालाँकि वह उसकी बादशाहत का इन्कार करता है। क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝

(अल-क़ियामत - 2,3)

कि जैसा लोग समझते हैं कि न ख़ुदा है और न ही दण्ड और प्रतिफल, ऐसा नहीं है बल्कि हम इन बातों के प्रमाण के लिए दो चीज़ें प्रस्तुत करते हैं। एक यह कि हर बात के लिए क़यामत का एक दिन मुक़र्रर है जिसमें उसका निर्णय होता है और नेकी का बदला नेक और बुराई का बदला बुरा मिलता है। अगर ख़ुदा नहीं तो दण्ड और प्रतिफल क्यों मिल रहे हैं और जो लोग सबसे बड़ी क़ियामत का इन्कार करते हैं वे देख लेंगे कि क़ियामत तो इस दुनिया से शुरू है कि व्यभिचारी को आतशक और सूज़ाक की बीमारी हो जाती है और शादीशुदा को नहीं, हालाँकि दोनों एक ही काम कर रहे होते हैं। दूसरा प्रमाण राजसिक प्रवृत्ति है अर्थात् मनुष्य का दिल स्वयं ऐसे गुनाह पर उसे झकझोरता है कि यह बात बुरी और गन्दी है। नास्तिक भी व्यभिचार और झूठ को बुरा समझेंगे और अहंकार और ईर्ष्या को अच्छा न समझेंगे, परन्तु क्यों? उनके पास तो कोई शरीअत (धर्मविधान) नहीं। यह इसलिए कि उनका दिल बुरा मानता है और दिल इसीलिए बुरा मानता है क्योंकि वह जानता है कि मुझे इस काम की एक सबसे बड़े हाकिम की ओर से सज़ा मिलेगी, यद्यपि वह शब्दों में उसे व्यक्त नहीं कर सकता। इसी के समर्थन में एक और जगह क़ुर्आन शरीफ़ में है:-

(अल्-शम्स - 9) فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝

अल्लाह तआला ने हर दिल में नेकी और बदी को पहचानने की बात डाल दी है। अत: नेकी बदी का एहसास पैदा होना स्वयं ख़ुदा के मौजूद होने का एक ठोस प्रमाण है। अगर ख़ुदा नहीं तो क्या कारण है कि एक चीज़ को नेक और एक को बुरा कहा जाए, फिर तो जो मन में आए लोग किया करें।

चौथा प्रमाण -

चौथा प्रमाण जो ख़ुदा तआला के मौजूद होने का क़ुर्आन शरीफ़ से हमें मिलता है वह यह है कि:-

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۝ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝

(अल-नजम - 43-47)

यह बात हर एक नबी के माध्यम से हमने पहुँचा दी है कि हर एक चीज़ का चरमोत्कर्ष अल्लाह तआला की हस्ती पर ही जाकर होता है। चाहे ख़ुशी की घटनाएँ हों या ग़म की, वह ख़ुदा की ओर से ही आती हैं और ज़िन्दगी और मौत सब उसी के हाथ में है और उसने एक छोटी सी चीज़(वीर्य) से जब वह डाली जाती है, स्त्री और पुरुष दोनों को पैदा किया है।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने इन्सान को इस ओर ध्यान दिलाया है कि हर एक काम का एक कर्ता होता है इसलिए अवश्य है कि हर काम का करने वाला भी कोई हो। अतएव इस पूरे ब्रह्माण्ड पर यदि चिन्तन करोगे तो तुम्हारा मार्गदर्शन अवश्य इस ओर होगा कि सारी चीज़ें अन्तत: ख़ुदा तआला पर जाकर ख़त्म होती हैं और वही तमाम् चीज़ों का चरमोत्कर्ष है और उसी के इशारे से यह सब कुछ हो रहा है। अल्लाह तआला ने इन्सान को उसकी प्रारम्भिक अवस्था की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया है कि तुम्हारी उत्पत्ति तो एक उछलते हुए पानी अर्थात् वीर्य से है और तुम ज्यों-ज्यों पीछे जाते हो और न्यूनतम होते जाते हो, फिर तुम कैसे अपने स्रष्टा बन सकते हो। जब स्रष्टा के बिना कोई सृष्टि हो ही नहीं सकती और इन्सान अपने आप का स्वयं स्रष्टा नहीं है। जब इन्सान की हालत पर ग़ौर करते हैं तो पता चलता है कि वह अत्यन्त छोटी और न्यूनतर अवस्था से उन्नति करके इस अवस्था को पहुँचता है और जब वह वर्तमान स्थिति में स्रष्टा नहीं तो उस कमज़ोर स्थिति में कैसे स्रष्टा हो सकता था। इसलिए मानना पड़ेगा कि उसका स्रष्टा कोई और है जिसकी शक्तियाँ असीमित और चमत्कार अनन्त हैं। तात्पर्य यह कि मनुष्य की क्रमागत उन्नति पर जितना ग़ौर करते जाएँगे उसके कारण उतने ही सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते जाते हैं और अन्तत: समस्त भौतिक ज्ञान एक स्थान पर जाकर ठहर जाते हैं और कह देते हैं कि अब यहाँ से आगे हमारी पहुँच नहीं और हम नहीं जानते कि यह क्यों हो गया। यह वही स्थान है जहाँ अल्लाह तआला का हाथ काम कर रहा होता है और अर्थात् अन्तत: हर एक वैज्ञानिक को मानना पड़ता है कि اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى अन्तत: हर एक चीज़ की इन्तिहा (चरमोत्कर्ष) एक ऐसी हस्ती पर होती है जिसको वे अपनी बौद्धिक परिधि में नहीं ला सकते और वही ख़ुदा है। यह एक ऐसा स्पष्ट प्रमाण है कि जिसे एक अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकता है।

कहते हैं कि किसी ने एक देहाती से पूछा कि तेरे पास ख़ुदा की क्या दलील है? उसने उत्तर दिया कि यदि जंगल में ऊँट की एक मेंगनी पड़ी हुई हो तो मैं उसे देखकर बता देता हूँ कि यहाँ से कोई ऊँट गुज़रा है, फिर इतनी बड़ी सृष्टि को देखकर क्या मैं समझ नहीं सकता कि इसका कोई स्रष्टा है? नि:सन्देह यह एक सच्चा और प्रकृति के अनुसार जवाब है। इस सृष्टि की उत्पत्ति की ओर यदि मनुष्य चिन्तन करे तो अन्तत: उसे एक ऐसी हस्ती को मानना पड़ेगा जिसने यह सब पैदा किया।

पाँचवाँ प्रमाण -

ख़ुदा तआला के मौजूद होने का पाँचवाँ प्रमाण जो क़ुर्आन शरीफ़ ने दिया है उपरोक्तानुसार होते हुए अधिक ठोस और स्पष्ट है और यहाँ अधिक सुन्दर तर्क से काम लिया गया है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۝ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝

(अल-मुल्क- 3 से 5)

अर्थात् बहुत बरकत वाला है वह, जिसके हाथ में समग्र साम्राज्य है और वह हर चीज़ पर समर्थ है। उसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की है ताकि

वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से कौन अधिक अच्छे काम करता है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला और बहुत क्षमा करने वाला है। उसने परत दर परत सात आसमान पैदा किए और उनमें परस्पर अनुकूलता और अनुरूपता रखी है, तू कभी अल्लाह तआला की सृष्टि में कोई विसंगति नहीं देखेगा। तू अपनी नज़र को दौड़ाकर देख, क्या तुझे कोई त्रुटि दिखाई देती है। फिर दोबारा अपनी नज़र को दौड़ा, वह थक हार कर तेरी ओर असफल होकर लौट आएगी।

कुछ लोग कहते हैं कि यह सारी सृष्टि अचानक पैदा हो गयी है और संयोग से तत्वों के मिलने से यह सब कुछ बन गया। फिर विज्ञान से यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि हो सकता है कि दुनिया ख़ुद बख़ुद जुड़कर स्वयं चलती जाए और इसका चलाने वाला कोई न हो। लेकिन उनको जवाब अल्लाह तआला इन आयतों में देता है कि संयोग से जुड़ने वाली चीज़ों में कभी एक सिलसिला और निज़ाम नहीं होता बल्कि वे विसंगत होती हैं। विभिन्न रंगों से मिलकर एक चित्र बनता है। लेकिन अगर भिन्न-भिन्न रंग एक कागज़ पर फेंक दें तो क्या उससे चित्र बन जाएगा। ईंटों से मकान बनता है लेकिन क्या ईंटे एक-दूसरे पर फेंक देने से मकान बन जाएगा। असम्भावित रूप से यदि मान भी लिया जाए कि कुछ घटनाएँ सहसा हो जाती हैं लेकिन क़ुदरत के निज़ाम को देखकर कभी कोई इन्सान यह नहीं कह सकता कि यह सब कुछ ख़ुद ही हो गया है। माना कि ख़ुद बख़ुद ही तत्व से धरती पैदा हो गयी और यह भी मान लिया कि मनुष्य सहसा पैदा हो गया। लेकिन मनुष्य की उत्पत्ति पर तो ग़ौर करो कि क्या ऐसी श्रेष्ठ उत्पत्ति कभी ख़ुद बख़ुद हो सकती है? साधारणत: दुनिया में एक गुण की विशेषता से उसके बनाने वाले का पता चलता है। एक सुन्दर चित्र को देखकर तुरन्त यह विचार उत्पन्न होता है कि किसी महान चित्रकार ने इसे बनाया है। एक सुन्दर लेख को देखकर यह समझा जाता है कि किसी महान लेखक ने इसे लिखा है और जितना लगाव बढ़ता जाए उतना ही उसके बनाने या लिखने वाले की विशेषता और महानता दिल में बैठती जाती है फिर कैसे कहा जाता है कि ऐसा व्यवस्थित जगत् ख़ुद बख़ुद यूँ ही पैदा हो गया। थोड़ा इस बात पर तो ग़ौर करो कि जहाँ मनुष्य में उन्नति करने की शक्तियाँ मौजूद हैं वहाँ उसे अपने विचारों को व्यवहारिक रूप में प्रदर्शित करने की बुद्धि भी दी गई है और उसका शरीर भी उसके अनुसार बनाया गया है। चूँकि उसको मेहनत करके जीविका कमानी थी इसलिए उसे शक्ति दी कि चल फिर कर अपनी जीविका पैदा कर ले। वृक्ष का भोजन अगर ज़मीन में रखा है तो उसे जड़ें दी कि वह उसके अन्दर से अपना पेट भर ले। अगर शेर की ख़ुराक माँस रखी तो उसे शिकार करने के लिए नाख़ून दिए। अगर घोड़े और बैल के लिए घास निर्धारित की तो उनको ऐसी गर्दन दी कि झुक कर घास पकड़ सकें। अगर ऊँट के लिए पेड़ों की पत्तियाँ और काँटे निर्धारित किए तो उसकी गर्दन भी ऊँची बनायी। क्या यह सब कारख़ाना संयोग से हो गया? क्या संयोग ने यह बात मालूम कर ली थी कि ऊँट को गर्दन लम्बी दूँ और शेर को पंजे और वृक्ष को जड़ें और मनुष्य को टाँगें। क्या यह समझ में आ सकता है कि जो काम ख़ुद बख़ुद हो गया उसमें इतनी व्यवस्था रखी गयी हो? फिर अगर मनुष्य के लिए फेफड़ा बनाया तो उसके लिए हवा भी पैदा की, अगर पानी पर उसकी ज़िन्दगी रखी तो सूरज के द्वारा बादलों के माध्यम से उसे पानी पहुँचाया और अगर आँखें दीं तो उनको उपयोगी बनाने के लिए सूरज की रोशनी भी दी ताकि वह उसमें देख भी सके। कान दिए तो इसके साथ-साथ अच्छी आवाज़ें भी पैदा कीं, जीभ के साथ-साथ स्वादिष्ट चीज़ें भी पैदा कीं, नाक बनायी तो ख़ुशबू भी पैदा की। सम्भव था कि संयोग मनुष्य में फेफड़ा पैदा कर देता लेकिन उसके लिए यह हवा का सामान क्यों पैदा हो गया? सम्भव था कि मनुष्य की आँखें पैदा हो जातीं लेकिन वह अजीब संयोग था जिसने करोड़ों मील पर जाकर एक सूरज भी पैदा कर दिया ताकि वे अपना काम कर सकें। अगर एक ओर संयोग से कान पैदा हो गए थे तो यह कौन सी हस्ती थी जिसने दूसरी ओर आवाज़ भी पैदा कर दी। मान लिया कि हिमवर्ती देशों में कुत्ते या रीछ संयोग से पैदा हो गए लेकिन क्या कारण है कि उन कुत्तों और रीछों के बाल इतने लम्बे बन गए कि वे सर्दी से बच सकें। संयोग ही ने हज़ारों बीमारियाँ पैदा कीं संयोग ही ने उनका इलाज बना दिया। संयोग ने ही वह बूटी पैदा की जिसके छूने से खुजली पैदा हो जाती है और उसने उसके साथ पालक का पौधा लगा दिया कि उसका इलाज हो जाए। नास्तिकों का संयोग भी अजीब है कि जिन चीज़ों के लिए मृत्यु का निर्णय किया उनके साथ संतानोत्पत्ति का सिलसिला भी क़ायम कर दिया और जिन चीज़ों के साथ मौत न थी वहाँ संतानोत्पत्ति का यह सिलसिला ही नहीं रखा। मनुष्य अगर पैदा होता और मरता नहीं तो कुछ सालों में ही दुनिया का ख़ात्मा हो जाता, इसलिए उसके साथ मौत लगा दी। लेकिन सूरज, चाँद और धरती न नए पैदा होते हैं न अगले मरते हैं। क्या यह प्रबन्ध कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं कि धरती और सूरज में चुम्बकत्व है इसलिए उनको एक-दूसरे से इतनी दूर रखा कि आपस में टकरा न जाएँ। क्या यह बातें इस बात पर संकेत नहीं करती हैं कि इन सब चीज़ों का स्रष्टा वह है जो न केवल सर्वज्ञ है बल्कि असीमित और अनन्तज्ञानी है। उसके नियम परस्पर ऐसे आबद्ध हैं कि उनमें कुछ मतभेद नहीं और न कुछ कमी है। मुझे तो अपनी ऊँगलियाँ भी उसकी हस्ती का एक सबूत मालूम होती हैं। मुझे जहाँ ज्ञान दिया था वहाँ अगर शेर का पंजा मिल जाता तो क्या मैं उससे लिख सकता? शेर को ज्ञान नहीं दिया बल्कि उसे पंजे दिए, मुझे ज्ञान दिया और लिखने के लिए ऊँगलियाँ भी दीं।

सरकारों में हज़ारों बुद्धिमान उनकी दुरुस्ती के लिए रात-दिन लगे रहते हैं लेकिन फिर भी देखते हैं कि उनसे ऐसी-ऐसी ग़लतियाँ हो जाती हैं कि जिनसे सरकारों को ख़तरनाक नुकसान पहुँच जाता है बल्कि कभी-कभी बिल्कुल तबाह हो जाती हैं। लेकिन अगर इस दुनिया का कारोबार सिर्फ संयोग पर है तो आश्चर्य है कि हज़ारों बुद्धिमान लोग तो ग़लती करते हैं लेकिन यह संयोग तो ग़लती नहीं करता। लेकिन सच्ची बात यही है कि इस सृष्टि का एक स्रष्टा है जो बड़े व्यापक संसार का मालिक और उस पर प्रभुत्व रखने वाला है और अगर न होता तो यह इन्तिज़ाम नज़र न आता। अब जिस तरफ नज़र दौड़ाकर देखो तुम्हारी नज़र क़ुर्आन शरीफ़ के कथनानुसार थक हार कर वापिस लौट आएगी और हर एक चीज़ में एक इन्तिज़ाम होगा। नेक इनाम और दुष्ट सज़ा पा रहे हैं। हर एक चीज़ अपना उत्तरदायित्व निभा रही है और एक पल के लिए भी सुस्त नहीं। यह एक बहुत व्यापक विषय है लेकिन मैं उसे यहीं ख़त्म करता हूँ। अक़्लमन्द के लिए इशारा काफ़ी है।

छठा प्रमाण -

क़ुर्आन शरीफ़ से मालूम होता है कि अल्लाह तआला के अस्तित्व का इन्कार करने वाले हमेशा रुसवा और शर्मिन्दा होते हैं और उनके झूठे होने का यह भी एक सुबूत है। क्योंकि अल्लाह अपने मानने वालों को हमेशा विजय देता है और वे अपने विरोधियों पर प्रभुत्व पाते हैं। अगर कोई ख़ुदा नहीं तो यह समर्थन और सहायता कहाँ से आती है? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि फ़िरऔन ने मूसा से कहा है कि

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۝ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ۝

(अन्-नाज़ियात - 25,26)

अर्थात् जब हज़रत मूसा ने उसे ख़ुदा तआला की आज्ञापालन के लिए कहा तो उसने अहंकार में डूबकर जवाब दिया कि कैसा ख़ुदा? ख़ुदा तो मैं हूँ। फिर अल्लाह तआला ने उसे इस दुनिया में भी और परलोक में भी रुसवा किया। अत: फिरऔन की घटना एक स्पष्ट प्रमाण है कि किस

तरह ख़ुदा को न मानने वाले शर्मिन्दा और रुसवा होते हैं। इसके अतिरिक्त नास्तिकों ने दुनिया में कभी कोई साम्राज्य स्थापित नहीं किया, बल्कि संसार को विजय करने वाले और लोगों के सुधारक और इतिहास को बनाने वाले वही लोग हैं जो ख़ुदा के क़ायल हैं। क्या यह इनकी रुसवाई और दुर्भाग्य और क़ौम के रूप में कभी दुनिया के सामने न उभरना कुछ अर्थ नहीं रखता?

सातवाँ प्रमाण -

अल्लाह तआला के विद्यमान होने का अर्थ यह है कि उसको मानने वाले और उस पर पूर्ण विश्वास रखने वाले हमेशा सफल होते हैं और लोगों की मुख़ालिफ़त के बावजूद उन पर कोई ऐसी मुसीबत नहीं आती जो उन्हें असफ़ल कर दे। ख़ुदा तआला की हस्ती के मनवाने वाले हर देश में पैदा हुए हैं और जितनी उनकी मुख़ालिफ़त हुई है उतनी किसी और की नहीं। लेकिन फिर दुनिया उनके ख़िलाफ़ क्या कर सकी? क्या श्री रामचन्द्र को वनवास भेजने वालों ने सुख पाया? और रावण ने कौन सा आराम पा लिया? क्या श्री रामचन्द्र जी का नाम हज़ारों साल के लिए ज़िन्दा नहीं हो गया और क्या रावण का नाम हमेशा के लिए बदनाम नहीं हुआ? और श्रीकृष्ण की बात को ठुकरा कर कौरवों ने क्या लाभ पाया? क्या वे कुरूक्षेत्र के मैदान में तबाह नहीं हुए? बादशाह फ़िरऔन जो इस्राईल क़ौम से ईंटें पथवाता था, उसने मूसा अलैहिस्सलाम जैसे असहाय व्यक्ति की मुख़ालिफ़त की, परन्तु क्या मूसा अलैहिस्सलाम का कुछ बिगाड़ सका? बल्कि वह स्वयं डूब गया और मूसा नबी बादशाह बन गए। हज़रत ईसा नबी की दुनिया ने जो कुछ मुख़ालिफ़त की वह भी स्पष्ट है और उनकी तरक़्क़ी भी, जो कुछ हुई वह किसी से छुपी नहीं। उनके दुश्मन तो तबाह हुए और उनके सेवक देशों के बादशाह बन गए। हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी दुनिया में सबसे अधिक अल्लाह तआला के नाम को फैलाने वाले थे, यहाँ तक कि यूरोप का एक लेखक कहता है कि उनको ख़ुदा का जुनून था (नऊज़ बिल्लाह), वह हर समय ख़ुदा-ख़ुदा ही कहते रहते थे। उनकी सात क़ौमों ने मुख़ालिफ़त की, अपने-पराए सब उनके दुश्मन हो गए, परन्तु क्या फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया के देशों पर विजय नहीं पाई? अगर ख़ुदा नहीं तो यह सहायता किसने की? अगर यह सब कुछ संयोग था तो कोई पैदा तो ऐसा होता जो ख़ुदा की ख़ुदाई साबित करने आता और दुनिया उसे रुसवा कर देती!!! लेकिन जो कोई ख़ुदा के नाम को फैलाने वाला उठा वह प्रतिष्ठित और सम्मानित ही हुआ। अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है कि:-

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ

(अलमाइद: - 57)

जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों से सच्ची दोस्ती रखता है तो समझ लेना चाहिए कि यही वे लोग हैं जो ख़ुदा को मानने वाले हैं और यही हैं वे जो अन्त में विजयी होते हैं।

आठवाँ प्रमाण -

अल्लाह तआला की हस्ती के मौजूद होने का आठवाँ प्रमाण क़ुर्आन शरीफ़ ने यह दिया है कि वह दुआओं को क़बूल करता है। अत: जब कोई गिड़गिड़ाकर उसके सामने दुआ करता है तो वह उसे क़बूल करता है और यह बात किसी विशेष युग से सम्बन्धित नहीं, बल्कि हर युग में इसके उदाहरण मिलते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:-

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ

(अल-बक़र: - 187)

अर्थात् जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुझसे पूछें तो उनसे कह दे कि मैं उनके बहुत क़रीब मौजूद हूँ और जब फ़रियाद करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ सुनता हूँ। लेकिन शर्त यह है कि वे भी मेरी बात मानें और मुझ पर विश्वास करें ताकि वे सन्मार्ग पाएँ। अब अगर कोई कहे कि कैसे मालूम हो कि ख़ुदा दुआ सुनता है और क्यों न यह कहा जाए कि कुछ दुआ करने वालों के काम संयोग से हो जाते हैं और कुछ के नहीं भी होते। अगर सारी दुआएँ क़बूल हो जाएँ तब भी कुछ बात थी, लेकिन कुछ की क़बूल होने से यह कैसे मालूम हो कि यह संयोग न था बल्कि किसी हस्ती ने क़बूल किया है तो इसका उत्तर यह है कि दुआ की क़बूलियत अपने साथ निशान रखती है। अत: हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की ओर से दुआ क़बूल करने के प्रमाण में यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि कुछ ऐसे बीमार चुन लिए जाएँ जो अत्यन्त ख़तरनाक बीमारियों में ग्रस्त हों और उन्हें दो गिरोहों में बाँट लिया जाए और एक गिरोह का डाक्टर इलाज करें और दूसरी तरफ़ मैं अपने हिस्से में आने वाले गिरोह के लोगों के लिए दुआ करूँ। फिर देखो कि किस के गिरोह वाले बीमार अच्छे होते हैं। अब इस प्रकार की आज़माइश में क्या शक हो सकता है?अत: पागल कुत्ते का काटा हुआ एक व्यक्ति जो पागल हो चुका था और जिसका इलाज करने से कसौली के डाक्टरों ने बिल्कुल इन्कार कर दिया था और यह लिखकर दे दिया था कि इसका कोई इलाज नहीं। उसके लिए हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने दुआ की और वह अच्छा हो गया। हालाँकि पागल कुत्ते के काटे हुए पागल होने के बाद कभी अच्छे नहीं होते। इसलिए दुआओं की क़बूलियत इस बात का प्रमाण है कि कोई ऐसी हस्ती मौजूद है जो दुआओं को क़बूल करती है। दुआओं की क़बूलियत किसी विशेष युग से सम्बद्ध नहीं, बल्कि हर युग में इसके निशान देखे जा सकते हैं। अत: जैसे पहले युग में दुआएँ क़बूल होती थीं वैसे अब भी क़बूल होती हैं।

नवाँ प्रमाण -

क़ुर्आन शरीफ़ से ख़ुदा तआला के मौजूद होने का नवाँ प्रमाण "इल्हाम" ज्ञात होता है। यद्यपि इस प्रमाण को मैंने नवें नम्बर पर रखा है लेकिन वस्तुत: यह एक बहुत बड़ा प्रमाण है जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व को नि:सन्देह रूप से साबित कर देता है। अत: क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ

(इब्राहीम - 28)

अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को इस लोक और परलोक में साबितशुदा और प्रमाणित बातें सुना-सुनाकर दृढ़ता प्रदान करता रहता है। अत: जब हर ज़माने में अल्लाह तआला बहुत से लोगों से बातें करता है तो फिर उसका इन्कार कैसे सत्य हो सकता है? वह केवल नबियों, रसूलों से ही बातें नहीं करता बल्कि अपने साधारण भक्तों से भी बातें करता है और कभी-कभी अपने किसी छोटे से भक्त पर भी दया करके उसे सांत्वना देता है। अत: इस विनीत से भी उसने बातें करके अपने अस्तित्व को प्रमाणित कर दिया। इतना ही नहीं कभी-कभी दुष्ट और कपटी लोगों से भी प्रमाण सिद्ध हेतु बोल लेता है। अत: कभी-कभी नीच से नीच लोगों और वैश्याओं तक को भी सच्चे स्वप्न और इल्हाम हो जाते हैं और उन स्वप्नों और इल्हामों का किसी महान हस्ती की ओर से होने का प्रमाण यह होता है कि कभी-कभी उन इल्हामों में भविष्य की बातें होती हैं जो अपने समय पर पूरी होकर सिद्ध कर देती हैं कि यह इन्सानी दिमाग़ का काम न था और न किसी मानसिक रोग का परिणाम था और कभी-कभी सैकड़ों वर्ष भविष्य की बातें बताई जाती हैं ताकि कोई यह न कह दे कि वर्तमान की घटनाएँ स्वप्न में आ गयीं और वह संयोग से पूरी हो गयीं। तौरात और क़ुर्आन शरीफ़ में ईसाइयों की इन तरक़्क़ियों का विस्तारपूर्वक स्पष्ट शब्दों

में पहले से वर्णन मौजूद था जिनको देखकर अब दुनिया हैरान है, बल्कि उन घटनाओं का भी वर्णन है जो भविष्य में घटित होने वाली हैं जैसे कि:-

(क) وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۞

(तक्वीर आयत - 5)

एक समय आएगा कि ऊँटनियाँ बेकार हो जाएँगी।

हदीस मुस्लिम में इसकी व्याख्या इस तरह है कि:-

وَلَيُتْرَكَنَّ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا

ऊँटनियों से काम न लिया जाएगा।

अतएव इस ज़माने में रेल के आविष्कार से यह भविष्यवाणी पूरी हो गयी। रेल के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में ऐसे-ऐसे संकेत पाए जाते हैं कि जिन से पूरी तरह रेल का नक्शा आँखों के सामने आ जाता है और पूर्ण विश्वास हो जाता है कि हदीसों में भी सवारी ही तात्पर्य है जो भाप से चलेगी और अपने आगे धुएँ का एक पहाड़ रखेगी और सवारी और भार ढोने की दृष्टि से गधे के समान होगी और चलते समय एक आवाज़ करेगी। इत्यादि इत्यादि

(ख) اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۞

(तक्वीर - 11)

अर्थात् किताबों और धर्मग्रन्थों का प्रचुर मात्रा में प्रकाशन।

आजकल प्रेसों के द्वारा जितना बहुतात से इस ज़माने में किताबों का प्रकाशन हुआ है उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं।

(ग) اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۞

(तक्वीर - 8)

लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों का बढ़ना और मुलाक़ातों का आसान हो जाना। जो इस ज़माने में बड़े व्यापक स्तर पर स्पष्ट हो चुका है।

(घ) تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۞

(नाज़ियात - 6,7)

लगातार ऐसे भयानक भूकम्पों का आना कि जिनसे धरती काँप जाएगी। यह ज़माना इसके लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है।

(ड़) وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا ۞

(बनी इस्राईल - 59)

कोई ऐसी बस्ती नहीं जिसे हम क़यामत से पहले-पहले हलाक नहीं करेंगे या किसी हद तक उसे सज़ा न करेंगे।

अत: इस ज़माने में प्लेग, भूकम्पों, तूफ़ानों और ज्वालामुखी की आग और लावों और पारस्परिक युद्धों से लोग मर रहे हैं और मौत के इतने सामान इस ज़माने में इकट्ठे हो गए हैं और इतनी जल्दी ज़ाहिर हुए हैं कि इस सम्पूर्ण स्थिति का उदाहरण पूर्व के किसी युग में नहीं पाया जाता।

इस्लाम एक ऐसा धर्म है कि हर शताब्दी में उसके अनुयायियों में से ऐसे लोग पैदा होते रहते हैं जो ख़ुदा से संवाद का सौभाग्य पाते हैं और दैवीय चमत्कारों से स्पष्ट करते हैं कि एक सर्वशक्तिमान हस्ती मौजूद है। अत: अत्यन्त बेबसी और गुमनामी की हालत में इस ज़माने के अवतार (मसीह मौऊद व महदी माहूद) से ख़ुदा ने वह्यी नाज़िल की कि

يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَلَا تُصَعِّرْ لِخَلْقِ اللّٰهِ وَلَا تَسْئَمْ مِنَ النَّاسِ

(बराहीन अहमदिया मुद्रित 1881 पृ. 241,
रूहानी ख़ज़ाएन जिल्द-1 पृ.267 हाशिया)

हर एक राह से लोग तेरे पास आएँगे और इतनी अधिकता से आएँगे कि रास्ते तंग हो जाएँगे और तेरी मदद वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम स्वयं डालेंगे, तू ख़ुदा के बन्दों से जो तेरे पास आएं दुर्व्यवहार न करना और चाहिए कि तू उनकी मुलाक़ातों से थके न।

गाँव में रहने वाला एक गुमनाम आदमी जिसे कोई जानता तक न था, उपरोक्त घोषणा करता है। फिर घोर विरोध और रुकावटों के बावजूद एक दुनिया देखती है कि अमरीका और अफ़्रीका से लेकर सारी दुनिया के लोग यहाँ आते हैं और लोगों की अधिकता का यह आलम है कि उन सबसे मिलना और मुलाक़ात करना साधारण आदमी का काम नहीं। बड़े-बड़े लोग अपने वतन को छोड़कर यहाँ रहना पसन्द करते हैं और क़ादियान का नाम पूरी दुनिया में मशहूर हो जाता है। क्या यह छोटी सी बात है और यह ऐसा निशान है जिसे साधारण समझकर टाल दिया जाए?

द्वितीय - ईसाइयों में से डोई ने अमेरिका में नबी (अवतार) होने का दावा किया और यह प्रकाशित किया कि:-

"मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए कि इस्लाम दुनिया से मिट जाए, हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर, हे ख़ुदा! इस्लाम को तबाह कर"

तो केवल यह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ही थे जिन्होंने उसके मुक़ाबले में इश्तिहार दिया और कहा कि हे वह व्यक्ति जो नबूवत का दावा करता है और मेरे साथ मुबाहला कर, हमारा मुक़ाबला दुआ से होगा और हम दोनों ख़ुदा से दुआ करेंगे कि हम में से जो झूठा है वह पहले मरे।

(टेलीग्राफ़ 5 जुलाई सन 1903 ई.)

लेकिन उसने अहंकार में आकर कहा कि, क्या तुम सोचते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खियों का जवाब दूँगा। अगर मैं अपना पाँव इन पर रखूँ तो इनको कुचल कर मार डालूँ।

(डोई का पर्चा दिसम्बर सन् 1903 ई.)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसी इश्तिहार 23 अगस्त सन् 1903 ई. में प्रकाशित किया था कि अगर डोई मुक़ाबले से भागा तब भी नि:संदेह जान लो कि उसके शहर सैहून पर शीघ्र मुसीबत आने वाली है। हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! यह फ़ैसला शीघ्र कर और डोई का झूठ लोगों पर स्पष्ट कर दे।

प्रिय पाठको! सुनो कि इसके बाद क्या हुआ, वह जो राजकुमारों की तरह रहता था और सात करोड़ नकद सम्पत्ति का मालिक था। उसकी बीवी और बेटा दुश्मन हो गए और उसके बाप ने इश्तिहार दिया कि वह उसकी अवैध सन्तान है। अन्तत: उस पर लकवा गिरा, फिर ग़मों के मारे पागल हो गया और मार्च 1907 ई. में बड़ी हसरत और दु:ख के साथ जिसके बारे में ख़ुदा ने अपने मामूर (मसीह मौऊद व महदी माहूद) को पहले से सूचना दे दी थी जिसे उसने 20 फरवरी 1907 ई. के इश्तिहार में पहले से प्रकाशित कर दिया था कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि "मैं एक ताज़ा निशान दिखाऊँगा जिसमें बहुत बड़ी विजय होगी और वह पूरी दुनिया के लिए एक निशान होगा" वह मर कर ख़ुदा की हस्ती पर गवाही दे गया। यह ईसाई जगत पुरानी दुनिया और नई दुनिया दोनों पर मसीह मौऊद व महदी माहूद की विजय थी।

तृतीय - इस देश में आर्यों का बोलबाला है जिनका लेखराम नामक एक लीडर था जिसके बारे में किताब करामातुस्सादिक़ीन मुद्रित सफ़र महीने 1311 हिज्री में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी लिखी कि लेखराम के बारे में ख़ुदा ने मेरी दुआ क़बूल करके मुझे सूचना दी है कि वह छ: वर्ष के अन्दर मर जाएगा और उसका जुर्म यह है कि वह ख़ुदा के नबी (अवतार) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियाँ देता है और अपशब्दों के साथ अपमान करता है। फिर 22 फरवरी सन् 1893 ई. के इश्तिहार में उसके मरने की दशा भी बता दी कि

عِجْلٌ جَسَدٌ لَّهٗ خُوَارٌ لَّهٗ نَصَبٌ وَعَذَابٌ

लेखराम सामरी के बछड़े समान है जो बेजान है और उसमें केवल एक आवाज़ है जो रूहानियत से ख़ाली है इसलिए उसको दण्ड दिया

जाएगा, जिस तरह कि सामरी के बछड़े को दिया गया था। हर एक व्यक्ति जानता है कि सामिरी के बछड़े को टुकड़े-टुकड़े किया गया था और फिर जलाकर दरिया में डाला गया था।

इसके अतिरिक्त 02 अप्रैल सन् 1893 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक कश्फ़ (स्वप्न) देखा (बरकातुद्दुआ का हाशिया-रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-6 पृ.33) कि एक भारी भरकम शरीर और भयानक चेहरे वाला जो मानो मनुष्य नहीं अत्यन्त कठोर और निर्दयी फ़रिश्तों में से है और वह पूछता है कि लेखराम कहाँ है फिर करामातुस्सादिक़ीन के इस दोहे में मौत का दिन भी बता दिया।

وَبَشَّرَنِیْ رَبِّیْ وَقَالَ مُبَشِّراً سَتَعْرِفُ یَوْمَ الْعِیْدِ وَالْعِیْدُ اَقْرَبُ

अर्थात् ईद के दूसरे दिन जो शनिवार का दिन होगा और निम्नलिखित इबारत :-

الا اے دشمن نادان و بے راہ بترس از تیغِ برّانِ محمدؐ

पाँच साल पहले प्रकाशित करके क़त्ल की दशा भी बता दी। अन्ततः 6 मार्च सन् 1897 ई. को लेखराम का क़त्ल हो गया और सब ने पूर्ण सहमति से मान लिया कि यह भविष्यवाणी पूरी स्पष्टता के साथ पूरी होकर अल्लाह तआला के मौजूद होने पर एक जीती-जागती प्रमाण ठहरी। इसलिए ख़ुदा से वार्तालाप एक ऐसी चीज़ है कि उसके होते हुए ख़ुदा की हस्ती का इन्कार करना बड़ी बेशर्मी और नीचता होगी।

दसवाँ प्रमाण -

दसवाँ प्रमाण जो हर एक झगड़े के निर्णय के लिए क़ुर्आन शरीफ़ ने फ़रमाया है इस आयत से निकलता है कि:-

وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अन्कबूत - 70)

जो लोग हमारे बारे में कोशिश करते हैं हम उनको अपनी राह दिखा देते हैं। अतएव इस आयत पर जिन्होंने अमल किया वे हमेशा फ़ायदे में रहे हैं। वह व्यक्ति जो ख़ुदा तआला का इन्कारी हो तो उसे अवश्य समझ लेना चाहिए कि अगर ख़ुदा है तो उसके लिए बहुत मुश्किल होगी। इसलिए अगर सच्चाई ज्ञात करने की उसके दिल में तड़प हो तो उसे चाहिए के पूरी तरह गिड़गिड़ाकर इस रंग में दुआ करे कि हे ख़ुदा! अगर तू है और जिस तरह तेरे मानने वाले कहते हैं कि तू अपार शक्तियों वाला है तो मुझ पर रहम कर और मुझे अपनी ओर मार्गदर्शन कर और मेरे दिल में भी भरोसा और पूर्ण विश्वास डाल दे ताकि मैं तुझ से दूर न हो जाऊँ। अगर कोई व्यक्ति इस तरह सच्चे दिल से दुआ करेगा और कम से कम चालीस दिन तक इस पर अमल करेगा तो वह चाहे जिस मज़हब में पैदा हुआ हो और चाहे जिस देश का निवासी हो ख़ुदा उसको अवश्य सन्मार्ग दिखा देगा और वह शीघ्र देख लेगा कि अल्लाह तआला उस पर ऐसे रंग में अपना अस्तित्व साबित कर देगा कि उसके दिल से सन्देह की बीमारी बिल्कुल दूर हो जाएगी। यह स्पष्ट है कि फ़ैसले के इस तरीक़े में किसी प्रकार का कोई धोखा नहीं हो सकता। अतः सत्याभिलाषियों के लिए इसको अपनाना क्या मुश्किल है?

इस समय इन दस प्रमाणों पर ही मैं अपना लेख समाप्त करता हूँ। यद्यपि क़ुर्आन शरीफ़ में और प्रमाण भी हैं लेकिन मैं अभी इन्हीं पर ख़त्म करता हूँ। यदि कोई इस पर चिन्तन करेगा तो इन्हीं प्रमाणों में से उसके लिए और भी प्रमाण निकल आएँगे।

अन्त में उन पाठकों से जिनके हाथ में यह पुस्तिका पहुँचे निवेदन करता हूँ कि इसे पढ़ने के बाद किसी और ऐसे मित्र को दे दें जिसके लिए इसे लाभदायक समझें।

(तश्हीज़ुल अज़्हान मार्च 1913 ई.)

मेरी रात-दिन बस यही इक सदा है

कलाम

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब

मेरी रात-दिन बस यही इक सदा है
कि इस आलमे कौन का इक ख़ुदा है
उसी ने है पैदा किया इस जहां को
सितारों को सूरज को और आसमां को
वह है एक उस का नहीं कोई हम-सर
वह मालिक है सब का वह हाकिम है सब पर
न है बाप उस का न है कोई बेटा
हमेशा से है और हमेशा रहेगा
नहीं उस को हाजत कोई बीवियों की
ज़रूरत नहीं उस को कुछ साथियों की
हर इक चीज़ पर इस को क़ुदरत है हासिल
हर इक काम की इस को ताक़त है हासिल
पहाड़ों को उसने ही ऊंचा किया है
समंद्र को उस ने ही पानी दिया है
यह दरिया जो चारों तरफ़ बह रहे हैं
उसी ने तो क़ुदरत से पैदा किए हैं
समुंद्र की मछली हवा के परिंदे
घरेलू चरिंदे बनों के दरिंदे
सभी को वही रिज़्क़ पहुंचा रहा है
हर इक अपने मतलब की शैय खा रहा है
हर शै को रोज़ी वह देता है हरदम
खज़ाने कभी उस के होते नहीं कम
वह ज़िन्दा है और ज़िंदगी बख़्शता है
वह क़ायम है हर एक का आसरा है
कोई शै नज़र से नहीं उस के मख़फ़ी
बड़ी से बड़ी हो कि छोटी से छोटी
दिलों की छुपी बात भी जानता है
बदों और नेकों को पहचानता है
वह देता है बंदों को अपने हिदायत
दिखाता है हाथों पे उनके करामत
है फ़र्याद मज़लूम की सुनने वाला
सदाक़त का करता है वो बोल-बाला
गुनाहों को बख़शिश से है ढाँप देता
ग़रीबों को रहमत से है थाम लेता
यही रात-दिन अब तो मेरी सदा है
ये मेरा ख़ुदा है ये मेरा ख़ुदा है

(अख़बार अलफ़ज़ल जिल्द 29 1 जनवरी 1941 ई)

☆ ☆ ☆

हमारा ख़ुदा

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.

इस युग में ख़ुदा पर ईमान कि अवस्था

सर्व प्रथम मैं यहाँ उस नितान्त खेदजनक एंव कष्टदायक अवस्था को प्रकट करना चाहता हूं जो इस युग में ख़ुदा पर ईमान के संबंध में लोगों में सामान्यत: पाई जाती है। कहने को तो संसार में जितने भी धर्म विद्यमान हैं वे सब ख़ुदा को मानते हैं तथा उन धर्मों की और सम्बद्ध होने वाले लोग भी एक अत्यन्त अल्प संख्या के उपवाद के साथ जो स्रष्टा के अस्तित्व की खुल्लम-खुल्ला इन्कारी हैं ख़ुदा पर ईमान लाने के दावेदार हैं किन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए और लोगों की इमानी अवस्था का गहन अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट तौर पर प्रकट हो जाता है कि यह ईमान केवल एक परम्परागत ईमान है जिस का वास्तविकता से लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं। चूंकि लोगों का धर्म उन्हें ये शिक्षा देता है कि तुम्हारा एक ख़ुदा है और वे अपने बाप-दादों से भी यही सुनते चले आए हैं कि हमारा एक ख़ुदा है और वे यह भी महसूस करते हैं कि कौमी संघटन को बिखरने से बचाने के लिए यह अवश्यक है कि वह प्रत्यक्ष तौर पर अपने धर्म के मूल सिद्धान्तों पर स्थापित रहें और फिर उनके हृदयों में कभी-कभी यह स्वाभाविक आवाज़ भी उठती रहती है कि संभव है कि वास्तव में हमारा कोई ख़ुदा हो। इसलिए वे इन्कार का साहस नहीं करते और प्रत्यक्षत: आस्था पर स्थापित है कि उनका एक ख़ुदा है किन्तु वास्तविकता यह है कि वे ख़ुदा को नहीं मानते और उनके हृदय ईमान से उसी प्रकार ख़ाली हैं जिस प्रकार एक उजड़ा हुआ मकान मकान वाले से ख़ाली होता है।

यदि ख़ुदा है तो वह दिखाई क्यों नहीं देता?

एक सन्देह का निवारण करना चाहता हूं जो ख़ुदा तआला के बारे में सामान्यत: लोगों के हृदयों में पैदा हुआ करता है और वह यह कि यदि कोई ख़ुदा है तो वह हमें दिखाई क्यों नहीं देता? यह सन्देह आज का नहीं अपितु सदैव से चला आया है।

ज्ञात होना चाहिए कि संसार में विभिन्न वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के साधन भिन्न-भिन्न हैं। उदाहरणतया किसी वस्तु के बारे में हमें देखने से ज्ञान प्राप्त होता है। किसी के बारे में सुनने से, किसी के बारे में चखने से, किसी के बारे में सूंघने से, किसी के बारे में स्पर्श से इत्यादि, और यह सब ज्ञान एक समान ही निश्चित और विश्वसनीय होते हैं और हमें कदापि यह अधिकार प्राप्त नहीं है कि हम यह मांग करें कि जब तक हमें अमुक वस्तु के बारे में अमुक माध्यम से ज्ञान प्राप्त नहीं होगा हम उसे नहीं मानेंगे। उदाहरणतया रंगों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम आंख है अर्थात् आंख द्वारा हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि अमुक रंग इस प्रकार का है और अमुक इस प्रकार का। इसी प्रकार गंध के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का साधन नाक है तथा आवाज़ के लिए कान हैं। अत: यह सर्वथा मूर्खता होगी। यदि हम यह कहें कि जब तक हम आंख के द्वारा अमुक सुगंध को नहीं देख लेंगे हम नहीं मानेंगे या जब तक हम नाक द्वारा अमुक रंग को सूंघ नहीं सकेंगे हम स्वीकार नहीं करेंगे या जब तक हम अमुक आवाज़ को हाथ से टटोल न लेंगे हमारी सन्तुष्टि नहीं होगी। जो व्यक्ति ऐसी आपत्तियां खड़ी करेगा वह पागल कहलाएगा और यदि वह पागल खाने में नहीं भेजा जाएगा तो कम से कम गली के शरारती और चपल बच्चों का तमाशा अवश्य बन जाएगा, बात यह है कि जैसा कि मैं ने उपर वर्णन किया है संसार में विभिन्न वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए विभिन्न साधन निर्धारित हैं।

प्यारो! इस बात का भली भांति समझ लो कि कोई वस्तु जितनी मोटी होती है उसका समझना अर्थात् उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य की बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के निकट होता है और कोई वस्तु जितनी सूक्ष्म होती है उसका समझना उतना ही मनुष्य की बाह्य ज्ञानेन्द्रियों से दूर होता है। इसी लिए हम देखते हैं कि जो वस्तुएं बहुत सूक्ष्म होती हैं उनके समझने के लिए सामान्यता उनके प्रभावों एंव क्रियाओं तथा परिणामो की ओर ध्यान देना पड़ता है। क्योंकि उनका समझना हमारी बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के लिए सीधे तौर पर संभव नहीं होता। इन परिस्थितियों में यह कैसे संभव है कि ख़ुदा जो एक सूक्ष्मतम हस्ती है अपितु जो स्वंय अन्य सूक्ष्म वस्तुओं का स्रष्टा है वह इन भौतिक आंखों से दिखाई दे जाए।

अत: आपत्ति कर्ता का यह कहना कि जब तक हम ख़ुदा को अपनी भौतिक आंखों से न देख लेंगे हम नहीं मानेंगे एक व्यर्थ और निरर्थक बात है। इसका अर्थ यह है कि या तो आपत्ति कर्ता के विचार में नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा एक मोटी हस्ती है और या कम से कम उसकी यह इच्छा है कि उसके लिए ख़ुदा को मोटाई धारण कर लेनी चाहिए ताकि वह उसे अपनी इन आंखों से देख कर सन्तुष्टि कर सके। किन्तु कठिनाई यह है कि संसार में लाखों लोग अंधे भी हैं तो फिर क्या उन लोगों को अधिकार नहीं होगा कि वे यह विनती करें कि ख़ुदा तआला हमारे लिए कोई ऐसी मोटाई धारण करे जिसके परिणाम स्वरूप हम उसे सूंघ सके या चख सकें या टटोल सकें? क्या ख़ुदा तआला के बारे में यह उपहासपूर्ण व्यवहार करना मनुष्य के लिए जो दिल और दिमाग़ रखने का दावा करता है लज्जनीय नहीं है? तुम कहते हो कि हम ख़ुदा को उस समय तक नहीं मानेंगे जब तक हम उसको इन भौतिक आंखों से न देख लेंगे, किन्तु मैं कहता हूं कि यदि ख़ुदा इन आंखो से दिखाई देने लगे तो मेरे निकट वह इस योग्य ही नहीं रहेगा कि हम उस पर ईमान लाएं, कहां यह कि उसका मानना हमारे लिए आसान हो जाए, क्योंकि इस स्थिति में उसकी कई अन्य विशेषताओं को मिथ्या ठहराना होगा। उदाहरणतया वह सूक्ष्म है परन्तु इस स्थिति में वह सूक्ष्म नहीं रहेगा अपितु मोटा हो जाएगा। वह असीमित है परन्तु इस स्थिति में असीमित नहीं रहेगा अपितु सीमित हो जाएगा इत्यादि-इत्यादि। फिर इस बात की क्या गारन्टी है कि यदि ख़ुदा तुम्हारे लिए अर्थात् इसलिए कि तुम उस पर ईमान ले आओ मोटाई और सीमित होना धारण करे। तो फिर तुम इस कारण से उसका इन्कार न करने लगोगे कि हम मोटे और सीमित ख़ुदा को नहीं मान सकते।

ख़ुदा के बारे में क्यों अनुसन्धान किया जाए?

मानव स्वभाव एंव बुद्धि दोनों ही स्रष्टा के अस्तित्व के प्रश्न को हमारे सामने ऐसे रूप में प्रस्तुत करते हैं कि हम इस छानबीन में पड़ने से बिल्कुल इन्कार नहीं कर सकते। क्या यह प्रश्न हमारे लिए एक असंबंधित प्रश्न है कि हमारा कोई स्रष्टा (पैदा करने वाला) है अथवा नहीं? क्या यह प्रश्न हमारे लिए एक असंबंधित प्रश्न है कि यदि हमें किसी ने पैदा किया है तो वह कौन है? कहां है? क्या-क्या विशेषता रखता है? क्या यह प्रश्न हमारे लिए एक असंबंधित प्रश्न है कि यदि हमें किसी ने पैदा किया है तो हमारी पैदाइश का उद्देश्य क्या है? क्या यह प्रश्न हमारे लिए एक असंबंधित प्रश्न है कि यदि हमारी पैदाइश का कोई उद्देश्य है तो वह उद्देश्य किस प्रकार प्राप्त हो सकता है? यदि ये प्रश्न असंबंधित नहीं हैं और कदापि नहीं हैं तो कौन बुद्धिमान है जो इस छान-बीन में पड़ने से इन्कार कर सकता है?

संसार में जो धर्म भी पाए जाते हैं वे सब के सब ख़ुदा तआला के

अस्तित्व का प्रश्न हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं और न केवल प्रस्तुत करते हैं अपितु उन की शिक्षा का केन्द्र बिन्दु ही ख़ुदा तआला का सर्वोच्च विशेषताओं वाला अस्तित्व है संसार के भिन्न-भिन्न धर्मों की शिक्षा में कितना भी मत भेद हो, इस बात पर वे सब सहमत हैं कि इस जगत की व्यवस्था का एक स्रष्टा तथा स्वामी है जिसके अधिकार में हमारे प्राण हैं और यह कि हमारे उस स्रष्टा तथा स्वामी ने हमारे जीवन का एक उद्देश्य निर्धारित किया है जिसे प्राप्त करने का उपाय भी उसने हमें स्वंय बता दिया है तथा यह कि मृत्यु मानव जीवन का अन्त नहीं है अपितु मृत्यु के पश्चात एक और जीवन है जिसमें मनुष्य अपने वर्तमान जीवन के कर्मों का फल पाएगा इत्यादि, इत्यादि।

ख़ुदा के बारे में अनुसन्धान का तरीक़ा

अब मैं बहुत संक्षेप में यह वर्णन करना चाहता हूं कि ख़ुदा तआला के बारे में छान-बीन का सही उपाय क्या होना चाहिए? क्योंकि जब तक हमें यह ज्ञात न हो कि किसी वस्तु के बारे में छान-बीन करने का सही उपाय क्या है उस समय तक सफलता मिलना अत्यन्त कठिन है। एक ग़लत उपाय को अपना कर हम अपने समस्त प्रयास व्यर्थ में नष्ट कर सकते हैं

अनुसंधान के मैदान में नीयत का प्रभाव

एक दार्शनिक के रूप में ख़ुदा का अनुसन्धान व्यर्थ है। वह केवल ज्ञान में वृद्धि के लिए इस क्षेत्र में कदम रखता है। उस से कोई मतलब नहीं कि ख़ुदा है तो किन गुणों वाला है और उस का बन्दों के साथ क्या सम्बन्ध है। और बन्दों का उस के साथ क्या सम्बन्ध होना चाहिए और उस तक पहुंचने के क्या माध्यम हैं।?

हे मेरे प्यारो! तुम ख़ुदा के बारे में कभी भी दार्शनिकों जैसा अनुसंधान का मार्ग धारण न करो क्योंकि इस प्रकार तुम ख़ुदा को कभी नहीं पा सकते और यह तलाश है भी बे फायदा। क्योंकि यदि हम ने मात्र ज्ञान के तौर पर ख़ुदा के अस्तित्व का पता लगा कर फिर चुप हो जाना है तो हमें इस संकट में पड़ने की आवश्यकता ही क्या है? हम जो अपना समय ध्यान और शक्ति व्यय करें तो क्या केवल इसलिए कि हमें यह ज्ञान प्राप्त हो जाए कि कोई ख़ुदा है या नहीं और बस ऐसा ज्ञान हमारे लिए लेशमात्र भी ,लाभप्रद नहीं हो सकता अपितु उल्टा हानि प्रद होगा क्योंकि ख़ुदा का ज्ञान पा कर फिर उस से असावधान रहना हमें दोहरा अपराधी बना देगा। इसी लिए हमारे इस प्रकार के प्रयास के फलस्वरूप ख़ुदा कभी भी अपना चेहरा हमें नहीं दिखाएगा। वह केवल इसी स्थिति में हम पर प्रकट होगा जब वह यह देखेगा कि हम एक सच्ची तड़प के साथ उस तक पहुंचना चाहते हैं ताकि उस के सानिध्य की बरकतों से लाभाम्वित हों और उसके साथ व्यक्तिगत संबंध पैदा करके अपने लिए उच्च उन्नतियों का द्वार खोल सकें जो मानव जीवन का उद्देश्य है।

ख़ुदा पर ईमान के दो स्तर

ख़ुदा पर ईमान दो श्रेणियों में विभाजित हुआ है। प्रारंभिक श्रेणी वह है जिसे एकमात्र बुद्धि की सहायता से प्राप्त करना संभव है और दूसरी श्रेणी वह है (वास्तव में शरीअत की पारिभाषिक शब्दावली में ख़ुदा पर ईमान इसी श्रेणी का नाम है) जिसे एकमात्र बुद्धि द्वारा संभव नहीं अपितु उसके लिए बुद्धि के सहायतार्थ ख़ुदा की ओर से संभव विशेष प्रबन्ध होता है। ईमान की प्रथम श्रेणी जो बुद्धि से प्राप्त हो सकती है वह केवल इतनी है कि हम बौद्धिक तर्कों द्वारा उस परिणाम पर पहुंच जाएं कि इस कायनात का कोई स्रष्टा एंव स्वामी होना चाहिए, क्योंकि यह सब कुछ जो हम पृथ्वी तथा आकाश में देखते हैं बिना किसी स्रष्टा एंव स्वामी के स्वंय किसी संयोग का परिणाम नहीं हो सकता इत्यादि, इत्यादि। तथा ईमान की दूसरी श्रेणी यह है कि वास्तव में वह स्रष्टा एंव स्वामी मौजूद भी है और उसकी यह-यह विशेषताएं हैं तथा उस तक मनुष्य इस प्रकार पहुंच सकता है। जैसे एक बार ''होना चाहिए'' का है और दूसरा ''है'' का।

ख़ुदा पर ईमान के दो स्तर

कहते हैं किसी ने हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो से पूछा था कि ख़ुदा की हस्ती का क्या प्रमाण है? उन्होंने यह देख कर कि प्रश्न करने वाला एक सीधा-सादा मनुष्य है उसे यही उत्तर दिया कि देखो तुम्हारे लिए इतना ही पर्याप्त है कि यदि तो कोई ख़ुदा नहीं है तो मान लेने वाले और न मानने वाले सब समान हैं किसी की कोई हानि नहीं है और यदि ख़ुदा है तो खूब याद रखो कि इन्कार करने वाले का बचाव नहीं। इस तर्क से उस व्यक्ति को संतोष हो गया तथा उसने फिर कोई प्रश्न न किया। वास्तव में यदि तो कोई ख़ुदा नहीं है तो हमें मान लेने में हानि क्या है? वह कौन सी वस्तु है जो ख़ुदा को मान कर हमें त्यागनी पड़ती है? मोटी बातों में व्यभिचार, हत्या, चोरी, डाका, झूठ, धोका, छल आदि ही वे बातें हैं तो ख़ुदा पर ईमान लाना तुम से छुड़ाता है और ये वे बातें हैं जिनको स्वंय तुम्हारा स्वभाव और तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारी सरकार भी तुम से छुड़ा रही है। इसलिए ख़ुदा पर ईमान ले आने से तुम्हारी हानि क्या हुई? यह ईमान तुम्हारी वैध इच्छा को वैध तौर पर पूरा होने में कोई रोक नहीं होता। तुम वैध तौर पर खाओ, पियो, सोओ, जागो, उठो, बैठो, खेलो, कूदो, पढ़ो, लिखो, संसार के काम करो, धन कमाओ, मित्रताएं करो, पत्नियां करके घर बसाओ सन्तान पैदा करो। तुम्हारा ख़ुदा पर ईमान लाना तुम्हें किसी कार्य से कदापि नहीं रोकता अपितु वह केवल ऐसे कार्यों से रोकता है जो तुम्हारे या दूसरों के लिए हानिप्रद तथा क्षति पहुंचाने वाले हैं और ऐसे कार्यों से रूकना स्वंय तुम्हारे स्वभाव, बुद्धि, समझ में मिलकर रहने के नियमों तथा राजनीतिक नियमों की भी मांग है।

ख़ुदा पर ईमान का पहला स्तर

सब से पहला तर्क जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व के बारे में प्रस्तुत करना चाहता हूं वह ''स्वाभाविक तर्क'' है ख़ुदा तआला के बारे में अनुसंधान (छान-बीन) की आवश्यकता के विषय पर बहस करते हुए मैंने बताया था कि हमारा स्वभाव स्वंय इस प्रश्न को हमारे अन्दर पैदा कर रहा है कि कायनात (ब्रह्माण्ड) का कोई स्रष्टा एंव स्वामी है अथवा नहीं? इसलिए हम इस प्रश्न की उपेक्षा नहीं कर सकते।

(नोट: इस विषय पर एक निबन्ध इस प्रकाशन में प्रकाशित किया गया है पाठक वहां से लाभ उठा सकते हैं।)

क़ायनात की सृष्टि और संसार की प्रणाली की दलील

तर्क का प्रथम भाग जो सृष्टि के अस्तित्व से सृष्टा के अस्तित्व की ओर जाने से संबंध रखता है अपने बाह्य रूप में बहुत सादा है।

खेद, इस संसार में लाखों ऐसे लोग हैं जो हम से यह बात स्वीकार करना चाहते हैं कि यह पृथ्वी, यह आकाश, यह प्राणी, यह वनस्पतियां, यह स्यूल पदार्थ, यह आकाशीय ग्रह, यह पार्थिव सतहें, यह मानव शरीर किसी कारीगर की कारीगरी का फल नहीं अपितु अनादि काल से स्वंय भू हैं। मैं उनकी बात को किस प्रकार स्वीकार कर लूं? मेरे सामने इस समय अरब के एक बंधू का कथन है जिस से किसी ने पूछा था कि तेरे पास ख़ुदा का क्या तर्क है ? उसने उत्तर दिया –

اَلْبَعْرَةُ تَدُلُّ عَلَى الْبَعِيْرِ وَاَثَرُ الْقَدَمِ عَلَى السَّفِيْرِ فَالسَّمَاءُ ذَاتُ الْبُرُوْجِ وَالْاَرْضُ ذَاتُ الْفِجَاجِ اَمَا تَدُلُّ عَلٰى قَدِيْر

अर्थात् जब कोई व्यक्ति जंगल में से गुज़रता हुआ एक ऊंट की मेंगनी देखता है तो यह समझ लेता है कि इस स्थान से कोई ऊंट गुज़रा है और जब वह रेगिस्तान की रेत पर किसी आदमी के पांव का निशान देखता है जो विश्वास कर लेता है कि यहां से कोई यात्री गुज़रा है तो क्या यह पृथवी अपने विशाल मार्गों और यह आकाश अपने सूर्य, चन्द्रमा एंव नक्षत्रों के साथ देख कर तुम्हारा इस और ध्यान नहीं जाता कि इनका भी

कोई बनाने वाला होगा?

अल्लाह, अल्लाह! क्या ही सच्चा क्या ही बनावट से रिक्त परन्तु बुद्धिमता से भरपूर यह कलाम है जो उस रेगिस्तान के अनपढ़ के मुख से निकला, परन्तु जिसकी गहराई तक यूरोप और अमरीका का दार्शनिक अपने दर्शन और बुद्धिमता के बावजूद न पहुंच सका !

ख़ुदा पर ईमान के दो स्तर

लोगों का यह कहना है कि तत्त्व के अन्दर भिन्न-भिन्न रूप धारण कर सकने का जौहर स्वाभाविक तौर पर पाया जाता है तथा तत्व में यह भी एक स्वाभाविक विशिष्टता है कि वह एक समय तक निम्न अवस्था से उच्च अवस्था की और उन्नति करता जाता है। दूसरी बात उनका यह दावा है कि संसार की अधिकतर वस्तुएं जो इस समय विभिन्न प्रकारों, विभिन्न रूप तथा विभिन्न विशेषताओं में दिखाई देती हैं किसी युग में इनमें इतनी भिन्नता न थी, अपितु संसार अपनी प्रारंभिक अवस्था में केवल कुछ सीमित सादा वस्तुओं के रूप में थी। इस लिए इन लोगों का कहना है कि वर्तमान कायनात तथा इसकी बारीक विस्तृत और दूरदर्शिता पूर्ण व्यवस्था को किसी बाह्य स्रष्टा के तर्क में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह सब कुछ विकास-सिद्धान्त के अन्तर्गत स्वाभाविक तौर पर प्रकट हुआ है।

यह वह एतिराज़ है जो कुछ पश्चिम के अन्वेषकों की ओर से ख़ुदा तआला के अस्तित्व के विरूद्ध प्रस्तुत किया जाता है, किन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो यह एतिराज़ एक बिल्कुल घटिया एतिराज़ है। विकास की समस्या जिस के विवरण में हमें यहां जाने की आवश्यकता नहीं तथा इस से दृष्टि हटाते हुए कि वह सही है या ग़लत है अथवा किस सीमा तक सही है और किस सीमा तक ग़लत है। ख़ुदा तआला के अस्तित्व के विरूद्ध तर्क के तौर पर कदापि प्रस्तुत नहीं हो सकता, क्योंकि यह कायनात की समस्या के वास्तविक प्रारंभ के बारे में कोई प्रकाश नहीं डालता अपितु उसका संबंध केवल इस बात से है कि संसार की वर्तमान वस्तुएं हमेशा से इसी प्रकार नहीं अपितु एक निम्न अवस्था से उन्नति करके अपनी वर्तमान अवस्था को पहुंची हैं, किन्तु प्रश्न यह है कि वह प्रारंभिक निम्न अवस्था की वस्तुएं कहां से आई? इसके बारे में विकास की समस्या के समर्थक ज्ञान के तौर पर कोई निश्चित प्रकाश नहीं डालते तथा स्पष्ट है कि जब तक इस संसार की प्रारंभिक उत्पत्ति के बारे में कोई प्रकाश न डाला जाए केवल विकास की समस्या को ख़ुदा के इन्कार के प्रमाण में प्रस्तुत करना बिल्कुल कोई प्रभाव नहीं रखता। क्या केवल इस बात के सिद्ध हो जाने से कि मनुष्य या इस संसार की दूसरी वस्तुएं प्रारंभिक युग में किसी निम्न प्रकार की अवस्था में थीं और फिर शनैः शनैः उन्नति करते-करते वर्तमान अवस्था को पहुंची। यह तर्क उचित हो सकता है कि इस संसार का स्रष्टा कोई नहीं है? कदापि नहीं।

इसके अतिरिक्त एक और बात भी स्मरण रखने योग्य है और वह यह कि दुर्भाग्य से लोग विज्ञान के बारे में सामान्यतः एक ग़लती में ग्रस्त है अर्थात् वे वैज्ञानिकों के अनुमानों तथा विज्ञान की प्रमाणित वास्तविकताओं में अन्तर नहीं करते। स्पष्ट है कि वैज्ञानिकों की घोषणाएं तीन प्रकारों में विभाजित होती है:-

(प्रथम)- वौज्ञानिकों के अनुमान

(द्वतीय)- विज्ञान के अपूर्ण अनुभव

(तृतीय)- विज्ञान की प्रमाणित वास्तविकताएं

ये तीनों अलग-अलग हैसियत तथा अलग-अलग श्रेणी रखते हैं तथा उन एक समान, समझना ख़तरनाक ग़लती है, किन्तु अनभिज्ञ लोग सब को एक समान श्रेणी दे देते हैं।

ख़ुदा स्वंय भू है

अगला तर्क प्रस्तुत करने से पूर्व एक सन्देह का निवरण करना आवश्यक है जो इस अवसर पर कुछ अज्ञान लोगों विशेषतः युवाओं के हृदय में पैदा हुआ करता है और वह यह है कि यदि इस संसार को ख़ुदा ने पैदा किया है तो ख़ुदा को किसने पैदा किया है? अर्थात् अब संसार के बारे में यह प्रश्न पैदा होता है कि इस का पैदा करने वाला तथा मालिक कौन है तो ख़ुदा के बारे में भी यह प्रश्न पैदा होना चाहिए कि ख़ुदा का पैदा करने वाला और मालिक कौन है? इस सन्देह का उत्तर यह है कि इस बात से दृष्टि हटाते हुए कि ख़ुदा के बारे में ऐसा प्रश्न पैदा ही नहीं हो सकता जैसा कि आगे चल कर सिद्ध किया जाएगा। यदि यह मान भी लिया जाए कि जो अस्तित्व इस सार का पैदा करने वाला और मालिक है उसे किसी अन्य उच्च हस्ती (अस्तित्व) ने पैदा किया है तो फिर भी तर्क की दृष्टि से कोई हानि अनिवार्य नहीं आती, क्योंकि इस स्थिति में हम उस उच्च हस्ती ही का नाम ख़ुदा रखेंगे और इस अदीन हस्ती को सृष्टियों में से एक सृष्टि तथा सामानों के क्रम में से एक सामान और उत्पत्ति के माध्यमों में से एक माध्यम ठहराएंगे।

यदि किसी व्यक्ति को यह विचार आए कि चूंकि प्रत्येक हस्ती के बारे में यह प्रश्न पैदा होता जाएगा कि उसका स्रष्टा और मालिक कौन है, इसलिए ऐसी कोई हस्ती सिद्ध ही न हो सकेगी जिसे प्रारंभिक हस्ती कहा जा सके। तो इसका उत्तर यह है कि यह बात बुद्धि की दृष्टि से असंभव है कि इस क्रम की कोई प्रारंभिक हस्ती न हो क्योंकि यदि कोई प्रारंभिक हस्ती स्वीकार न की जाए तो उसका अनिवार्य परिणाम यह होता है कि नीचे की समस्त हस्तियों के अस्तित्व से जो प्रारंभिक हस्ती का परिणाम हैं तथा जिन में से एक संसार भी है इन्कार करना पड़ता है।

वास्तव में यह प्रश्न ही ग़लत है कि ख़ुदा का स्रष्टा और मालिक कौन है, क्योंकि ख़ुदा के बारे में ऐसा प्रश्न पैदा ही नहीं हो सकता। बात यह है कि ख़ुदा होने तथा सृष्टि होने के अर्थ एक दूसरे के सर्वथा विपरीत हैं और यह बात बुद्धि के अनुसार असंभव है कि दोनों अर्थ एक अस्तित्व में एकत्र हों क्योंकि जहां ख़ुदाइयत का अर्थ इस बात को चाहता है कि केवल उस हस्ती का नाम ख़ुदा रखा जाए जो सर्वोच्च है, वहां सृष्टि होने (मख़लूक़ियत) का अर्थ इस बात को चाहता है कि जिस हस्ती को हम सृष्टि ठहराएंगे उसके ऊपर कोई अन्य हस्ती भी हो। अतः यह दोनों अर्थ किसी प्रकार भी एक स्थान पर इकट्ठे नहीं हो सकते।

तीसरा उत्तर जो मैं इस सन्देह का देना चाहता हूं वह यह है कि इस बात से दृष्टि हटाते हुए कि ख़ुदा के बारे में यह प्रश्न उठाया ही नहीं जा सकता कि उसे किसी ने पैदा किया है आइए थोड़ी देर के लिए यह मान लेते हैं कि ख़ुदा सृष्टि है और फिर देखते हैं कि इसका परिणाम क्या निकलता है। बुद्धि हमें बताती है कि यदि कोई ख़ुदा है तो वह अपनी समस्त विशेषताओं में स्थायी एंव स्वंतत्र होना चाहिए उसके अन्दर स्थायी तौर पर पाई जानी चाहिएं ।

इस विश्व को ही क्यों न अनुतपत (स्वंय भू) समझा लिया जाए

इसके पश्चात् मैं एक अन्य सन्देह का उत्तर देना चाहता हूं जो अधिकांश लोगों के हृदयों में पैदा हो सकता है क्यों न इस संसार को ही अपने अस्तित्व में स्वंय से ही स्थापित तथा स्वंय भू ठहरा दिया जाए।

यह सन्देह सरासर सोच-विचार की कमी पर आधारित तथा बाज़ारी जैसे लोगों के विचार का परिणाम है, इस से अधिक इसका कोई महत्त्व नहीं। वास्तव में इस सन्देह का आधार इस विचार पर है कि चूंकि ख़ुदा को स्वंय भी माना जाता है।

इस सन्देह का उत्तर यह है कि हम ने संसार को जो सृष्टि माना है तो वह इस आधार पर नहीं कि चूंकि प्रत्येक वस्तु का सृष्टि होना आवश्यक है, इसलिए संसार भी सृष्टि होना चाहिए अपितु इसलिए कि संसार की परिस्थितियां उसे सृष्टि सिद्ध कर रही हैं।

प्रत्येक वस्तु अपनी अपनी विशेष परिस्थितियां रखती हैं और उन्हीं

विशिष्ट परिस्थतियों के अन्तर्गत उसके बारे में कोई राय स्थापित की जा सकती है। पानी की परिस्थितियां भिन्न हैं तथा अग्नि, पत्थर और वायु की पृथक। यह हमारी मूर्खता होगी कि हम उन सब को एक ही कानून के अन्तर्गत समझ कर एक ही माप दण्ड से नापने लग जाएं। इसी प्रकार संसार की वस्तुओं के मापदण्ड के अनुसार ख़ुदा के बारे में तथा उसके मापदण्ड के अनुसार संसार के बारे में अनुमान नहीं लगाया जा सकता अपितु प्रत्येक को उसकी विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार पृथक-पृथक मापदण्ड से परखा जाएगा।

अच्छाई और बुराई की समझ की स्वाभाविक दलील

इसी प्रकार यह तर्क जो मैं अब वर्णन करना चाहता हूं उस नैतिक कानून पर आधारित है जो प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति में काम कर रहा है तथा जिस के अस्तित्व से कोई बुद्धिमान इन्कार नहीं कर सकता। अच्छाई-बुराई की समझ मनुष्य की प्रकृति के अन्दर अंकित है तथा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं मिलेगा। जिसके अन्दर यह समझ न हो। निस्सन्देह यह संभव है कि किसी मनुष्य की प्रकृति (स्वभाव) बाह्य प्रभावों के परिणाम स्वरूप कमज़ोर हो जाए कि जैसे वह बिल्कुल मर ही गई है किन्तु फिर भी किसी न किसी रंग में, किसी न किसी रूप में, किसी न किसी अवसर पर वह प्रकट हुए बिना नहीं रहती।

अत: अच्छाई-बुराई की समझ स्वाभाविक तौर पर प्रत्येक मनुष्य के अन्दर मौजूद है और यह समझ इस बात का एक शक्तिशाली तर्क है कि मनुष्य स्वंय किसी संयोग का फल नहीं और न किसी अंधे क़ानून का परिणाम है अपितु एक सर्वज्ञ और दूरदर्शा हस्ती ने उसे एक विशेष उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया है और वह उद्देश्य यही है कि मनुष्य अपनी उस स्वाभाविक समझ को जो उसके अन्दर एक बीज के तौर पर रखी गई है विकसित करके अपने लिए उच्चतम उन्नति के मार्ग खोले तथा इस सौन्दर्य एंव उपकार के पूर्ण स्रोत और इस एकमात्र जीवन-स्रोत अर्थात् ख़ुदा तआला के अस्तित्व का प्रतिबिम्ब अपने अन्दर पैदा करता हुआ सदैव के लिए हर प्रकार के सौन्दर्य और उपकार की उच्चतम चोटियों की ओर चढ़ता चला जाए।

अत: पवित्र क़ुर्आन का कथन है:- فَأَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا

अर्थात् ''ख़ुदा ने प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति (स्वभाव) में बुराई और अच्छाई की समझ रखी हुई है और उसे उसकी प्रकृति के द्वारा बता दिया है कि यह मार्ग बुरा है और यह मार्ग अच्छा है।''

तथा दूसरे स्थान पर कहता है:- وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ

अर्थात् ''हमने मनुष्य को अच्छाई और बुराई हर दो मार्ग (उसकी प्रकृति के द्वारा) दिखा दिए हैं।''

सार्वजनिक मान्यता का तर्क

इसके पश्चात जो तर्क मैं वर्णन करना चाहता हूं वह सार्वजनिक मान्यता का तर्क है और यह तर्क इस सिद्धान्त पर आधारित है कि संसार में किस विचार या आस्था अपने मूल की दृष्टि से सच और ईमानदारी पर आधारित है।

अब इस नियम के अन्तर्गत हम विवादित प्रश्न पर दृष्टि डालते हैं तो ख़ुदा पर ईमान की आस्था एक ऐसी आस्था सिद्ध होती है जिससे किसी बुद्धिमान मनुष्य को इन्कार नहीं हो सकता। संसार में जितनी भी जातियां आबाद हैं चाहे वे बड़ी हैं या छोटी, सभ्य हैं या असभ्य, शिक्षित हैं या अशिक्षित अत: जितनी भी जातियां हैं तथा जहां भी हैं वे अपने असंख्य मत भेदों के बावजूद इस बात में सहमत हैं कि संसार और जो कुछ इसमें है स्वंय भू नहीं हैं अपितु उसका कोई स्रष्टा और मालिक है तथा यह विचार केवल इस युग की जातियों तक ही सीमित नहीं अपितु जिस-जिस युग का भी इतिहास हमारे सामने सुरक्षित है उस में बिना किसी उपवाद के यही दृश्य दिखाई देता है कि कोई जाति भी इस आस्था से रिक्त नहीं कि यह संसार किसी सर्वोच्च हस्ती की सृष्टि (रचना) और दास है।

क्या ख़ुदा की आस्था भ्रमवाद का परिणाम है ?

यहां यदि किसी को यह सन्देह है कि कुछ पाश्चात्य लेखकों ने यह लिखा है कि संसार में कुछ जातियां ऐसी भी गुज़री हैं जो जाति होने के नाते ख़ुदा की आस्था से अपरिचित रही हैं, तो इसका उत्तर यह है कि निस्सन्देह कुछ लेखकों ने ऐसा लिखा है और विशेषत: प्रारंभिक युग के बारे में उन लोगों का यह विचार है कि कुछ जातियां ख़ुदा की आस्था से अपरिचित दिखाई देती हैं किन्तु यदि ध्यान पूर्वक अध्ययन किया जाए तो स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है कि उन लेखकों को धोखा लगा है तथा उन्होंने पूर्ण अनुसंधान से काम नहीं लिया और विशेषत: उन को यह ग़लती लगी है कि उन्होंने कुछ प्राचीन मुश्रिक (अनेकेश्वर वादी) जातियों की शिर्क से भरी आस्थाओं को मात्र भय, अशिक्षा तथा भ्रमवाद की ओर सम्बद्ध कर दिया है तथा ग़लत तौर पर यह समझ लिया है कि 'एक ख़ुदा' की आस्था उनके अन्दर कभी भी नहीं पाई गई। जबकि यह बात सर्वथा ग़लत है तथा सच यह है कि शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की आस्था यद्यपि वह निरक्षरता का ही परिणाम होता है परन्तु निश्चय ही वह ख़ुदा की आस्था की एक शाखा है न कि मूल। अर्थात् शिर्कपूर्ण आस्थाएं सदैव ख़ुदा पर ईमान की बिगड़ी हुई आस्था के परिणाम स्वरूप पैदा होती हैं तथा ऐसा नहीं होता कि ख़ुदा की आस्था बिल्कुल समाप्त होने की अवस्था में भी शिर्क की आस्थाएं पैदा हो जाएं। अत: संसार के इतिहास में ऐसे उदाहरण मौजूद हैं कि एक जाति प्रथम ख़ुदा की आस्था पर स्थापित दिखाई देती है और फिर शनै: शनै: उसमें शिर्कपूर्ण विचारों का हस्तक्षेप आरंभ हो जाता है और प्राय: उन शिर्कपूर्ण आस्थाओं का ऐसा प्रभुत्व हो जाता है कि ख़ुदा की आस्था की अवहेलना करके धीरे-धीरे दृष्टि से बिल्कुल ओझल और अन्तत: समाप्त हो जाती है। अत: जब ऐसे उदाहरण मौजूद हैं तो इन्साफ़ यह चाहता है कि प्रारंभिक युग की जिन जातियों में हमें शिर्कपूण आस्थाओं के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता और उनकी प्रारंभिक इतिहास भी हमारे पास सुरक्षित नहीं है, तो उनके बारे में हम यही अनुमान लगाएं कि प्रारंभ में वह ख़ुदा की आस्था पर स्थापित होंगी, परन्तु धीरे-धीरे ख़ुदा की आस्था बिल्कुल समाप्त हो गई तथा उसके स्थान पर शुद्ध रूप से शिर्कपूर्ण विचार स्थापित हो गए।

रसूलों की विजय का तर्क

ख़ुदा तआला के अस्तित्व का वह तर्क मैं जो अब प्रस्तुत करना चाहता हूं यह है कि जब से संसार का इतिहास सुरक्षित है, हम यह देखते हैं कि जब कभी भी ख़ुदा पर ईमान लाने वालों और ख़ुदा का इन्कार करने वालों का (चाहे वह इन्कार आस्थागत हो या क्रियात्मक) मुक़ाबला हुआ है विजय ईमान लाने वालों के साथ रही है , जिससे ज्ञात होता है कि ईमान लाने वालों की सहायता में कोई अदृश्य (ग़ैबी) हाथ काम करता है। मेरा तात्पर्य यह नहीं कि हर प्रकार के मत भेद में मोमिन बहर हाल काफिर के मुकाबले में विजय पाता है क्योंकि सामान्य परिस्थितियों में विजय और पराजय प्रकृति के नियम के अधीन आती-जाती है तथा कोई कारण नहीं कि यदि एक काफ़िर सफलता का मार्ग अपनाता है और एक मोमिन नहीं अपनाता तो काफिर को विजय प्राप्त न हो और मोमिन को हो जाए। सामान्य परिस्थितियों में ऐसा कभी नहीं होगा अपितु सफलता उसी के भाग में रहेगी जो सफलता के मार्ग पर चलता है चाहे वह कोई हो। इसलिए यहां संसार के सामान्य मतभेद और मुकाबले मेरी दृष्टि में नहीं अपितु अभिप्राय यह है कि जब कभी भी कोई सच्चा व्यक्ति इस दाने के साथ संसार में खड़ा होता है कि ख़ुदा की ओर से मेरे जीवन का यह मिशन निर्धारित किया गया है कि मैं संसार में ईमान को स्थापित करूं तो फिर वह अपने मिशन में अवश्य सफल हो कर रहता है और संसार की कोई शक्ति उसकी सफलता के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। अत: पवित्र क़ुर्आन का कथन है:- كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِيْ अर्थात् अल्लाह तआला ने

यही निर्धारित कर रखा है कि वह और उसके रसूल सदैव विजयी रहेंगे।

सदाचारी महापुरूषों की साक्ष्य (गवाही) का तर्क

अन्तिम बौद्धिक तर्क जो मैं इस लेख में ख़ुदा तआला के अस्तित्व के बारे में वर्णन करना चाहता हूं वह सदाचारी महापुरूषों से संबंध रखता है अर्थात् इस सिद्धान्त पर आधारित है कि अधिकांश ऐसे लोग जिनकी सच बोलना प्रमाणित है और उनके मानसिक तौर पर स्वस्थ एंव पूर्ण होने में भी कोई आपत्ति नहीं इस बात की व्यक्तिगत साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि वास्तव में हमारा एक ख़ुदा है जिसे हम ने उसी प्रकार देखा और पहचाना है जिस प्रकार हम अन्य अश्य वस्तुओं को देखते और पहचानते हैं।

ख़ुदा पर ईमान के महान लाभ

इसके उपरान्त मैं ख़ुदा तआला के अस्तित्व के बारे में कुछ ऐसे तर्क वर्णन करना चाहता हूं जो इस सिद्धान्त पर आधारित हैं कि ख़ुदा पर ईमान लाना अपने अन्दर कुछ ऐसे लाभ रखता है जो उस पर ईमान लाए बिना किसी अन्य उपाय से पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो सकते। स्पष्ट है कि संसार में जब कोई वस्तु अपनाई जाती है इस सिद्धान्त पर अपनाई जाती है कि वह किस सीमा तक लाभप्रद है। उस वस्तु का अपनाना मानव जाती पर क्या लाभकारी प्रभाव पैदा करता है? अत: यदि यह बात सिद्ध हो जाए कि ख़ुदा पर ईमान लाना मानव जाति के लिए बहुत मुबारक और लाभप्रद है तो प्रत्येक बुद्धिमान इस बात से सहमत होगा कि इस स्थिति में और नहीं तो केवल इस लाभ के लिए ही ख़ुदा की आस्था को नहीं त्यागना चाहिए। निस्सन्देह इन तर्कों यह सिद्ध नहीं हो सकता कि इस सार के ऊपर कोई ख़ुदा है या होना चाहिए। किन्तु इन से यह अवश्य ज्ञात होता है कि ख़ुदा की आस्था मानव जाति की उन्नति और कल्याण के लिए नितान्त लाभप्रद है और चूंकि लाभप्रद वस्तु ग्रहण की जानी चाहिए इस लिए यह तर्क भी ख़ुदा तआला के अस्तित्व के समर्थन में माध्यम के साथ प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

ख़ुदा पर ईमान एकता और भ्रातृ भावना को जन्म देता है

सब से पहले ख़ुदा पर ईमान रखने का जो लाभ मैं वर्णन करना चाहता हूं वह यह है कि लोगों के हृदयों में ख़ुदा का विचार एकता और भाईचारे की भावना पैदा करने का सब से बड़ा साधन है और भावनाएं मानव जाति की उन्नति एंव कल्याण के लिए परम आवश्यक तथा लाभप्रद हैं।

ख़ुदा की आस्था बुराई करने से रोकती है।

ख़ुदा पर आस्था लाने के परिणाम स्वरूप दूसरा लाभ जो संसार को सामान्यत: प्राप्त हो सकता है यह है कि ख़ुदा पर आस्था रखना मनुष्य को बुराई करने से रोकती है।

ख़ुदा की आस्था नेकी की ओर प्रेरणा उत्पन्न करता है

ख़ुदा पर ईमान लाने का तीसरा लाभ जो संसार को प्राप्त हो सकता है यह है कि ख़ुदा की आस्था नेकी की ओर प्रेरणा उत्पन्न करती है और इस बात को इसी प्रकार के तर्कों द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

ख़ुदा की आस्था से नैतिकता का मापदण्ड स्थापित होता है।

ख़ुदा तआला पर ईमान लाने के परिणाम स्वरूप छठा लाभ जो संसार को प्राप्त होता सकता है यह है कि ख़ुदा कि आस्था संसार में नैतिकता का मापदण्ड स्थापित करने का कारण है जो इस के स्वभाव में कभी भी स्थापित नहीं हो सकता। तथा ज़ाहिर है कि इस स्थिति में मनुष्य के लिए उस सर्वोच्च हस्ती के अतिरिक्त अन्य कोई आदर्श अनुकरणीय नहीं हो सकता और उसकी नैतिकता का मापदण्ड इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि स्वंय को अपने स्रष्टा एंव मालिक की विशेषताओं के रंग में रंगीन करे। अत: आंहज़रत स.अ.व. फ़रमाते हैं – تَخَلَّقُوْا بِاَخْلَاقِ اللّٰہِ

अर्थात् ''हे लोगो ! तुम अपने अख़लाक को ख़ुदा के अख़लाक के अनुकूल बनाओ।'' ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 25 का शेष

बर्दाश्त करता है और बदले में जल्दी नहीं करता इस लिए उसकी यह विशेषता सुबूर है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "चश्मा मार्फ़त" में अल्लाह तआला की सिफात (गुणों) के विषय एक बहुत सूक्ष्म रूप में वर्णन फ़रमाते हैं। आप फ़रमाते हैं।

"ख़ुदा तआला ने विनीत इन्सानों को अपनी सम्पूर्ण मार्फ़त का ज्ञान देने के लिए अपनी गुणों को क़ुरआन शरीफ़ में दो रंग पर प्रकट किया है। (1) प्रथम इस तरीका से वर्णन किया है जिस से उसके गुण इस्तिआरा के तरीक़ा से सृष्टि के गुणों के हमशक्ल हैं जैसा कि वह कृपालु, दयालु है उपकारी है और वह क्रोध भी रखता है। और उस में मुहब्बत भी है और उस के हाथ भी हैं और इस की आँखें भी हैं और उस की पिंडलियां भी हैं और उसके कान भी हैं और बहुत पहले से उस की सृष्टि का सिल्सिला उसके साथ चला आया है परन्तु किसी चीज़ को उसके मुक़ाबला पर व्यक्तिगत क़दामत नहीं हाँ क़दामत नोई है। और वह भी ख़ुदा की विशेषता सृष्टि के लिए एक अनिवार्य बात नहीं क्योंकि जैसा कि पैदा करना अर्थात पैदा करना उसके गुणों में से है ऐसा ही कभी और किसी ज़माना में एकाकी और एक होने का गुण प्रकट उसके गुणों में से है और किसी विशेषता के लिए स्थायी स्थगित होना जायज़ नहीं हाँ अस्थायी उचित है।

अत: चूँकि ख़ुदा ने इन्सान को पैदा करके अपने उन मिलते जुलते गुणों को इस पर प्रकट किया जिन गुणों के साथ इन्सान ज़ाहिर में साझी रखता है जैसे ख़ालिक़ होना क्योंकि इन्सान भी अपने हद तक चीज़ों का ख़ालिक़ अर्थात आविष्कारक है। ऐसा ही इन्सान को करीम भी कह सकते हैं क्योंकि वह अपने हद तक करम की विशेषता भी अपने अंदर रखता है और इसी तरह इन्सान को रहीम भी कह सकते हैं क्योंकि वह अपनी हद तक क़ुव्वते रहम भी अपने अंदर रखता है और क़ुव्वते ग़ज़ब भी उस में है और ऐसा ही आँख कान इत्यादि सब इन्सानों में मौजूद हैं। अत: उन मिलते जुलते गुणों से किसी के दिल में शंका पैदा हो सकती था कि मानो इन्सान इन गुणों में ख़ुदा से मिलता जुलता है और ख़ुदा इन्सान से मिलता जुलता इस लिए ख़ुदा ने इन गुणों के मुक़ाबला पर क़ुरआन शरीफ़ में अपने तन्ज़ीही गुणों का भी वर्णन कर दिया अर्थात ऐसी साझीदारी इन्सान के साथ नहीं और न इन्सान को इस के साथ कुछ साझीदारी है। न उस का सृष्टि अर्थात पैदा करना इन्सान की सृष्टि की तरह है न उसका रहम इन्सान के रहम की तरह है न उस का ग़ज़ब इन्सान के ग़ज़ब की तरह है न उसकी मुहब्बत इन्सान की मुहब्बत की तरह है न वह इन्सान की तरह किसी मकान का मुहताज है।

(रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 चश्मा मार्फ़त, पृष्ठ 260)

☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अल्लाह तआला के अस्मा-ए-हुस्ना (गुणवाचक नाम)

पवित्र कुरआन, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों तथा हज़रत मसीह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के आलोक में

(मामूनुर्रशीद तबरेज़, मुरब्बी सिल्सिला तारीख़ अहमदियत, क़ादियान)

ख़ुदा तआला समस्त ब्रह्माण्ड का स्रष्टा होने के साथ साथ वह हस्ती भी है जो समस्त वस्तुओं की जान है। वह प्रत्येक स्थान पर मौजूद है और प्रत्येक वस्तु उसके कब्ज़ा में है। कोई ऐसी चीज़ नहीं जो उसके इल्म से बाहर हो। वह सूक्ष्म है और छुपे हुए से भी छुपा है। वह ऐसी हस्ती है जिसे इन्सान अपनी शारीरिक आँखों से तो नहीं देख सकता परन्तु जिस तरह भौतिक चीज़ों और तत्वों को उनके गुणों से पहचाना जाता है इसी तरह अल्लाह तआला के दर्शन के अभिलाषी ख़ुदा को उसके गुणों के माध्यम से महसूस करते हैं। हक़ यही है कि ख़ुदा तआला की मौजूदगी का एहसास ख़ुदा तआला के गुणों के प्रादुर्भाव से होता है। ख़ुद इन्सान का वजूद भी इस बात की दलील है। क्योंकि इन्सान को भी ख़ुदा ने अपने गुणों का द्योतक बना कर पैदा किया। अपने गुणों का इल्म ख़ुदा तआला ने ख़ुद क़ुरआन करीम में दिया है। जैसा कि फ़रमाया:

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

(अल-आराफ़: 181)

अनुवाद और अल्लाह ही के सब ख़ूबसूरत नाम (गुणों) हैं। अत: उसे उन(नामों) से पुकारा करो। और उन लोगों को छोड़ दो जो उसके नामों (गुणों) के बारे में टेड़ा मार्ग धारण करने से काम लेते हैं। उनको अपने कर्मों का बदला दिया जाएगा जो कुछ वे करते रहे।

ख़ुदा तआला ने अपने सुन्दर नामों का इल्म इन्सान को सिर्फ इस लिए नहीं दिया कि इन नामों को पढ़ना या बार-बार दोहराना काफ़ी है जैसा कि तसव्वुफ़ वाले किया करते हैं। हरगिज़ नहीं बल्कि इन नामों में मौजूद अल्लाह तआला की विशेषताओं को समक्ष रखते हुए ख़ुदा तआला को याद करना चाहिए ताकि ख़ुदा तआला के गुण इन्सान पर प्रकट हों। और इन्सान ख़ुद भी इन गुणों को अपने अंदर पैदा करे। अल्लाह तआला के गुण कोई अलग वस्तु नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला के नामों का अभिप्राय हैं। उसके हर नाम से उसके गुण और विशेषताएं स्पष्ट होती हैं। हदीस में आता है

عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلّم اِنّ لِلّٰه تعالیٰ تِسعةً وتِسعینَ اِسماً مِائَةً غیرَ وَاحدٍ مَن اَحصَاهَا دَخلَ الجنَّةَ

(तिर्मिज़ी ,किताबुद्दअवात, बाब फ़ी अस्माउल हुसना मा ज़करहा .3507)

अर्थात अल्लाह तआला के 99 (गुणवाचक) नाम हैं, जो ज़िन्दगी में उनको समक्ष रखेगा और उनका द्योतक बनने की कोशिश करेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा।

उपरोक्त हदीस के अगले हिस्सा में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन समस्त निनानवे गुणवाचक नामों का वर्णन फ़रमाया है। अब मूल विषय की यह मांग है कि इन समस्त गुणों का यहां वर्णन किया जाए। उपरोक्त हदीस में बताए गए क्रम के अनुसार ये नाम नीचे लिखे जाते हैं

1-(اَلرَّحْمٰنُ)अलर्रहमान: क़ुरआन क़रीम की पहली आयत "बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्राहीम" में इसका वर्णन किया गया। रहमान सिफत ऐसी सिफ़त है जो यह प्रकट करती है कि ख़ुदा तआला कुछ मांगे बिना ही इन्सान को बहुत कुछ प्रदान करने वाला है। इस प्रदान करने के लिए कुछ भी शर्त नहीं रखी गई। जैसे पानी,रोशनी,हवा इत्यादि जो इन्सान के लाभ के लिए एक जैसी पैदा की हैं सिफ़त रहमान के अधीन सृष्टि को रंग तथा नस्ल का भेद किए बिना अल्लाह तआला लाभ पहुंचा रहा है।

2-(اَلرَّحِيْمُ)अर्-रहीम : फिर पहली ही आयत में सिफ़त रहीमियत का भी वर्णन मिलता है। जिसके अर्थ हैं नेक-कर्मों को नष्ट न करते हुए अपनी सृष्टि को अपने रहम से नेक फल प्रदान करने वाला।

3-(اَلْمَلِكُ)अल्-मलिक: मलिक विशेषता से ख़ुदा तआला का सारे ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु और कण-कण पर सम्पूर्ण मिल्कियत (आधिपत्य) का प्रकटन होता है। और यह भी कि हर चीज़ की सृष्टि और उसकी बक़ा पर भी वह पूरा मालिक है।

4-(اَلْقُدُّوْسُ)अल्-क़ुद्दूस: ऐसे समस्त संसाधनों और दोषों से पवित्र जिन को इन्सान महसूस कर सके या ख़्याल और कल्पना करे या फिर वहम इस तरफ़ जाए या दिल की शक्तियां समझ सकें।

5-(اَلسَّلَامُ)अस्-सलाम: समस्त त्रुटियों से सुरक्षित। सलामती का स्रोत और अमन प्रदान करने वाला।

असल में यह धातु है जिसके अर्थ सलामती के हैं। परन्तु अस्मा-ए-इलाही में यह सालिम के अर्थ में आता है। अर्थात वह पवित्र ज़ात जो हर प्रकार के दोष और नुक़्सान से सुरक्षित है।

6-(اَلْمُؤْمِنُ)अल-मुमिन: अपने वादों में सच्चा। अपने अज़ाब से और हर किस्म के दुखों और मुसीबतों से अमन प्रदान करने वाला। अपने कमाल तथा तौहीद पर दलीलें देने ने वाला। समस्त सच्चाइयों का मानने वाला।

7-(اَلْمُهَيْمِنُ)अल्-मुहैमिन: सब के कर्मों का निगरान और जानने वाला और गवाह।

8-(اَلْعَزِيْزُ) अल्-अज़ीज़। सब पर ग़ालिब। कण-कण पर आधिपत्य क़ायम रखने वाली ज़ात। सम्मानित करने वाला। जिसके समक्ष कोई कार्य असम्भव न हो। जिसकी क़ुदरत में कोई दोष न हो।

9-(اَلْجَبَّارُ)अल्-जब्बार: संवारने वाला। इन्सानी ग़लतियों पर सुधार के सामान पैदा करने वाला। बड़े रोब वाला।

दरअसल जब्बार अतिश्योक्ति की विभक्ति है जो जबर से लिया गया है। और जबर के अर्थ हैं टूटे हुए को जोड़ना और किसी के हाल का सुधार करना और किसी को ज़ोर और ग़लबा से किसी काम पर तत्पर करना।

10-(اَلْمُتَكَبِّرُ)अल्-मुतकब्बिर: समस्त सृष्टि के दोषों और सृष्टि के गुणों से बरी। समस्त छोटे बड़े हर किस्म के शिर्क से उसकी ज़ात पवित्र और बुलन्द। कमाल शान तथा बुज़र्गी का मालिक और योग्य और प्रशंसा वाला।

11-(اَلْخَالِقُ)अल्-ख़ालिक: प्रत्येक वस्तु का सम्पूर्ण हिक्मत के साथ अंदाज़ा करने वाला। प्रत्येक वस्तु जो इस संसार में मौजूद है उसका पैदा करने वाला।

12-(اَلْبَارِئُ)अल्-बारी : प्रत्येक चीज़ से उत्तम सार अलग करने वाला। शून्य से पैदा करने वाला। अदम से वजूद में लाने वाला

13-(اَلْمُصَوِّرُ)अल्-मुसव्विर: सृष्टियों की तरह तरह की शक्लें बनाने वाला। शक्ल देने वाला। सूरत देने वाला।

ख़ालिक़, बारी और मुसव्वर उर्दू भाषा में व्यापकता न होने के कारण से समानार्थक अर्थों में समझे जाते हैं और तीनों के ही अर्थ पैदा करने के लिए जाने जाते हैं। परन्तु वास्तव में पैदाइश की तीन विभिन्न हालतों के प्रकटन को ये गुण बताते हैं। जैसे ख़लक़ का शब्द तब प्रयोग होता है जब कि वजूद से पहले इसका अंदाज़ा किया जाए। और बारी तराश-ख़राश करके सृष्टि को निखारने के अर्थों में लिया जाएगा जो कि पैदाइश का दूसरा स्तर है। और फिर मुसव्वर इंतिहाई हालत के अर्थों में आएगा अर्थात तस्वीर बनाने और रूप और शक्ल देने के अर्थ को प्रकट करता है।

नम्बर 5 से नम्बर 12 तक अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन क़ुरआन शरीफ़ की सूरत हश्र के आख़िर में इस प्रकार है:

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۴﴾

(अल-हश्र: 23-24)

14-(الْغَفَّارُ)अल-ग़फ़्फ़ार: बहुत प्रदान करने वाला। गुनाहों को ढाँकने और छिपाने वाला।

अत: क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया कि

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا الْعَزِیْزُ الْغَفَّارُ

(सअद 67)अर्थात आकाशों और धरती का और जो कुछ उनके मध्य है परवरिश करने वाला और उसकी पूर्णता करने वाला रब है और वह क़ुदरत वाला और बहुत प्रदान करने वाला है।

15-(الْقَهَّارُ)अल-क़ह्हार: मुकम्मल ग़लबा रखने वाला। हुकमरान।

क़हर के अर्थ अरबी भाषा में ग़लबा और ताक़त के हैं। क़ाहिर के अर्थ ग़ालिब और ताक़तवर के हैं। अल-क़ाहिर जो अल्लाह तआला का गुण है इसके अर्थ हैं वह पवित्र ज़ात जो सब पर ग़ालिब है। अल-क़ह्हार वास्तव में अलक़ाहिर की अतिशयोक्ति है। ख़ुद क़ुरआन क़रीम ने अलक़ाहिर के अर्थ कर दिए हैं अत: फ़रमाया

یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (यूसुफ़ 40)

हे मेरे क़ैदख़ाना के दोनों साथियो ! क्या अलग अलग उपास्य अच्छे हैं या एक वाहिद ख़ुदा जो सबसे ताक़तवर और ग़ालिब है

16-(الْوَهَّابُ)अल-वह्हाबु प्रदान करने वाला। देने और प्रदान करने को वह्ब और हिबा कहते हैं। वह्हाब अतिशयोक्ति है अर्थात बहुत अधिक देने वाला और सदैव प्रदान करने वाला। अत: क़ुरआन शरीफ़ में सिफ़त वहाब का यूं वर्णन है:

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۹﴾

(आल-ए-इम्रान 9) अर्थात हे हमारे परवरदिगार हमारे दिलों को टेड़ा न बना बाद इसके कि तू ने हमको हिदायत प्रदान फ़रमाई और हमको अपने हुज़ूर से रहमत प्रदान फ़र्मा। बेशक तू सदैव प्रदान करने वाला है।

17-(الرَّزَّاقُ)अर्-रज़्ज़ाक़ सृष्टियों को रोज़ी पहुंचाने वाला।

यह विशेषता राज़िक़ की अतिशयोक्ति है। अर्थात ख़ुदा तआला समस्त सृष्टियों को उन के योग्य और हिक्मत के अनुसार रिज़्क़ पहुँचाता है। रिज़्क़ की दो किस्में हैं। महसूस और माक़ूल। इस नाम का अभिप्राय क़ुरआन क़रीम में बहुत से स्थानों पर बयान हुआ है परन्तु रज़्ज़ाक़ एक स्थान पर आया है। फ़रमाया:

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِیْنُ (अज़्ज़ारियात 59)

अर्थात बे-शक अल्लाह है जो बहुत रिज़्क़ देने वाला , सामर्थ्य वाला और मज़बूत गुणों वाला है।

18-(الْفَتَّاحُ)अल्-फ़त्ताह :मुश्किल दूर करने वाला। बंदों पर हुक्म करने वाला।

फ़तह के अर्थ खोलने और हुक्म करने के हैं। क़ुरआन क़रीम में इस विशेषता को यूं वर्णन किया गया है:

ثُمَّ یَفْتَحُ بَیْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَ هُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِیْمُ (सबा 27)

अर्थात फिर (हमारा ख़ुदा) हक़ तथा हिकमत से परिपूर्ण फ़ैसला फ़रमाएगा और वह बहुत स्पष्ट फ़ैसला करने वाला और स्थाई इल्म रखने वाला है।

19-(الْعَلِیْمُ)अल्-अलीम बहुत जानने वाला। अत्यधिक और स्थायी इल्म रखने वाला।

अलीम आलम की अतिश्योक्ति है अर्थात अल्लाह तआला प्रकट तथा छुपी हुई और उन बातों को भी जानने वाला है जो अभी दिल में पैदा भी नहीं हुईं। इसका वर्णन क़ुरआन क़रीम की उपरोक्त आयत में हुआ है।

20-(الْقَابِضُ)अल्-क़ाबिज़: लोगों के रिज़्क़ को रोक लेने वाला।

21-(الْبَاسِطُ)अल्-बासित: लोगों के रिज़्क़ को बढ़ाने वाला। प्रचुरता देने वाला।

ये दोनों गुण एक दूसरे के मुक़ाबला में आते हैं। क़ब्ज़ तथा बस्त का अभिप्राय यह भी है कि एक इन्सान जो चीज़ अल्लाह तआला के लिए देता है मानो अल्लाह तआला ख़ुद उसे क़ब्ज़ करता है और फिर बस्त गुण के अधीन उसे बढ़ाता और फैलाता है। अत: इन हर दो गुणों के लिए क़ुरआन मजीद में आता है।

وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ (अल-बकर 246)

अर्थात और अल्लाह रिज़्क़ क़ब्ज़ भी कर लेता है और खोल भी देता है। और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

22-(الْخَافِضُ)अल्-ख़ाफ़िज़: नाफ़रमानों को पस्त करने वाला। और मरने के बाद उनका रफअ न करने वाला।

23-(الرَّافِعُ)अर्-राफ़े: आज्ञापालन करने वालों के दर्जात ऊंचा करने वाला। और मरने के बाद उनका रफ़अ करने वाला।

इन दोनों गुणों के ये अर्थ हैं कि ख़ुदा अपने आज्ञाकारियों को दुनिया में सानिध्य की दौलत प्रदान करता है और मरने के बाद उनका रफ़अ होता है। इसके विपरीत मुन्किरों और सरकशों के जिनका रफ़अ नहीं होता। क़ुरआन में हज़रत ईसा अलैहिस्सालम के बारे में आया है:

یٰعِیْسٰۤى اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَیَّ (आले इम्रान 56)

हे ईसा अवश्य मैं तुझे वफ़ात दूंगा और अपनी तरफ़ तेरा रफ़ा करूंगा।

24-(الْمُعِزُّ)अल्-मोइज़्ज़: इज़्ज़त देने वाला।

25-(الْمُذِلُّ)अल्-मुज़िल्ल: ज़िल्लत देने वाला।

अल्लाह तआला जिसको चाहता है अज़ीज़ करता है। दुनिया में ताक़त देकर और परलोक में ऊंचा स्थान देकर और जन्नत की नेअमतें देता है और जिसे चाहता है ज़लील करता है। ये दोनों गुणों क़ुरआन क़रीम में इस तरह वर्णन हुए हैं।

وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ (आले इम्रान 27)

और तू जिसे चाहता है इज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है।

26-(السَّمِیْعُ)अस्-समी :बहुत सुनने वाला। सबकी सुनने वाला। दुआ स्वीकार करने वाला।

जब हम यह कहते हैं कि अल्लाह तआला हमारी सुनता है तो इसके यह अर्थ नहीं कि वह कानों से सुनता है और जैसा कि हमारी आवाज़ से हवा में हरकत पैदा होती है और फिर हरकत कान के पर्दे से टकराती है

और हमें आवाज़ का ज्ञान हो जाता है। अल्लाह तआला सुनने के लिए हवा और कान का मुहताज नहीं। क़ुरआन क़रीम में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सालम की यह दुआ है:

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (अल-बकर 128)

हे हमारे रब हमारी तरफ़ से स्वीकार फ़र्मा। बे-शक तू बहुत सुनने वाला और स्थायी इल्म रखने वाला है।

27-(الْبَصِيْرُ)अल्-बसीर: बहुत देखने वाला। बीना। गहरी नज़र रखने वाला।

यह नाम भी कई बार सिफ़ते इलाही के तौर पर क़ुरआन करीम में प्रयोग हुआ है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ (आले इम्रान 16)

और अल्लाह तआला अपने बंदों पर गहरी नज़र रखने वाला है।

28-(الْحَكَمُ)अल्-हकम: सृष्टियों का हाकिम। सही सही फ़ैसला करने वाला।

क़ुरआन क़रीम की सूरह रअद में आता है:

وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ (अलर्रअद 42)

अर्थात और अल्लाह ही सही फ़ैसला करने वाला है। उसके फ़ैसला को टालने वाला कोई नहीं।

29-(الْعَدْلُ)अल्-'अद्ल :अदल करने वाला। फ़ैसला में ज़ुल्म न करने वाला।

30-(اللَّطِيْفُ)अल्-लतीफ़ नरमी और मेहरबानी करने वाला। सूक्ष्म बातों को देखने वाला।

31-(الْخَبِيْرُ) अल्-ख़बीर: जानने वाला। ज्ञानी। ख़बर रखने वाला।

यह ख़बर से इस्मे मुश्तक है। क़ुरआन मजीद में फ़रमाया:

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ (अल-अनाम:104)

अर्थात आँखें उस को नहीं पा सकतीं परन्तु हाँ वह सीमाबद्ध करने वाला है नज़रों को और वह बहुत सूक्ष्म देखने वाला और हमेशा ख़बर रखने वाला है।

32-(الْحَلِيْمُ)अल्-हलीम: धैर्य वाला। सहनशीलता वाला।

हलीम उसे कहते हैं जो क्रोध से पराजित न हो। और प्रतिशोध लेने में जल्दी न करे बल्कि बावजूद पूर्ण सामर्थ्य के क्षमा करने से काम ले। अल्लाह तआला इस लिए हलीम कहलाता है कि वह बन्दों को अज़ाब देने में जल्दी नहीं करता। क़ुरआन क़रीम में कई स्थानों पर इस विशेषता का वर्णन हुआ है। जैसा कि फ़रमाया:

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ (अल-बकर: 226)

और अल्लाह तआला अपने बंदों को बहुत प्रदान वाला और धैर्यशील है।

33-(الْعَظِيْمُ)अल्-अज़ीम: बुज़ुर्ग। बड़ी शान वाला।

क़ुरआन क़रीम की सूरह में इस विशेषता का यूं वर्णन मिलता है:

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ (अल-बकर 256)

उसकी बादशाहत ज़मीन और आकाशों पर फैली हुई है। और इन दोनों की सुरक्षा उसे थकाती नहीं। और वह बहुत बुलंद और बड़ी शान वाला है।

34-(الْغَفُوْرُ)अल्-ग़फ़ूर बहुत प्रदान करने वाला। ढांपने वाला। ग़ल्तियों को माफ करने वाला ।

ग़फ्फार और ग़फ़ूर दोनों अतिश्योक्ति की विभक्ति हैं। परन्तु ग़फ़ूर में अधिक अतिश्योक्ति है। अर्थात उसकी मग़फ़िरत उत्तम तथा सम्पूर्ण है।

35-(الشَّكُوْرُ)अश्-शकूर :क़द्र करने वाला

अल-ग़फ़ूर और अल-शकूर ये दोनों गुण एक साथ भी प्रयोग हुए हैं। जैसा कि सूरत फ़ातिर में फ़रमाया

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۖ (फ़ातिर 35)

और वे कहेंगे कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं जिस ने हमसे ग़म दूर किया। यक़ीनन हमारा रब बहुत ही प्रदान करने वाला और बहुत क़द्र करने वाला है।

36-(الْعَلِيُّ)**अल्-'अली :**बहुत ऊंची शाना वाला।

अल्लाह तआला चूँकि सबसे उच्च स्तर पर है इस लिए उस का नाम अल-अली है।

37-(الْكَبِيْرُ)अल्-कबीर सब से बुज़ुर्ग। समस्त बुज़ुर्गीयों का अधिकारी। बड़ी शान वाला।

अल-अली अल-कबीर ये दोनों गुण भी प्राय एक साथ आते हैं। और कभी अल-अली अल-अज़ीम भी आता है और कभी अल-अली अल-हकीम भी आता है। पहले का उदाहरण क़ुरआन मजीद में सूर: सबा में है जहां फ़रमाया कि

قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (सबा:24)

वे कहेंगे कि हमारे रब ने सच कहा था। और वह बहुत बुलंद शान वाला और बहुत बुज़ुर्गी वाला है।

38-(الْحَفِيْظُ)**अल्-हफ़ीज़ :** निगरान। सबकी सुरक्षा करने वाला। अत: क़ुरआन क़रीम में आता है।

اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ (हूद: 58)

अवश्य मेरा रब हर चीज़ पर ख़ूब मुहाफ़िज़ है।

39-(الْمُقِيْتُ)अल्-मुक़ीत निगरान। हर चीज़ पर आधिपत्य रखने वाला।

अल-मुकीत नाम क़ुव्वत से लिया गया है। क़ुव्वत देने के अर्थों में भी आता है और कभी तन्दरुस्त, गवाह और निगाह रखने के अर्थों में भी आता है। क़ुरआन मजीद में सूरह निसा में इस विशेषता का वर्णन इस प्रकार आया है: وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا (अन्निसा: 86)

और अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु पर बहुत मुक़द्दरत (सामर्थ्य) रखने वाला है।

40-(الْحَسِيْبُ)अल्-हसीब :हिसाब किताब लेने वाला। काफ़ी।

ये नाम दोनों अर्थों में प्रयोग होता है। एक अर्थ में किसी चीज़ का काफ़ी होना है। जैसे हसबी अश्शय अर्थात यह चीज़ मुझे काफ़ी हुई। कुछ आलिम इसके अर्थ मुहासिब (हिसाब लेने वाले) के भी लेते हैं। सूरत निसा में आया है :

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا (अन्निसा:87)

यक़ीनन अल्लाह तआला हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।

41-(الْجَلِيْلُ)अल्-जलील: प्रताप वाली शान वाला। बुज़ुर्ग। कहरी निशान प्रकट करने वाला।

42-(الْكَرِيْمُ)अल्-करीम :उपकार करने वाला।

करीम वह है कि सज़ा देने पर सामर्थ्य रखता हो तो माफ़ करे। कोई वादा करे तो वफ़ा करे। और दे तो उम्मीद से अधिक दे। कोई उसकी तरफ़ मांग ले जाए तो उसे नष्ट न होने दे। यह कभी मुकर्रम और जव्वाद के अर्थों में भी आता है। क़ुरआन क़रीम में आता है:

وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ (अलन्नमल: 41)

और जो नाशुक्री करता है तो मेरा रब यक़ीनन मुस्तग़नी और उपकार करने वाला है।

43-(الرَّقِيْبُ)**अर्-रक़ीब:** निगहबान । निगरान

क़ुरआन मजीद में सूरह निसा में इस सिफ़त का वर्णन आया है:

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا

(अन्निसा :2) अवश्य अल्लाह तआला तुम पर निगरान है।

44-(اَلْمُجِيْبُ)अल्-मुजीबः दुआ स्वीकार करने वाला। उत्तर देने वाला।

उत्तर देने और दुआ स्वीकार करने को इजाबत कहते हैं। अर्थात जो व्यक्ति अल्लाह तआला को सच्चे दिल से पुकारता है वह उसको उत्तर देता और उसकी दुआओं को स्वीकार करता है। वह दुआ की स्वीकार्यता चाहे किसी रंग में हो। जैसा कि क़ुरआन मजीद में फ़रमाया

إِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ (हूद:62)

अवश्य मेरा रब क़रीब है और वह दुआ स्वीकार करने वाला है।

45-(اَلْوَاسِعُ)अल्-वासे : वुसअत वाला।

यह गुण सअतुन से ली गई है। इसके अर्थ फ़राख़ी, फ़राख़ करने और घेर लेने के होते हैं। क़ुरआन क़रीम में इसका प्रयोग वुसअत हिक्मत, वुसअते मग़फ़िरत, वुसअते इलम और वुसअते रहमत के तौर पर आता है।

وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا (अन्नसा:131)

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ (अन्नजम- 33)

إِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (अलबकर: -116)

वुस्अते रहमत के बारे में फरमाया कि

فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ (अल-अनाम148)

46-(اَلْحَكِيْمُ)अल्-हकीमः बहुत हिक्मत वाला। वस्तुओं की हक़ीकत को जानने वाला।

यह नाम हिक्मत से लिया गया है और किसी कर्म पर उत्तम परिणाम निकलना हिकमत कहलाता है। हकीम वह है जो हक़ायक़ इश्याय का जानने वाला हो और सृष्टियों और उस की बनाई गई बारीकियों को ख़ूब जानता हो। अत: क़ुरआन क़रीम में फ़रिश्तों का कथन है कि

قَالُوْا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (अल-बकर: 33)

उन्होंने कहा तेरी हस्ती हर किस्म के दोष से पवित्र है। हम को कोई ज्ञान नहीं केवल उस ज्ञान के जो तू ने हमको दिया। नि:सन्देह तू ही है जो स्थायी ज्ञान रखने वाला और बहुत हिक्मत वाला है।

47-(اَلْوَدُوْدُ)अल्-वदूदः बहुत मुहब्बत करने वाला। नेक बंदों को दोस्त रखने वाला।

अल-वदूद अतिश्योक्ति का सीग़ा है जो फ़ऊलुन के वज़न पर है। विदाद और मुवद्दद एक ही अर्थों में आते हैं। क़ुरआन क़रीम में इस सिफ़त का प्रादुर्भाव सूरह बुरूज में इस तरह मिलता है:

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ (अलबुरूज:15) और वह (ख़ुदा) बहुत प्रदान करने वाला और बहुत मुहब्बत करने वाला है।

48-(اَلْمَجِيْدُ)अल्-मजीद : बुज़ुर्ग। शरीफ़। सम्मान तथा बड़ाई वाला।

मजीद वह है कि जिसकी हस्ती शरीफ़, कर्म सुन्दर और देने का गुण बहुत अधिक हो। यह सिफ़त इन अर्थों की दृष्टि से जमील(सुन्दर) , वहाब और करीम की जामेअ है। क़ुरआन क़रीम में हज़रत इब्राहीम के मेहमानों का कथन वर्णन है:

قَالُوْا أَتَعْجَبِيْنَ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (हूद 74)

उन्होंने कहा किया तू अल्लाह के फ़ैसला पर आश्चर्य करता है। तुम पर अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों हे अहले बैत! अवश्य वह बहुत प्रशंसा वाला और बहुत बुज़ुर्गी वाला है।

49-(اَلْبَاعِثُ)अल्-बाइसः दोबारा ज़िन्दगी देने वाला। संसार पर रुहानी मौत छाने के समय ज़िन्दगी की रूह फूँकने वाला। रसूल भेजने वाला। सोने वालों को जगाने वाला।

अत: क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا (अल-जुमा 3)

वही है जिसने उम्मी लोगों में इन्ही में से एक महान रसूल मबऊस किया।

50-(اَلشَّهِيْدُ)अश्-शहीदः हाज़िर तथा निगहबान। गवाह और निगरान।

यह नाम शुहूद या शहादत से बना है। शुहूद के अर्थ हाज़िर होने के हैं और शहादत के अर्थ गवाह के हैं। अत: शहीद अल्लाह तआला की वह विशेषता है जो प्रकट करती है कि वह सृष्टियों की हर अवस्था से परिचित और ख़बर रखने वाला है। क़ुरआन मजीद में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कथन है:

وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ

(अलमायद-118) और मैं उन पर निगरान था जब तक मैं उनमें रहा। अत: जब तू ने मुझे वफ़ात दे दी,अत: तू ही उन पर निगरान रहा और तू ही हर चीज़ पर गवाह है।

51-(اَلْحَقُّ)अल्-हक़्क़: सच्चाई और सदाक़त का स्रोत। अपनी हस्ती में प्रमाणित वजूद जिसमें कोई फ़ना और परिवर्तन नहीं हो सकता। हर कमाल का स्थायी योग्य। क़ुरआन करीम में इस सिफ़त का वर्णन ऐसे आया है:

ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللّٰهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ (अल:अनाम: 63)

फिर वे लौटाए जाते हैं अल्लाह की तरफ़ जो उनका वास्तविक मौला है।

52-(اَلْوَكِيْلُ)अल्-वकीलः काम बनाने वाला। किफ़ायत करने वाला।

वकील उसे कहते हैं जिसके सपुर्द हम अपना समस्त काम कर दें और समस्त सामर्थ्य उसके ही हाथ में हो। चूँकि ख़ुदा तआला ने केवल अपने फ़ज़ल से अपने असहाय बंदों के समस्त कामों को पूरा करना अपने हाथ में रखा है इस लिए वह वकील और नेअमुल वकील है। अत: सूरह आले इमरान में फ़रमाया

وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ (आले इमरान 174)

और उन्होंने कहा हमें अल्लाह काफ़ी है और क्या ही अच्छा काम बनाने वाला है।

53-(اَلْقَوِيُّ)अल्-क़वी: क़ुदरत वाला। सज़बूत। सामर्थ्य वाला

हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमहुल्लाह कहते हैं कि क़ुव्वत इस तरफ इशारा करती है सम्पूर्ण क़ुदरत पर और सुदृढ़ता पर। ख़ुदा तआला क़वी है इसलिए कि सम्पूर्ण क़ुदरत रखता है। मतीन है इसलिए कि सम्पूर्ण क़ुव्वत वाला है। क़ुरआन क़रीम में इस सिफ़त के बारे में आया है:

اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ (अश्शूरा:20)

अल्लाह अपने बंदों के हक़ में नर्मी का सुलूक करने वाला है। वह जिसे चाहता है रिज़्क़ प्रदान करता है और वह बहुत ताक़तवर और सम्पूर्ण

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

ग़लबा वाला है।

54-(اَلْمَتِیْنُ)अल्-मतीन: मज़बूत गुणों वाला। क़ुदरत वाला। सुदृढ़।

इस इलाही विशेषता का वर्णन क़ुरआन करीम में इन शब्दों में मिलता है।

إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ (अज़ज़ारियात 59)

अर्थात निसन्देह अल्लाह ही है जो बहुत रिज़्क़ देने वाला, क़ुव्वत वाला और मज़बूत गुणों वाला है।

55-(اَلْوَلِیُّ)अल्-वली: मुहिब। मददगार। निगरान। क़रीब।

अल्लाह तआला मुत्तक़ी और सच्चों का वली है और उन्हें मदद देता है। वली मुतवल्ली को भी कहते हैं। और इस में क्या शंका है कि अल्लाह तआला नेक लोगों का मुतवल्ली और सरपरस्त है। वली क़रीब के अर्थों में भी आया है अर्थात ख़ुदा तआला नेकों के क़रीब है।

56-(اَلْحَمِیْدُ)अल्-हमीद: हर प्रकार की प्रशंसा के योग्य।

हमीद विशेषता का वर्णन क़ुरआन क़रीम में विभिन्न स्थानों पर हुआ है। सूरह शूरा में वली और हमीद दोनों विशेषताओं का वर्णन मिलता है।

وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ (अलशशूरा 29)

और (ख़ुदा तआला) अपनी रहमत को फैला देता है। और वही है जो काम बनाने वाला और प्रशंसा के योग्य है।

57-(اَلْمُحْصِی)अल्-मुहसी: हर चीज़ को अपने इलम में रखने वाला। गिनने वाला।

चूँकि अल्लाह तआला चीज़ों की हक़ीकतों को जानता है। सारे संसार के तत्वों पर भी उसका इल्म छाया हुआ है। इसलिए ख़ुदा तआला मुहसी कहलाता है। अत: क़ुरआन क़रीम में आया है।

وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا (अल्जिन्न 29)

और वह (ख़ुदा) उसको घेरा किए हुए है जो उनके पास है। और उसने हर चीज़ की गिनती की दृष्टि से गिन रखा है।

58-(اَلْمُعِیْدُ)अल्-मुब्दी: पहली बार पैदा करने वाला। आरम्भ करने वाला।

59-(اَلْمُعِیْدُ)अल्-मु'ईद: दोबारा पैदा करने वाला। दुहराने वाला।

उपरोक्त दोनों गुणों का वर्णन क़ुरआन क़रीम की सूरह में एक साथ मिलता है। إِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ (अल्बरूज 14) निसन्देह वह(ख़ुदा) आरम्भ भी करता है और दुहराता भी है।

60-(اَلْمُحْیِی)अल्-मुहयी : सृष्टि को ज़िन्दगी प्रदान वाला।

सूर अर्रूम में फ़रमाया:

إِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتٰى ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (अर्रूम 51)

निसन्देह वही है जो मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और वह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे स्थायी क़ुदरत रखता है।

61-(اَلْمُمِیْتُ)अल्-मुमीत: मारने वाला। मौत देने वाला

इसका वर्णन क़ुरआन क़रीम में इस तरह आता है।

وَاللّٰهُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ (आले इमरान 157)

और अल्लाह ही है जो ज़िन्दा भी करता है और मारता भी है

62-(اَلْحَیُّ)अल्-हय्य: ख़ुद ज़िन्दा और दूसरों की ज़िन्दगी का कारण और आधार। चिरस्थायी जीवित।

63-(اَلْقَیُّوْمُ)अल्-क़य्यूम: अपनी ज़ात में क़ायम। ख़ुद क़ायम और दूसरों के क़ियाम का वास्तविक माध्यम।

क़य्यूम अतिशयोक्ति है कय्यम का। कय्यम कहते हैं किसी बात पर बाक़ायदगी से जमे रहना और कभी न टलना।

सूरत आले इम्रान (आयतल कुर्सी) के आरम्भ में ही ऊपर वर्णन किए गए दोनों गुणों का वर्णन किया है। अत: फ़रमाया

اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ (आले इम्रान 3)

अल्लाह! उसके अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं। हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और अपनी ज़ात में क़ायम है।

64-(اَلْوَاجِدُ)अल्-वाजिद : बे नयाज़ और ग़नी हस्ती । मक़सद में कामयाब होने और करने वाला।

65-(اَلْمَاجِدُ)अल्-माजिद: बुज़ुर्गी वाला

66-(اَلْوَاحِدُ) अल्-वाहिद: तन्हा। अकेला। एकाकी।

वाहिद से अभिप्राय यह है कि इसके भाग और हिस्से न हो सकें। क़ुरआन क़रीम में इसका वर्णन इस तरह है।

وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (साद 66)

तू कह दे मैं तो केवल एक डराने वाला हूँ और कोई उपास्य नहीं परन्तु अल्लाह के अतिरिक्त जो वाहिद (और) सामर्थ्य वाला है।

67-(اَلْاَحَدُ) अल-अहद :एक। उस जैसा कोई और नहीं।

सूरत इख़लास में अल्लाह तआला अपनी इस सिफ़त का वर्णन फ़रमाता है। قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (अल-इख़लास 2)

तू कह दे कि अल्लाह एक है। यहां यह बात भी स्पष्ट करना ज़रूरी है कि अहद और वाहिद में वह फ़र्क़ है जो हमारी ज़बान में लफ़्ज़ एक और अकेला में है।

68-(اَلصَّمَدُ)अस्-सम़द: जिसे कोई ज़रूरत न हो। मुस्तग़नी। बेनयाज़। इन्सान के उद्देश्यों का मूल लौटने का स्थान।

समद के वास्तविक अर्थ क़सद के हैं। चूँकि इन्सान अपने समस्त लक्ष्यों तथा उद्देशयों में अल्लाह तआला ही का मुहताज है इसलिए अल्लाह तआला की यह सिफ़त समद है। क़ुरआन क़रीम की सूरत इख़लास में इस सिफ़त को वर्णन फ़रमाया

اَللّٰهُ الصَّمَدُ (अल-इख़लास 3)

अल्लाह बेनयाज़ है।

69-(اَلْقَادِرُ)अल्-क़ादिर: क़ुदरत वाला।

क़ुरआन क़रीम की सूरत इनाम में इस सिफ़त को इस रंग में वर्णन फ़रमाया।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰى أَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ

(अल-अनाम 66) तू कह दे कि वह क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सेक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

से अज़ाब भेजे या तुम्हारे क़दमों के नीचे से या तुम्हें शंकाओं में डाल कर के गिरोहों में बांट दे और तुम में से कुछ को कुछ दूसरों की तरफ़ से अज़ाब का मज़ा चखाए। देख किस तरह हम निशानों को फेर-फेर कर वर्णन करते हैं ताकि वे किसी तरह समझ जाएं।

70-(الْمُقْتَدِرُ)अल्-मुक़्तदिर: सामर्थ्य वाला। साहिब इक़्तिदार।

मुक़तदिर और क़ादिर के अर्थ तो एक ही हैं हां मुक़तदिर में अतिशयोक्ति पाया जाई है। क़ुरआन क़रीम में फ़रमाया।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ (अल-क़मर 56-55)

अवश्य मुत्तक़ी जन्नतों में और सुविधा की हालत में होंगे। सच्चाई की मस्नद पर, एक सामर्थ्य वाले बादशाह के समक्ष।

71-(الْمُقَدِّمُ)अल्-मुक़द्दिम: आगे बढ़ाने वाला। (अपने दोस्तों को इज़्ज़त की तरफ़ बढ़ाने वाला।

72-(الْمُؤَخِّرُ) अल्-मुअख़्ख़िर: पीछे हटाने वाला। (दुश्मनों को अपने रोब से पीछे हटाने वाला।

73-(الْاَوَّلُ)अल्-अव्वल : पहला

ख़ुदा तआला के लिए आता है هوالاوّل ليس قبله شَيْءٌ अर्थात सबसे पहला और उस से पहले कोई चीज़ नहीं थी। सृष्टियों में से कोई ऐसी चीज़ नहीं जो ख़ुदा से पहले हो।

74-(الْآخِرُ)अल्-आख़िर।

ख़ुदा तआला के लिए यह भी आता है। هوالآخر ليس بعده شَيْءٌ अर्थात प्रत्येक चीज़ फ़ना और अवनति के बाद उसकी पवित्र ज़ात है।

75-(الظَّاهِرُ) अलज़्ज़हिरु: प्रकट। स्पष्ट

ख़ुदा तआला के लिए यह भी आता है। هوالظَّاهِرُ ليس فوقه شَيْءٌ अर्थात हर चीज़ से ऊपर उसके ग़लबा का प्रकटन है। बस वही है। उस से ऊपर और कोई चीज़ दिखाई नहीं देती।

76-(الْبَاطِنُ)अल बातिन। छुपा हुआ। पोशीदा

ख़ुदा तआला के लिए यह शब्द भी आते हैं। هوالباطن ليس دونه شَيْءٌ वह छुपा हुआ राज़ है इसके अतिरिक्त और कोई चीज़ नहीं जो ऐसे भेद लिए हो। यह चारों गुण सूरह हदीद में मिलते हैं। फ़रमाया

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

(अलहदीद4) वही अव्वल और वही आख़िर, वही प्रकट और वही छुपा हुआ है और वह हर चीज़ का स्थायी ज्ञान रखता है।

77-(الْوَالِي)अल्वाली: समस्त कामों का आधारा और सब का मालिक। परिवर्तन करने वाला। काम बनाने वाला

क़ुरआन मजीद में यह विशेषता इस तरह वर्णन हुई है।

وَاِذَا اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ (अर्राद12)

और जब अल्लाह किसी क़ौम के बुरे अंजाम का फ़ैसला कर ले तो किसी अवस्था में उसका टालना संभव नहीं और उसके अतिरिक्त उन के लिए कोई काम बनाने वाला नहीं।

78-(الْمُتَعَالِي)अल्मुताली: बुलन्द तथा उच्च। ऊंची शान वाला।

क़ुरआन क़रीम में ऊपर वर्णन की गई विशेषता का वर्णन सूरत अर्राद में मिलता है:

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ (अर्राद 10)

वह ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला है। बहुत बड़ा (और) बहुत ऊंची शान वाला है।

79-(الْبَرُّ)अल्बर्रु : अपने लुतफ़ से बंदों के साथ नेक सुलूक करने वाला। नेकों की क़दर करने वाला।

यह विशेषता सूरत तूर में रहीम विशेषता के साथ मिल कर इस तरह आई है।

اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ۖ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ (अत्तूर 29)

अवश्य हम पहले भी इसी को पुकारा करते थे। बे-शक वही बहुत नेक सुलूक करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

80-(التَّوَّابُ) अत्तव्वाबु :बंदों के गुनाहों की तौबा स्वीकार करने वाला। रहमत के साथ लौटने वाला।

अत्तवाब अतिश्योक्ति की विभक्ति है और उसकी धातु तौबा है । तौबा के मूल अर्थ लौटना हैं। और किसी बुराई से तौबा करने का अर्थ और अभिप्राय यही होता है कि उस बुराई को छोड़कर उसके मुक़ाबला में नेकी को धारण किया जाए। जैसे चोर की तौबा यह है कि वह दयानतदारी धारण करे और वैश्या की तौबा यह है कि वह पवित्रता धारण करे। अत: तौबा की बात जब बंदा की तरफ़ हो तो इस से अभिप्राय है गुनाह से हट जाना और नेकी धारण करना और जब ख़ुदा तआला की तरफ़ हो जाए हो तो इस से अभिप्राय है कि इस तौबा को स्वीकार करना और रहमत के साथ लौटना। यह विशेषता क़ुरआन क़रीम में कई स्थानों पर आई है। उन में से एक सूरत बक़र: है जिस में फ़रमाया कि:

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ (अलबकर:161)

केवल उन लोगों के जिन्होंने तौबा की और सुधार किया और (अल्लाह के निशानों) को खोल खोल कर वर्णन किया। अत: यही वे लोग हैं जिन पर मैं तौबा स्वीकार करते हुए झुकूंगा। और मैं बहुत तौबा स्वीकार करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला हूँ।

81-(الْمُنْتَقِمُ)अल्मुनतक़िम: अवज्ञाकारियों से बदला लेने वाला। ना-फ़रमानी की सज़ा देने वाला।

क़ुरआन क़रीम में वर्णन है।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ۚ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ (अस्सजद: 23)

और कौन इस से अधिक ज़ालिम हो सकता है जो अपने रब की आयतों के द्वारा अच्छी तरह नसीहत किया जाए फिर भी उन से मुँह मोड़ ले? अवश्य हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं।

82-(الْعَفُوُّ)अल्-'अफ़ूव्व: गुनाहों को क्षमा करने वाला। गुनाहों को मिटाने वाला। माफ़ करने वाला।

अफ़व हमेशा ग़फ़र से बढ़ कर है। और यह इस लिए कि ग़फ़र में गुनाह को छुपाना और ढाँकना अभीष्ट होता है। अफ़व में गुनाहों को भुला दिया जाता है। क़ुरआन क़रीम में सूरत निसा में इस विशेषता का वर्णन मिलता है।

وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا (अन्निसा:100)

और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत प्रदान करने वाला है।

83-(الرَّءُوْفُ)अर्-रऊफ़: नरम व्यवहार करने वाला। बहुत दया करने वाला।

इसकी धातु राफत है जिस के अर्थों में रहमत की प्रचुरता भी है। यही वजह है कि क़ुरआन क़रीम में प्राय स्थान पर यह विशेषता रहीम विशेषता के साथ आई है। अत: फ़रमाया।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

(नूर:21) और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत तुम पर न होती और यह कि अल्लाह अवश्य बहुत दया करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है (तो तुम में निर्लज्जता फैल जाती)

84-(مَالِكُ) मालिक-उल्-मुल्क: सल्तनत का मालिक। मलिक का मालिक। बादशाहत का मालिक।

क़ुरआन क़रीम की सूरत आले इमरान में आया है।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ (आले इम्रान 27)

तू कह दे हे मेरे अल्लाह सल्तनत के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत प्रदान करता है और जिस से चाहे सल्तनत छीन लेता है।

85-(ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ) जुल्-जलाले वल् इकराम: बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाला। प्रताप वाला और सम्मान वाला।

सूरह अर्रहमान में इसका वर्णन आया है

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ (अर्रहमान 79)

तेरे प्रताप वाले और सम्मान वाले रब का नाम ही बरकत वाला साबित हुआ।

86-(الْمُقْسِطُ)अल्-मुक़सित: न्याय करने वाला। आदिल। न्यायकर्ता।

मुक़सित के अर्थ ज़ुल्म तथा अत्याचार को दूर करने वाले के भी हैं। क़ुरआन क़रीम में सूरह आले इमरान में ऊपर वर्णन की गई विशेषता का वर्णन है,फ़रमाया।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (आले इमरान19)

अल्लाह इन्साफ़ पर क़ायम रहते हुए गवाही देता है कि उसके अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं और फ़रिश्ते भी और ज्ञान रखने वाले भी (यही गवाही देते हैं कोई उपास्य नहीं परन्तु वही सम्पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) हिक्मत वाला है।

87-(الْجَامِعُ)अल्-जामेए समस्त सृष्टियों को जमा करने वाला। और समस्त कमालों का संग्रहीता। एक स्थान पर करने वाला।

सूरत आले इमरान में ही ऊपर वर्णन की गई विशेषता के बारे में है

رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ (अन्निसा 10)

हे हमारे रब तू अवश्य लोगों को जमा करने वाला है उस दिन के लिए जिस में कोई शंका नहीं।

88-(الْغَنِيُّ)अल्-ग़नी: हर प्रकार की ज़रूरतों का मुतकफ़्फ़िल और बेपरवाह और बे-नयाज़।

ग़नी निकला है ग़िना से और ग़िना कहते हैं बेनयाज़ होने को अर्थात ख़ुदा तआला सब से बेनयाज़ है। ग़नी जो मालदार के अर्थों में प्रसिद्ध है वह भी बेनियाज़ी की एक किस्म है। सूरह हज में इस विशेषता का इस तरह वर्णन हुआ है।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (अल-हज 65)

उसी का है जो आकाशों में है और जो धरती में है और अवश्य अल्लाह ही है जो बेनयाज़ है (और) प्रशंसा योग्य है।

89-(الْمُغْنِي)अल्-मुग़नी: मालदार करने वाला। बेनयाज़ करने वाला। बेपर्वा करने वाला।

सूरत नूर में निकाह की तौफ़ीक़ न रखने वाले बन्दों के बारे में आता है।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ (अन्नूर 34)

और वे लोग जो निकाह की तौफ़ीक़ नहीं पाते उन्हें चाहिए कि अपने आपको बचाए रखें यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार बना दे।

90-(الْمَانِعُ)अल्-मानेए: रोकने वाला। अपने बंदों से तकलीफ़ें दूर करने वाला।

91-(الضَّارَّ)अज़्ज़ारो: कर्मों के बुरे नतीजे देने वाला। हानि का मालिक।

92-(النَّافِعُ)अन्-नाफ़े लाभ तथा भलाई का देने करने वाला।

93-(النُّوْرُ)अन्-नूर: रोशनी का स्रोत। रोशन करने वाला। साक्षात नूर। नूर ही नूर

सूरत नूर में बहुत सूक्ष्म रूप से नूर की विशेषता का वर्णन मिलता है।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۙ (अन्नूर 36)

अल्लाह आकाशों और धरती का नूर है। उस के नूर का उदाहरण एक ताक़ जैसा है जिसमें एक चिराग़ हो। वह चिराग़ शीशे के शम्अ-दान में हो। वह शीशा ऐसा हो गोया एक चमकता हुआ रोशन सितारा है। वह (चिराग़) ज़ैतून के ऐसे मुबारक दरख़्त से रोशन किया गया हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी। इस (दरख़्त) का तेल ऐसा है कि क़रीब है कि वह अपने आप भड़क कर रोशन हो जाए चाहे उसे आग का शोला न भी छुवा हो। वह साक्षात नूर है। अल्लाह अपने नूर की तरफ़ जिसे चाहता है हिदायत देता है और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण वर्णन करता है और अल्लाह हर चीज़ का स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

94-(الْهَادِي)अल्-हादी : हिदायत देने वाला। हिदायत करने वाला। सफल करने वाला।

क़ुरआन क़रीम में फ़रमाया।

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (अन्नूर: 47)

और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की तरफ हिदायत देता है।

95-(الْبَدِيْعُ)अल्-बदी: नई से नई ईजाद करने वाला। सृष्टि का आरम्भ करने वाला।

यह विशेषता सूरत बक़रा में वर्णित है। अल्लाह तआला फ़रमाता है

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ (अलबकर118)

वह आकाशों और धरती की सृष्टि का आरम्भ करने वाला है। और जब वह किसी बात का फ़ैसला कर लेता है तो वह उसे केवल "हो जा "कहता है तो वह होने लगता है और हो कर रहता है।

96-(الْبَاقِي)अल्-बाक़ी: बाक़ी रहने वाला। अनश्वर।

सूर रहमान में फ़रमाया:

وَيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ (अर्रहमान 28)

परन्तु तेरे रब का सम्मान हमेशा बाक़ी रहेगा जो प्रताप वाला तथा सम्मान वाला है।

97-(الْوَارِثُ)अल्-वारिस: असल मालिक। वारिस। मौजूदात की फ़ना के बाद बाक़ी रहने वाला।

सूर अल्हिज्र में फ़रमाया।

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ (अल-हिज्र 24)

और यक़ीनन हम ही हैं जो ज़िन्दा भी करते हैं और मारते भी हैं और हम ही हैं जो (हर) चीज़ के वारिस होंगे

98-(الرَّشِيْدُ)अर्-रशीद: हिदायत देने वाला। राहनुमा। कमाल सिफत वाला।

रशीद का मुश्तक़ रुशद है। क़ुरआन क़रीम में हज़रत इब्राहीम के बारे में फ़रमाया। وَلَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ (अल-अंबिया 52) और अवश्य हमने इब्राहीम को पहले ही से उसकी हिदायत प्रदान की थी और हम उसके बारे में बहुत ज्ञान रखते थे।

99-(الصَّبُوْرُ)अस्-सबूर: बड़ा धैर्य करने वाला। सज़ा देने में धीमा।

असल में सब्र के अर्थ सहनशीलता और बर्दाश्त के हैं। चूँकि अल्लाह तआला अपने बंदों की शोख़ियों और ना-फ़रमानियों को

शेष पृष्ठ 18 पर

अल्लाह तआला की हस्ती की बौधिक दलीलें

(मुहम्मद शरीफ़ कौसर ,मुरब्बी सिल्सिला, उस्ताद जामिया अहमदिया क़ादियान)

वर्तमान समय में दुनिया की बहुत बड़ी संख्या धर्म से विमुख और नास्तिकता की तरफ़ झुकती चली जा रही है। उनका विचार है कि यह जगत अपने आप वजूद में आ गया, और इसका न तो कोई स्रष्टा और न यह किसी की सृष्टि है। वे अल्लाह की कल्पना और आस्था का पूर्ण रूप से इन्कार कर देते हैं। और इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उनके प्रश्नों और ज़हनी शंकाओं का तसल्ली देने वाला जवाब देने वाला उन्हें कोई नहीं मिलता। और यह भी एक वास्तविकता है कि यदि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भव न होता, तो शायद ही किसी के दिल में अल्लाह तआला का वास्तविक ईमान बाक़ी रहता। यह तो अल्लाह तआला का असीमित उपकार है कि उस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़ुरआन मजीद के वे मआरिफ़ सिखाए, जिसने नास्तिकों के हर सवाल का तर्क पूर्ण जवाब दिया। हर शंका को दूर करने की कोशिश की। और यह भी अल्लाह तआला का उपकार है कि आपकी पुस्तकों के अध्ययन से बहुत सी नेक रूहें नास्तिकता के दलदल से निकल गईं और उन्हें हक़ीक़ी ख़ुदा की मार्फ़त प्राप्त हो गई।

हज़रत मियां मुहम्मद दीन पटवारी रज़ि अल्लाहो अन्हो अपनी घटना वर्णन करते हैं कि

"आर्या, ब्रहमो, नास्तिक लैक्चरों के बुरे प्रभाव ने मुझे और मुझ जैसे अक्सरों को हलाक कर दिया था। और उन प्रभावों के अधीन व्यर्थ की ज़िन्दगी बसर कर रहा था कि बराहीन अहमदिया पढ़ते पढ़ते जब मैं हस्ती बारी तआला के सबूत को पढ़ता हुआ पृष्ठ 90 के हाशिया नम्बर 1 और सफ़ा 149 के हाशिया नम्बर 11 पर पहुंचा तो अचानक मेरी नास्तिकता दूर हो गई और मेरी आँख ऐसे खुली जिस तरह सोया हुआ या मरा हुआ ज़िन्दा हो जाता है।" (अख़बार अलहकम 14 अक्तूबर 1938 ई)

यह है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों की बरकत जिस से रुहानी और धार्मिक तौर पर मुर्दा पुन: जीवित हो जाते हैं। यह है वह विष दूर करने की दवा जो रुहानी तौर पर बे-हिस जिस्म में ज़िन्दगी के निशान प्रकट कर देती है। इसी कारण से जमाअत के लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का रुहानी ख़ज़ायन का ख़ुद भी अध्ययन करना चाहिए और "नास्तिकता" की बीमारी में पड़े लोगों की शिफ़ा के लिए ये किताबें उनको भी अध्ययन के लिए देनी चाहिऐं।

इस संक्षिप्त वर्णन के बाद विनीत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ाए अहमदियत की शिक्षाओं को प्रस्तुत करने की कोशिश करेगा जिनमें अल्लाह तआला के वजूद के प्रमाण के लिए बौधिक तर्क प्रस्तुत किए गए हैं। और ये तर्के ऐसे हैं कि यदि कोई नास्तिक नेक नीयत से इन पर विचार करे तो वह ज़रूर अल्लाह के वजूद का मानने वाला हो जाएगा।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिहिल अज़ीज़ दुनिया में बढ़ती हुई नास्तिकता वाली सोच के बारे में फ़रमाते हैं

"आज मसीहियत तो अपनी कमज़ोरी की तरफ़ बढ़ रही है, यद्यपि एक मुक़ाबला उनके साथ भी है, परन्तु इसके साथ ही जो उभरने वाला ख़तरा है और उभरता चला जा रहा है वह है नास्तिकता। दूसरे धर्मों ने ख़ुदा तआला से सम्बन्ध न देखकर धर्म से दूरी धारण करनी शुरू कर दी है, प्राय उनमें से धर्म से विमुख हो गए हैं, बल्कि नास्तिक हो गए हैं। आप लोगों ने आज नास्तिकता का ख़ात्मा भी करना है। तौहीद की स्थापना करनी है।"

(तक़रीब तक़सीम अस्नाद जामिया अहमदिया यू .के 25 मार्च 2018)

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला ने ऊपर वर्णित उद्धरण में फ़रमाया "आप लोगों ने आज नास्तिकता का ख़ात्मा भी करना है। तौहीद की स्थापना करनी है।" यह तो एक प्रमाणित वास्तविकता है कि नास्तिक धार्मिक किताबों के तर्कों को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं। अत: उन्हें अक़्ली तर्कों से ही मानने वाला होता है। बौद्धिक तर्कों में से सबसे पहले फ़ितरी तर्क के द्वारा उन को समझाया जा सकता है।

फ़ितरी दलील

एक नास्तिक को यह बताना और उसकी अन्तरात्मा को बेदार करना चाहिए कि अल्लाह तआला के वजूद के बारे में सब से प्रमुख तर्कों में से एक इन्सान की फ़ितरत का तर्क है। इन्सान की फ़ितरत ख़ुद यह सवाल पैदा कर रही होती है कि क्या सारे ब्रह्माण्ड का कोई स्रष्टा एवं मालिक है या नहीं? और हमें किस ने और क्यों पैदा किया? इस फ़ितरत की आवाज़ के बाद बहुत से लोगों में और अधिक तहक़ीक़ की इच्छा पैदा होती है। और अपने दिल से ऐसा इन्सान यह सवाल करता है कि क्या मेरा वजूद केवल एक संयोग का नतीजा है या कि मुझे किसी उच्च हस्ती ने पैदा किया है, तो उसे इस सवाल के जवाब में बिना इसके कि वह अक्ली तर्क के रास्ता पर पड़ कर विचार के नतीजा में कोई राय स्थापित करे वह यक़ीनी तौर पर इस नतीजा पर पहुंच जाएगा कि मेरा कोई स्रष्टा है जिसने मुझे, और इस पूरी कायनात को पैदा किया है। कई लोग अपनी फ़ितरत की आवाज़ को दबा कर उसे नज़र अंदाज़ करते हैं और नास्तिकता के रास्ता पर चल पड़ते हैं। अत: इन्सानी फ़ितरत इन्सानी वजूद, उसकी पैदायश, हस्ती बारी तआला का एक ज़बरदस्त सबूत है जिस से कोई अक़लमंद इन्सान इन्कार नहीं कर सकता और यह हम पर अल्लाह तआला का असीमित उपकार है कि उस ने हमारी हिदायत के लिए हमारी फ़ितरत के अंदर ही ईमान का बीज बो दिया है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

اَوَلَمۡ یَرَ الۡاِنۡسَانُ اَنَّا خَلَقۡنٰہُ مِنۡ نُّطۡفَۃٍ فَاِذَا ہُوَ خَصِیۡمٌ مُّبِیۡنٌ ۝ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِیَ خَلۡقَہٗ (यासीन 78-79)

क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया तो फिर यह क्या इन्क़िलाब हुआ कि वह एक खुला खुला झगड़ालू बन गया। और हम पर बातें बनाने लगा। और अपनी सृष्टि को भूल गया।

इस आयत की रोशनी में एक नास्तिक को यह समझाना चाहिए कि

(क) इन्सान को अल्लाह तआला ने वीर्य के द्वारा पैदा किया। जब वह माता के गर्भ से जन्म लेता है तो उसे सांस लेने के लिए आक्सीजन की ज़रूरत होती है, क्या यह आक्सीजन अपने आप बन गई। इस जगह यदि कोई ज़हरीली गैस होती तो क्या वो सांस ले सकता था? जन्म के बाद उसके नाज़ुक मादा को नाज़ुक ख़ुराक की ज़रूरत थी, इसके लिए माँ के दूध का प्रबन्ध किया। यदि उसे कहा जाता दूध नहीं मिलेगा तो रोटी या घास खाने वाले जानवरों की तरह घास खा, क्या वह ज़िन्दा रह सकता था? हरगिज़ नहीं

अत: सवाल पैदा होता है कि क्या यह प्रणाली यह क्रम और आवश्यकता अनुसार ज़िन्दगी की बक़ा और उस की सुदृढ़ता के लिए चीज़ें अपने आप उपलब्ध हो गईं? हरगिज़ नहीं बल्कि इस रब्बुल आलमीन की सिफ़त रबूबियत के द्वारा यह ज़िन्दगी क़ायम तथा स्थापित है।

एक नास्तिक, और अल्लाह तआला पर कामिल ईमान न रखने वाले को ऊपर वर्णन की गई हक़ीकत पर गहराई, और चिन्तन से विचार करना चाहिए यदि वह ऐसा करेगा तो अवश्य उसे अल्लाह तआला की समझ और इसकी मार्फ़त प्राप्त हो जाएगी।

ब्रह्माण्ड की सृष्टि के बौद्धिक तर्क

क़ुरआन क़रीम की कई आयतें हैं यदि एक नास्तिक उन पर सेहत नीयत के साथ ग़ौर करे तो उसे अल्लाह तआला की हस्ती की समझ प्राप्त कर सकता है, उसे चाहिए कि कायनात की तख़लीक़ पर ग़ौर करे। क़ुरआन क़रीम में अल्लाह तआला फरमाता है:

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِی اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (इब्राहीम 11)

अर्थात उनके रसूलों ने कहा कि क्या अल्लाह के बारे में शक है जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है। इस आयत में अल्लाह तआला इन्कार करने वाले को फ़र्मा रहा है कि क्या तुम्हें शक है कि अल्लाह ने आकाश और धरती को पैदा किया है। अर्थात आकाश तथा धरती तुम्हारे सामने मौजूद हैं, और ये अल्लाह तआला के हुक्म से अपने अपने कर्तव्य निरन्तर अदा करते चले जा रहे हैं। क्या उनकी तख़लीक़ और लाखों सालों से उनका अपने कर्तव्य जो अल्लाह तआला ने उनके सपुर्द किए हैं, उन्हें उत्तम रूप से अदा करते चले जाना, उसकी हक़ीक़त को प्रतिबिम्बित नहीं करती कि उसे कोई चला रहा है। एक घटना के द्वारा इस विषय को और अधिक विस्तार से वर्णन किया जाता है।

पुराने समय में एक नास्तिक मुल्हिद एक मुसलमान बादशाह के पास आया, और यह कहा कि मैं अल्लाह के वजूद को स्वीकार नहीं करता। मेरा अक़ीदा है कि यह ब्रह्माण्ड अपने आप वजूद में आ गई है। और इसका निज़ाम अपने आप चल रहा है। इस मुल्हिद ने बादशाह से कहा कि किसी आलिम को बुलाऐं जो मुझ से इस विषय पर बहस करे। अत: बादशाह ने एक मुसलमान बुज़ुर्ग को जो दरिया की दूसरी तरफ़ रहते थे, दरबार में हाज़िर होने के लिए पैग़ाम भेजा। पैग़ाम पहुंचाने वाले से मुसलमान बुज़ुर्ग आलिम ने दरबार में हाज़िर होने का कारण पूछा की, अत: उसने मुल्हिद के सवाल का वर्णन किया। वह मुस्लिम बुज़ुर्ग आलिम दरबार में हाज़िर हुए, और आते ही उस मुल्हिद की मौजूदगी में बादशाह को सम्बोधित करके कहने लगे। बादशाह सलामत, आज मेरे साथ अदभुत घटना पेश आई। हुआ यह कि मैं आपके दरबार में हाज़िर होने के लिए दरबार के किनारे किश्ती का इंतज़ार कर रहा था। अचानक देखा कि दरिया के पानी से बड़े बड़े लक्कड़ी के तख़्ते प्रकट हुए, फिर वे आपस में जुड़ने लगे, फिर लोहे के कील निकले वे उन्हें जोड़ने लगे। फिर रंग के बड़े बड़े डिब्बे पानी से निकले और अपने आप उन तख़्तों पर रंग बिरंगे बड़े बड़े डब्बे प्रकट होने लगा। और फिर अपने आप वह किश्ती तैयार हो गई। और मेरे पास किनारे पर आकर खड़ी हो गई। फिर मैं उस में बैठ गया, फिर वह कश्ती बिना किसी मल्लाह के चलने लगी। और दूसरे किनारे रुक गई। मैं इस से उतरा और आपके दरबार में हाज़िर हो गया।

जब उस नास्तिक इन्सान ने यह घटना सुनी तो ग़ुस्सा में बादशाह को सम्बोधन कर के कहने लगा, क्या आपने इस मूर्ख इन्सान को मुझ से बहस के लिए बुलाया है? क्या उसको इतनी अक़ल नहीं कि लकड़ी के तख़्ते अपने आप कैसे पानी से प्रकट हुए और किश्ती बन गए? यह हरगिज़ संभव नहीं, यह हो ही नहीं सकता।

वह मुस्लिम बुज़ुर्ग आलिम खड़े हुए,और अक़्ली तर्क के द्वारा उस नास्तिक को समझाया कि जब तुम्हारी अक़ल किश्ती के अपने आप बनने को स्वीकार नहीं करती, तो फिर तुम यह कैसे कह सकते हो कि यह ब्रह्माण्ड अपने आप बन गया।

हक़ीक़त यह है कि इस ब्रह्माण्ड का एक स्रष्टा रब्बुल आलमीन है, जिसने इस जहां को पैदा किया और उसे चला रहा है। इंतिहाई हतभागा वह इन्सान होगा जो इस सम्मान वाले अल्लाह को न समझे और उसकी मअरफत प्राप्त न करे।

इसी अक़ली तर्क के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मानव जाति को समझाते हुए लिखते हैं

"हे नेक इन्सान तू ऐसा मत कर। तेरा ख़ुदा वह है जिसने बेशुमार सितारों को बिना सतून के लटका दिया। और जिसने धरती तथा आकाश को केवल शून्य से पैदा किया। क्या तू उस पर कुधारणा रखता है।"

(कश्ती नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 21)

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को तब्लीग़ करते हुए नीचे लिखे हुए अक्ली तर्क के द्वारा समझाया कि:

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۝ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۝ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ (नूह14 से 17)

अर्थात तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह से किसी वक़ार की आशा नहीं रखते। हालाँकि उसने तुम को विभिन्न तरीक़ों पर पैदा किया। क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने कैसे सात आकाशों को एक के ऊपर एक पैदा किया और उसने उन में चांद को एक नूर बनाया और सूरज को एक रोशन चिराग़।

पाठको, यहां सात आकाशों का वर्णन है। अरबी भाषा में सात की संख्या प्रचुरता के लिए और सम्पूर्णता के लिए भी प्रयोग होता है।

चांद धीमी रोशनी देता है। चांद की रोशनी अपनी ज़ाती रोशनी नहीं वह सूरज की रोशनी को ही बड़े हसीन अंदाज़ में प्रतिबिम्बित करता है। चांद हम से चार लाख किलोमीटर दूर है।

सूरज हमें तेज़ रोशनी और गर्मी देता है। धरती और चांद के मध्य जो दूरी है सूरज का क्षेत्रफल इस से साढ़े तीन गुना अधिक है। धरती में जितना माद्दा है इस से तीन लाख गुना अधिक माद्दा सूरज में है। सूरज के ऊपरी हिस्सा में जो लाल सतह हम को नज़र आती है उस की गर्मी छ: हज़ार डिग्री है और सूरज के मध्य में तो गर्मी एक करोड़ डिग्री से भी अधिक होती है। ऐटमी ताकत के निकलने से यह गर्मी पैदा होती है। सूरज हमारी धरती से पंद्रह करोड़ किलो मीटर दूर है।

ध्यान देने का स्थान यह है कि एक मामूली चिराग़ बनाने के लिए भी किसी बनाने वाले की ज़रूरत होती है। सूरज और चांद जैसे महान रोशनी देने वाले वजूद अपने आप कैसे बन सकते हैं? अक़्ल से सोचने वाले केवल इसी एक तर्क से अल्लाह तआला की हस्ती तक पहुंच सकते हैं।

संसार की व्यवस्था का अक़्ली तर्क

सूरत यासीन में अल्लाह तआला ने खगोल के बारे से अपनी हस्ती के तर्कों को इस तरह बयान फ़रमाया।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ

(यासीन 38 से 41)

अर्थात और उनके लिए रात भी एक निशान है इस से हम दिन को खींच निकालते हैं। अत: अचानक वे फिर अन्धेरों में डूब जाते हैं और सूरज (हमेशा)अपनी निर्धारित की गई मंज़िल की तरफ़ चल रहा है। यह कामिल ग़लबा वाले (और) ज्ञान वाले की (जारी) की गई तक़दीर है। और चांद के लिए भी हमने मनाज़िल निर्धारित कर दी हैं। यहां तक कि वह खजूर की पुरानी शाख़ की तरह हो जाता है। सूरज की पहुंच में नहीं कि चांद को पकड़ सके और न ही रात-दिन से आगे बढ़ सकती है और सब के सब (अपनी- अपनी) धुरी पर चल रहे हैं।

ब्रह्माण्ड और फिर उसकी निरन्तर हरकत को बतौर अक़ली तर्क

वर्णन करते हुए अल्लाह तआला अक्ल वालों को अर्थात अस्हाबे अक़्ल को दावते फ़िक्र देते हुए फ़रमाता है कि

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ

(आले इमरान 191)

दिन के बाद रात का आना और रात के बाद दिन का आना अल्लाह तआला की हस्ती की बड़ी दलील है। अब हम जानते हैं कि धरती गोल है और धरती अपनी धुरी पर घूम रही है और धरती का जो हिस्सा सूरज की तरफ़ होता है वहां दिन होता है और जो सूरज की तरफ़ नहीं होता वहां रात होती है। इतनी उम्दगी से धरती घूम रही है कि हमें ज़र्रा भी धक्का नहीं लगता। एक लंबे समय तक लोग यही समझते रहे कि धरती ठहरी हुई और समस्त आकाशी आकाशीय पिण्ड धरती के गिर्द घूम रहे हैं जैसा कि ज़ाहिर में नज़र आता है।

एक लट्टू को हम घुमाते हैं तो वह थोड़ी देर अपनी धुरी पर घूम कर गिर जाता है, परन्तु हमारी धरती अरबों साल से घूम रही है और घूमना बंद नहीं होता। घूमने की रफ़्तार में अन्तर होता है परन्तु वह बहुत हल्का अन्तर है। इस के घूमने की रफ़्तार कम होती जा रही है परन्तु सिर्फ एक सदी में लगभग एक सैकण्ड के हज़ारवें हिस्सा के बराबर और यह हमारे रिसर्च के लिए मुहर्रिक है। इस से हमें धरती और चांद के पहले के आपसी सम्बन्धों का इल्म होता है। हमें यह भी मालूम हुआ कि न केवल धरती अपनी धुरी पर घूम रही है और चौबीस घंटे में इसका एक चक्र होता है। बल्कि वह सूरज के गिर्द भी घूम रही है और सूरज के गिर्द एक चक्कर एक साल में पूरा करती है। 30 किलो मीटर प्रति सैकेंड की तेज़-रफ़्तार से घूम रही है परन्तु इस हरकत से भी कोई धक्का नहीं लगता और हम महसूस भी नहीं करते। अलबत्ता उस का एक स्पष्ट नतीजा आकाश को देखने से मालूम हो जाता है और वह यह है कि साल के दौरान सूरज 12 बुर्जों में से गुज़र कर एक साल के बाद फिर आकाश पर अपने पहले स्थान पर आ जाता है।

सूर्य का निज़ाम एक बहुत बड़े निज़ाम अर्थात आकाश गंगा के निज़ाम का हिस्सा है। बीसवीं सदी में यह पता चला कि सूरज अपने समस्त सूर्य के निज़ाम के साथ ग्रहों को लिए हुए हमारी Galaxy आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द 200 किलोमीटर प्रति सैकण्ड से अधिक रफ़्तार के साथ घूम रहा है और आकाश गंगा का मर्कज़ के गिर्द एक चक्कर 20 करोड़ साल में पूरा करता है। सूरज के साथ हम सब भी इसी तेज़ रफ़्तारी से आकाशगंगा के मर्कज़ के गिर्द घूम रहे हैं और निरन्तर Nonstop सफ़र के बावजूद हमें कोई थकान महसूस नहीं होती और धरती का गुरुत्वाकर्षण भी हमें इधर उधर जाने नहीं देता, मज़बूती के साथ धरती पर क़ायम रखता है। यह अल्लाह की सनअत है जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया है। मोटर कार, रेल-गाड़ी, हवाई जहाज़ सब किसी चलाने वाले के मुहताज हैं हम कैसे कह सकते हैं कि धरती और सूरज और चांद और दूसरे पिन्डों को चलाने वाला कोई ख़ुदा नहीं है।

दुआ की स्वीकारियता के द्वारा अक़्ली दलील

एक मुख्य अक़्ली दलील जो क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला की हस्ती के सबूत में मिलती है वह यह है कि वह दुआओं को स्वीकार करता है। जब कोई इन्सान घबरा कर उसके हुज़ूर में दुआ करता है तो वह उसे स्वीकार करता है। और यह बात किसी ख़ास ज़माना के बारे में नहीं बल्कि हर ज़माना में इस के नज़ारे मौजूद होते हैं। अत: अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है कि

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

(अल-बकर 187)

अर्थात जब मेरे बंदे मेरे बारे में सवाल करें तो उन्हें कह दे कि मैं हूँ और फिर क़रीब हूँ पुकारने वाले की दुआ को सुनता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। अत: चाहिए कि वे भी मेरी बात स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। अब यदि कोई शख़्स कहे कि कैसे मालूम हो कि ख़ुदा दुआ सुनता है, क्यों न कहा जाए कि संयोग से कई दुआ करने वालों के काम हो जाते हैं जैसे कई के लोगों की नहीं भी होते। यदि सब दुआएं स्वीकार हो जाएं तब भी कुछ बात थी परन्तु हम देखते हैं कि अक्सर लोगों की दुआएं स्वीकार नहीं होतीं। इस से तो यही नतीजा निकलता है कि जो यह कहते हैं कि उनकी दुआएं स्वीकार हुईं और उनके काम हो गए ,या बीमार ठीक हो गए। वे संयोग से अपने आप हो गया? तो इसका जवाब यह है कि दुआ की स्वीकारियता अपने साथ निशान रखती है अत: हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादयानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की सत्ता के सबूत की दलील में यह प्रस्तुत किया था कि कुछ बीमार जो ख़तरनाक तौर पर बीमार हूँ चुने जाएं और बांट लिए जाएं और एक गिरोह डाक्टर का उसका इलाज करें और एक तरफ़ में अपने हिस्सा वालों के लिए दुआ करूँ फिर देखो कि किस के बीमार अच्छे होते हैं। (दस दलीले हस्ती बारी तआला, पृष्ठ 21) अब इस इम्तिहान के तरीक़ा में क्या शक हो सकता है।

ला-इलाज मरीज़ के ठीक होने के सिलसिला में एक और दलील यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में एक छात्र जिसका नाम अब्दुल क़रीम पुत्र अब्दुर्रहमान निवासी हैदराबाद दक्खन से कादियान शिक्षा प्राप्त करने के लिए आया था। क़ादियान में निवास के दौरान एक दिन उसे पागल कुत्ते ने काट लिया। उस समय में ऐसे इन्सान की मौत यक़ीनी समझी जाती थी। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अब्दुल क़रीम को क़सौली (ज़िला सोलन हिमाचल) इलाज के लिए भिजवाया। इस समय में वहां ऐसे इन्सान का इलाज होता था। वहां उसका इलाज हुआ, और वह ठीक हो कर वापस क़ादियान आ गया। कुछ दिन के बाद इस पर पागलपन प्रकट हुए। इसी कारण कसौली के डाक्टर से पूछा गया, डाक्टर ने जवाब में टेलीग्राम भिजवाया

Sorry nothing can be done for Abdul Karim.

अनुवाद अफ़सोस कि अब्दुल क़रीम के लिए कुछ नहीं किया जा सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऐसे असाध्य मरीज़ के लिए दुआ की और वह ठीक हो गया।

ऐसा मरीज़ जिसके बारे में इस बीमारी का माहिर डाक्टर इस सीमा तक निराश हो कर जवाब दे रहा है कि अफ़सोस ऐसी हालत में मरीज़ को बचाने के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता। वह दुआ से ठीक हो जाता है। तो यह दलील है इस हक़ीक़त की कि "अल्लाह" मौजूद है वह दुआ को सुनने वाला है। दुआओं को स्वीकार करता है।

वह इन्सान जिसे अल्लाह तआला की हस्ती की दलील चाहिए उसे चाहिए कि सच्चे दिल से ख़ुदा के सामने झुकते हुए उस से दुआ मांगे। अल्लाह तआला अपने आप उसे अपनी मार्फ़त प्रदान कर देगा। अक़्ल के इलावा उसका दिल भी इस दलील से सन्तुष्ट हो जाएगा।

एहतियाती दलील

कई बार हम दुनिया में एक काम केवल इस लिए करते हैं कि इसका करना मानो वैसे किसी माक़ूल आधार पर ज़रूरी न हो परन्तु सावधानी के पहलू को समक्ष रखकर ज़रूरी होता है। जैसे यदि हम रात के समय किसी वीरान जंगल में डेरा लगाते हैं तो कई बार बावजूद इस इल्म के कि जंगल के इस हिस्सा में किसी दरिन्दा या चोर डाकू का अंदेशा नहीं है हम सावधानी से रात के वक़्त पहरा का प्रबन्ध कर लेते हैं इस विचार से कि

यद्यपि ज़ाहिर में कोई ख़तरा नहीं है परन्तु संभव है कि किसी ख़तरा की संभावना हो जाए और उस वक़्त हम असहाय हों ऐसी हालत में हमारी अक़्ल हमें यही मश्वरा देती है कि यदि तू कोई ख़तरा पैदा न हुआ तब भी पहरा का प्रबन्ध हमारे लिए हानिकारक नहीं और यदि कोई ख़तरा पैदा हो गया तो निसन्देह पहरा का इंतज़ाम हमें बहुत लाभ पहुंचा सकता है। अत: कई बार हम एक काम केवल एहतियाती पहलू के तौर पर धारण करते हैं और सारी दुनिया इस बात पर सहमत है कि इस प्रकार की सावधानी के प्रबन्ध भी ज़रूरी और लाभदायक होते हैं।

अब इस नियम के अधीन हम हस्ती बारी तआला के उसूल पर नज़र डालते हैं तो हमारी अक़्ल यही फ़ैसला करती है कि ख़ुदा पर ईमान लाना, इन्कार करने से बहरहाल अधिक अमन वाला और अधिक सावधानी का तरीक़ा है। यदि तो कोई ख़ुदा नहीं और यह सारे संसार के काम केवल किसी संयोग का नतीजा है तो स्पष्ट है कि हमारा ईमान लाना हमारे लिए किसी तरह हानिकारक नहीं हो सकता और यदि कोई ख़ुदा है (और अवश्य है) तो हमारा यह ईमान निसन्देह लाभदायक साबित होगा।

कहते हैं किसी ने हज़रत अली रज़ि से पूछा था कि ख़ुदा की हस्ती का क्या सबूत है? उन्होंने यह देखकर कि पूछने वाले सीधा सादा आदमी है उसे यही जवाब दिया कि देखो तुम्हारे लिए इतना काफ़ी है कि यदि कोई ख़ुदा नहीं है तो मान लेने वाले और न मानने वाले सब बराबर हैं। किसी का कोई नुक़्सान नहीं है और यदि ख़ुदा है तो ख़ूब याद रखो कि इन्कार करने वाले की ख़ैर नहीं।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि।

"स्पष्ट है कि केवल बौद्धिक तर्क धर्म की सच्चाई के लिए पूर्ण साक्ष्य नहीं हो सकते और यह ऐसी मुहर नहीं है कि कोई धोखेबाज़ उसके बनाने पर समर्थ न हो अपितु यह तो बुद्धि के सार्वजनिक झरने की एक भिक्षावृत्ति समझी जा सकती है। फिर इस बात का निर्णय कौन करे कि बौद्धिक बातें जो एक पुस्तक ने लिखीं वास्तव में वे इल्हामी हैं या किसी अन्य पुस्तक से चोरी करके लिखी गई हैं और यदि मान भी लें कि वे चुराई हुई नहीं हैं तो फिर भी वे ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर कब अकाट्य प्रमाण हो सकती हैं, और कब किसी सत्याभिलाषी का हृदय इस बात पर पूर्ण सन्तुष्टि पा सकता है कि केवल वही बौद्धिक बातें निश्चित तौर पर ख़ुदा का दर्शन करने वाले निशान हैं और कब यह सन्तोष भी हो सकता है कि वे बातें ग़लती से पूर्णतया पृथक हैं। अत: यदि एक धर्म केवल कुछ बातों को बुद्धि या दर्शनशास्त्र की ओर सम्बद्ध करके अपनी सच्चाई का कारण वर्णन करता है तथा आकाशीय निशानों और विलक्षण बातों को दिखाने से असमर्थ है तो ऐसे धर्म का अनुयायी धोखा खाया हुआ अथवा धोखा देने वाला है और वह अंधकार में मरेगा।

इसलिए केवल बौद्धिक तर्कों द्वारा तो ख़ुदा तआला का अस्तित्व भी निश्चित तौर पर सिद्ध नहीं हो सकता, कहां यह कि उस से किसी धर्म की सच्चाई सिद्ध हो जाए तथा जब तक एक धर्म इस बात का उत्तरदायी न हो कि वह ख़ुदा के अस्तित्व को निश्चित तौर पर सिद्ध करके दिखाए तब तक वह धर्म कुछ वस्तु नहीं तथा दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो ऐसे धर्म पर मुग्ध हो। प्रत्येक वह धर्म जो अपने मस्तक पर ला'नत का दाग़ रखता है जो मनुष्य के आध्यात्म ज्ञान को उस स्तर तक नहीं पहुंचा सकता जिस से वह मानो ख़ुदा का दर्शन कर ले और कामवासना का अंधकार रूहानी अवस्था से परिवर्तित हो जाए और ख़ुदा के ताज़ा निशानों से ताज़ा ईमान प्राप्त हो जाए, न केवल डींगों के तौर पर अपितु वास्तविक तौर पर एक पवित्र जीवन प्राप्त हो जाए।"

(बराहीन अहमदिया, भाग 5, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 21, पृष्ठ 60)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

"ये आयतें उतरीं कि मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) अपवित्र हैं, गन्दे हैं, सृष्टि में सर्वाधिक निकृष्ट हैं, मूर्ख हैं और शैतान की सन्तान हैं, उनके उपास्य अग्नि और नर्क का ईंधन हैं तो अबू तालिब ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलाकर कहा कि हे मेरे भतीजे! अब तेरे अपशब्दों से जाति अत्यन्त उत्तेजित हो गई है और निकट है कि तेरा वध करें और साथ ही मुझे भी। तूने उनके मनीषियों को मूर्ख ठहराया और उन के बुज़ुर्गों को सृष्टि में सबसे अधम कहा और उन आदरणीय उपास्यों का नाम नर्क और अग्नि का ईंधन रखा और सामान्यतया उन सब को अपवित्र, शैतान की सन्तान और गन्दा ठहराया। मैं तेरे हित की दृष्टि से कहता हूँ कि अपनी जीभ को रोक और अपशब्दों से पृथक हो जा अन्यथा मैं जाति के लोगों का मुकाबला करने की शक्ति नहीं रखता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर में कहा कि हे चाचा! यह अपशब्द नहीं हैं अपितु सत्य की अभिव्यक्ति है और वस्तुस्थिति का यथा स्थान वर्णन है और यही तो कार्य है जिसके लिए मुझे भेजा गया है। यदि इस से मुझे मृत्यु का सामना करना है तो मैं अपने लिए प्रसन्नतापूर्वक इस मृत्यु को स्वीकार करता हूँ। मेरा जीवन इसी मार्ग में समर्पित है मैं मृत्यु के भय से सत्य को अभिव्यक्त करने से रुक नहीं सकता और हे चाचा! यदि तुझे अपनी कमज़ोरी और अपने कष्ट का विचार है तो तू मुझे शरण में रखने से पृथक हो जा। ख़ुदा की सौगन्ध मुझे तेरी कुछ भी आवश्यकता नहीं, मैं ख़ुदाई आदेश पहुँचाने से कभी नहीं रुकूँगा, मुझे अपने स्वामी (ख़ुदा) के आदेश प्राण से अधिक प्रिय हैं। ख़ुदा की सौगन्ध यदि मैं इस कार्य में मारा जाऊँ तो चाहता हूँ कि फिर बार-बार जीवित होकर सदैव इसी मार्ग में मरता रहूँ। यह भय का स्थान नहीं अपितु मुझे इसमें असीम आनन्द है कि उसके मार्ग में कष्ट उठाऊँ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह भाषण दे रहे थे चेहरे पर सच्चाई और प्रकाश से भरपूर आर्द्रता प्रकट हो रही थी और जब आप(स) यह भाषण समाप्त कर चुके तो सत्य का प्रकाश देखकर अबू तालिब के स्वयं आंसू जारी हो गए और कहा कि मैं तेरे इस उच्च स्थान से अज्ञान था तू और ही रूप में तथा और ही शान में है, जा अपने काम में लगा रह, जब तक मैं जीवित हूँ जहाँ तक मेरी शक्ति है मैं तेरा साथ दूँगा।" (इज़ाला औहाम रुहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 110)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को तौहीद की वह शिक्षा दी कि जन्म से लेकर देहान्त तक ज़िन्दगी का कोई क्षण कोई समय अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली न रखा। आप का यह कथन अल्लाह की मुहब्बत से कितना परिपूर्ण है इस का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है फ़रमाया मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है। पूरी पूरी रात अपने रब की याद में और इशक़ तथा मुहब्बत में गुज़ार देते। और आप का यह उपदेश तो बहुत ही हैरत करने वाला है एक अवसर पर आप ने आयशा! मेरी आँखें तो सो जाती हैं परन्तु मेरा दिल नहीं सोता। अपनी जान अल्लाह तआला के सपुर्द करते हुए आप की अन्तिम नसीहत यही थी कि सिर्फ एक ख़ुदा की उपासना करना यहूद की तरह शिर्क में न पड़ जाना और मेरी क़ब्र को सिज्दा का स्थान न बना लेना।

अल्लाह तआला हमारे दिलों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत पैदा करे और उसके परिणाम स्वरूप आप के नक़्श क़दम पर चलने और आप का सम्पूर्ण अनुकरण का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए। आमीन।

(मन्सूर अहमद मसरूर)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ)

☆ ☆ ☆

अल्लाह तआला के महानतम आशिक़

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

(सलीक़ अहमद नायक मुरब्बी सिल्सिला, नज़ारत उलिया क़ादियान)

ख़लाइक़ के दिल थे यक़ीं से तही
बुतों ने थी हक़ की जगह घेर ली
ज़लालत थी दुनिया पे वो छा रही
कि तौहीद ढूंढ़े से मिलती न थी
हुआ आपके दम से इस का क़ियाम
अलैकस्लातो अलैकस्सलाम

सरवरे कायनात हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बरकतों वाला वजूद अल्लाह तआला की हस्ती को दिखाने वाला था। आप का हर कथन तथा कर्म इश्क़ इलाही से परिपूर्ण था। आपकी ज़िन्दगी केवल अपने मौला की प्रसन्नता के लिए वक़्फ़ थी यही कारण है कि अल्लाह तआला ने भी अर्श पर यह गवाही दी कि हे नबी तू कह दे मेरी नमाज़ ,मेरी क़ुर्बानियां, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह ही के लिए हैं जो समस्त जहानों का रब है और उसका कोई साझी नहीं। मुझे इसी बात का आदेश दिया गया है और मैं इसका सबसे पहला आज्ञाकारी हूँ। (सूर अल-अनाम 163,164)

आपके मुबारक व्यक्तित्व का ही यह गुण था कि आप पर ही अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात के बारे में उन छुपे हुए भेदों का प्रादुर्भव किया जिनका आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इलावा कायनात में किसी पर प्रादुर्भव नहीं किया गया। अत: आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझ पर अपने महामिद और प्रशंसा के मआरिफ़ इस तौर पर खोले हैं कि मुझ से पहले किसी और शख़्स पर इस तरह नहीं खोले गए।

(सही बुख़ारी, किताबुत्तफसीर, सूर इस्राईल)

अल्लाह तआला की हस्ती के लिए आप के दिल में कितना ध्यान था इस का अंदाज़ा आपकी ज़िन्दगी के सम्बन्ध रखने वाले हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कर्म से बड़ी स्पष्टता के साथ प्रकट होता है। इस की कुछ झलकियाँ पाठकों की सेवा में पेश हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादतों का स्तर बहुत ही उम्दा था। अल्लाह तआला की पूर्ण और शुद्ध मुहब्बत से आरम्भ से ही आप का दिल भरा हुआ था चाहे बचपन हो या भरपूर जवानी हर दौर में सिर्फ ज़िक्रे इलाही और इबादतें ही आपका लक्ष्य नज़र आती हैं। दुनिया से अलग होकर एकान्त का मार्ग धारण कर के केवल अपने मअशूक़ से बातें ही आपके दिल की तसल्ली और सन्तोष का कारण था। अत: जवानी में ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नेक और सच्ची ख़्वाबों का सिल्सिला शुरू हो चुका था। (बुख़ारी, बाब बदउल वह्य)

जवानी में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर साल ग़ारे हिरा में एक महीना के लिए एतकाफ़ फ़रमाया करते और तन्हाई में अल्लाह को याद करते थे। जाहलियत में क़ुरैश की इबादत का यह एक तरीक़ा था। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह एतकाफ़ ख़त्म होता तो वापस आकर पहले ख़ाना कअबा का तवाफ़ करते फिर घर तशरीफ़ ले जाते। जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहली वह्य हुई तो यह रमज़ान का ही महीना था जिसमें आप ग़ारे हिरा में एतकाफ़ फ़र्मा रहे थे।

(अस्सीरतुनव्यिा ले इब्न हश्शाम, भाग 1 पृष्ठ 250 से 251 प्रकाशन मुस्तफ़ा अलबाबी अल-हलबी)

इबादतों का सिलसिला केवल फ़र्ज़ नमाज़ों तक ही सीमित नहीं था बल्कि इसके इलावा विशेष रूप से रात के समय आप अल्लाह तआला की गहरी मुहब्बत से सरशार हो कर अत्याधिक विनय तथा विम्रता से बहुत लंबी और ख़ूबसूरत नमाज़ पढ़ा करते थे। यहां तक कि आपके पैर फूल जाया करते। अपने रब की इबादत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर दूसरी चीज़ से अधिक प्यारी थी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक समय में नौ पत्नियां रहीं अपनी प्रिय पत्नी हज़रत आयशा के यहाँ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नौवीं दिन बारी आती थी। एक बार सर्दी के मौसम की सर्द रात को उनके लिहाफ़ में दाख़िल हो जाने के बाद उन से फ़रमाने लगे आयशा ! यदि आज्ञा दो तो आज रात में अपने रब की इबादत में गुज़ार लूं। उन्होंने ख़ुशी से आज्ञा दे दी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह सारी रात इबादत में व्यतीत की और रोते रोते सिज्दा-गाह गीला कर दी।

(अद्दुरुल मन्सूर फी तफसीलि मासूर लिस्सयूती भाग 6 पृष्ठ 27 प्रकाशन बेरूत)

इश्क़ इलाही का प्रादुर्भव आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीद की स्थापना की कोशिशों से भी प्रकट है। आपकी शरीयत की पहली शिक्षा ही कलिमा तौहीद ला इलाहा इल्लल्लाह था। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ओढ़ना बिछौना तौहीद ही था। सुबह शाम ख़ुदा की तौहीद का दम भरते थे। दिन चढ़ता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के होंठों पर यह दुआ होती। "हमने इस्लाम की फ़ितरत और कलिमा इख़लास (अर्थात तौहीद) पर और अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म और अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत पर सुबह की जो तौहीद वाले थे और मुशरिकों में से न थे।"

(मस्नद अहमद, भाग 3 पृष्ठ 406 प्रकाशन बेरूत)

शाम होती तो यह दुआ ज़बान पर होती।اَمْسَيْنَا وَاَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ "हमने और सारे जहां ने अल्लाह के लिए शाम की है और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वह एक है इसका कोई शरीक नहीं। बादशाहत उसी की है। समस्त प्रशंसाओं का वही मालिक है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।"

(मुस्लिम ,किताबुल ज़िक्र, बाब अत्तऊज़ मिन शर्मा अमल 4901)

कोई मुसीबत आती तो यह दुआ करते। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ " अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वही शान वाला और सहनशील है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वह महान अर्श का रब है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वो आकाश और धरती का रब है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, वह अर्श करीम का रब है।"

(बुख़ारी, किताबुद्दअवात ,बाबुद्दुआ इन्दल क़रब 5869)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही थे जिन्होंने शिर्क तथा बुत परस्ती के माहौल में नारा तौहीद बुलन्द किया। फिर उमर भर तौहीद का झण्डा ऊंचा किए रखा और कभी इस पर आँच न आने दी। इस कलमा तौहीद के लिए हर तरह के दुख उठाए, कष्ट बर्दाश्त किए, अपने जानी दोस्तों की क़ुर्बानी भी दी और ख़ुद अपनी जान की क़ुर्बानी पेश करने से भी दरेग़ न किया। हमेशा तौहीद की स्थापना के लिए

दृढ़ता का पहाड़ बन कर समस्त कठिनाइयों का मुक़ाबला किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौहीद को ही निजात का माध्यम क़रार दिया और फ़रमाया कि जिसने सच्चे दिल से अल्लाह तआला की तौहीद को स्वीकार किया वह जन्नती है।

(मस्नद अहमद,भाग 4 पृष्ठ 411 प्रकाशन बेरूत)

इस के अतिरिक्त ज़िन्दगी की बड़ी से बड़ी परीक्षा में भी जब ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की जानें ख़तरा में थीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तौहीद की सुरक्षा से ग़ाफ़िल नहीं हुए बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत तौहीद कमाल शान के साथ प्रकट हुई। एक रिवायत में आता है कि हज़रत बराय रज़ि कहते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पैदल फ़ौज के पच्चास आदमियों पर अहद के दिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि को निर्धारित किया और फ़रमाया कि यदि तुम यह भी देख लो कि हमें जानवर नोच रहे हैं तब भी अपनी इस जगह से न हिलना जब तक तुम को मैं कहला न भेजूँ। और यदि तुम यह मालूम कर लो कि हमने दुश्मन को शिकस्त दे दी है और उनको मसल दिया है तब भी उस वक़्त तक कि तुम्हें कहला न भेजा जाए अपनी जगह न छोड़ना। इसके बाद जंग हुई और मुस्लमानों ने कुफ़्फ़ार को शिकस्त दे दी। इस बात को देखकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि के साथियों ने कहा कि हे क़ौम ग़नीमत का वक़्त है, ग़नीमत का वक़्त है तुम्हारे साथी ग़ालिब आ गए फिर तुम क्या प्रतीक्षा कर रहे हो इस पर अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि ने उन्हें कहा कि क्या तुम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म भूल गए हो। उन्होंने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम भी सारी फ़ौज के साथ मिलकर ग़नीमत हासिल करेंगे। जब लश्कर से आकर मिल गए तो उनके मुँह फेरे गए और शिकस्त खा कर भागे इसी के बारे में क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत नाज़िल हुई है कि "याद करो जब रसूल तुमको पीछे की तरफ़ बुला रहा था।"और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ केवल बारह आदमियों के और कोई न रहा उस वक़्त कुफ़्फ़ार ने हमारे सत्तर आदमियों का नुक़्सान किया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा रज़ि जंग बदर में कुफ़्फ़ार के एक सौ चालीस आदमियों का नुक़्सान किया था। सत्तर क़त्ल हुए थे और सत्तर क़ैद किए गए थे।

अत: जब लश्कर बिखर गया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द सिर्फ एक छोटी जमाअत ही रह गई तो अबू सुफ़ियान ने पुकार कर कहा कि क्या तुम में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) है और इस बात को तीन बार दुहराया परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ि को मना कर दिया कि वे जवाब दें। इस के बाद अबूसुफ़ियान ने तीन बार ऊंची आवाज़ से कहा कि क्या तुम में इब्ने अबी क़हाफ़ा (हज़रत अबू बकर रज़ि) है। इसका जवाब भी न दिया गया तो उसने फिर तीन बार पुकार कर कहा कि क्या तुम में इब्न अलख़त्ताब (हज़रत उमर रज़ि) है। फिर भी जब जवाब न मिला तो उसने अपने साथियों की तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहा कि ये लोग मारे गए हैं। इस बात को सुनकर हज़रत उमर रज़ि बर्दाश्त न कर सके और फ़रमाया कि हे ख़ुदा के दुश्मन तूने झूठ कहा है जिनका तूने नाम लिया है वे सब ज़िन्दा हैं और वह चीज़ जिसे तू नापसंद करता है अभी बाक़ी है। इस जवाब को सुनकर अबूसुफ़ियान ने कहा कि आज के दिन बदर का बदला हो गया। और लड़ाईयों का हाल डोल का सा होता है तुम अपने मक़्तूलों में कई ऐसे पाओगे कि जिनके नाक कान कटे हुए होंगे। मैंने इस बात का हुक्म नहीं दिया था परन्तु में इस बात को नापसन्द भी नहीं करता। फिर गर्व से यह बात ऊंची आवाज़ में कहने लगा कि اُعْلُ هُبَلَ اُعْلُ هُبَل अर्थात हे हुबुल (बुत) तेरा दर्जा बुलंद हो, हे हुबल तेरा दर्जा बुलंद हो । इस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम उस को जवाब क्यों नहीं देते। सहाबा रज़ि ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह हम क्या कहें ? आप ने फ़रमाया कहो : اللہ اعلیٰ واجل ख़ुदा तआला ही सबसे बुलंद रुत्बा और सबसे अधिक शान वाला है। अबू सुफ़ियान ने यह सुनकर कहा "हमारा तो एक बुत उज़्ज़ा है और तुम्हारा कोई उज़्ज़ा नहीं।" जब सहाबा रज़ि ख़ामोश रहे तो रसूल करीम ने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्यों तुम जवाब नहीं देते। सहाबा रज़ि ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल अल्लाह हम क्या कहें ? आप ने फ़रमाया उन्हें कहा कि कहो कि "اللہ مولانا ولا مولیٰ لکم" ख़ुदा हमारा दोस्त तथा काम बनाने वाला है और तुम्हारा कोई दोस्त नहीं।"

(सही बुख़ारी ,किताबुल जिहाद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिंबर पर ख़ुत्बा देते हुए यह आयत पढ़ी "आकाश लिपटे हुए हैं उस के दाहने हाथ में। वह पवित्र है और बहुत बुलंद उन शरीकों से जो लोग उस के मुक़ाबला में ठहराते हैं।"

फिर हज़ूर ने कहा अल्लाह तआला फ़रमाता है मैं बड़ी ताक़तों वाला और नुक़्सान को दूर करने वाला हूँ। मेरे लिए ही प्रशंसा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन शब्दों को बार-बार बड़े जोश से दोहरा रहे थे यहां तक कि मिंबर हिलने लगा और हमें ख़्याल हुआ कि कहीं मिंबर गिर ही न जाए। (मस्नद अहमद बिन हंबल ,भाग 2 सफ़ा 88)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शिर्क तथा बुत परस्ती के अन्धेरे वाले युग में तौहीद की स्थापना का महान काम लिया जाना था। इस लिए अल्लाह तआला ने आरम्भ से ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में तौहीद की मुहब्बत और बुतपरस्ती से नफ़रत रख दी थी और अपनी विशेष इरादा से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर किस्म के शिर्क से सुरक्षित रखा ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक खिलाई उम्मे एमन वर्णन करती थीं कि "बोवाना" वह बुत था जिसका क़ुरैश बहुत सम्मान करते थे। इस के पास हाज़री दे कर क़ुर्बानियां गुज़ारते और साल में एक दिन वहां एतकाफ़ करते थे। अबू तालिब भी अपनी क़ौम के साथ वहां जाते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी साथ ले जाना चाहते परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन्कार कर देते। यहां तक कि कई बार हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफियां और अबू तालिब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सख़्त नाराज़ होते और कहते कि बुतों से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेज़ारी के कारण हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में डर ही रहता है।

एक बार अपनी फूफियों के बार बार कहने पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां चले तो गए परन्तु सख़्त भयभीत हो कर वापस आ गए और कहा कि मैंने वहां एक अजीब मन्ज़र देखा है। फूफियों ने कहा कि इतने नेक इन्सान पर शैतान प्रभाव नहीं कर सकता और पूछा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या देखा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि जैसे ही मैं बुत के क़रीब जाने लगता था तो सफ़ैद रंग और लंबे क़द का एक शख़्स चिल्ला कर कहता था हे मुहम्मद ! पीछे रहो और इस बुत को मत छूओ। बाद में फूफियों ने भी बुतों के पास जाने के लिए बार बार कहना छोड़ दिया और अल्लाह तआला ने हमेशा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसी मुशरिकाना रस्मों से सुरक्षित रखा।

(दलालयुल नबुव्वत लिल्बहीक़ी भाग 2 सफ़ा 26 से 29 प्रकाशन बेरूत)

आप के इश्क़ इलाही का पता इस बात से भी चलता है कि आप अल्लाह तआला के आदेशों की किस तरह पाबन्दी करते थे। आप उस वक़्त तक मक्का से नहीं निकले जब तक कि ख़ुदा की तरफ़ से हुक्म न हुआ। हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं हम एक दिन बैठे हुए थे कि ऐन

दोपहर के समय रसूल करीम तशरीफ़ लाए और सिर लपेटा हुआ था जबकि आप ऐसे वक़्त में कभी नहीं आया करते थे। हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों आप इस वक़्त किसी बड़े काम के लिए आए होंगे। हज़रत आयशा रज़ि फ़रमाती हैं कि रसूल करीम ने इजाज़त मांगी और इजाज़त मिलने पर घर में आए और फ़रमाया कि जो लोग बैठे हैं उनको उठा दो। हज़रत अबू बकर रज़ि ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल, अल्लाह की कसम वह आपके घर वाले ही तो हैं । आप ने फ़रमाया अच्छा मुझे हिजरत का हुक्म हुआ है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल क्या मुझे आपकी संगत नसीब हो सकती है। आपने उनकी दरख़ास्त को स्वीकार करते हुए फरमाया हाँ।" (बुख़ारी किताबुल मनाक़िब बाब हिजरतुन्नबी)

इस घटना से मालूम होता है कि आप उस वक़्त तक मक्का से नहीं निकले जब तक हुक्म न हुआ और आख़िर वक़्त तक इस बात पर क़ायम रहे कि ख़ुदा तआला के हुक्म के बिना कोई काम नहीं करना।

फिर प्रियतम के इशक़ के प्रकटन की एक निशानी यह भी होती है कि प्रियतम का ख़ौफ़ और भय भी मुहब्बत के साथ साथ बढ़ता जाता है। अत: अल्लाह के भय का यह पक्ष भी रश्क योग्य है। उसका एक उच्च उदाहरण जंग बदर में देखने को मिला कि जब बदर के दौरान दुश्मन के मुक़ाबला में आप आपनी जान कुरबान करने वाले बहादुरों को लेकर खड़े हुए थे। अल्लाह तआला के समर्थन के निशान प्रकट हो रहे थे। कुफ़्फ़ार ने अपना क़दम जमाने के लिए कठोर धरती पर डेरे लगाए थे और मुसलमानों के लिए रेत की जगह छोड़ दी थी परन्तु ख़ुदा ने बारिश भेज कर कुफ़्फ़ार के ख़ैमों में कीचड़ ही कीचड़ कर दिया और मुसलमानों का स्थान मज़बूत हो गया। इसी तरह और भी आकाशीय समर्थन प्रकट हो रहे थे। परन्तु बावजूद इसके अल्लाह तआला का ख़ौफ़ ऐसा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ग़ालिब था कि सब वादों और निशानों के बावजूद इसके ग़िना को देखकर घबराते थे और व्याकुल हो कर उसके हुज़ूर में दुआ करते थे कि मुसलमानों को फ़तह दे। आप यह दुआ कर रहे थे और इस व्याकुलता की कैफ़ीयत में आप की चादर बार बार कंधों से गिर जाती थी।

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَنْشُدُ عَھْدَکَ وَوَعْدَکَ اَللّٰھُمَّ اِنَّ تَھْلِکْ ھٰذِہِ الْعِصَابَۃَ مِنْ اَھْلِ الْاِسْلَامِ لَا تُعْبَدُ فِی الْاَرْض

(तारीख़ तिबरी) हे मेरे ख़ुदा अपने वादा को अपनी मदद को पूरा फ़र्मा। हे मेरे अल्लाह यदि मुसलमानों की यह जमाअत आज हलाक हो गई तो दुनिया में तुझे पूजने वाला कोई नहीं रहेगा।

उस वक़्त आप इतने व्याकुलता की हालत में थे कि कभी आप सिज्दा में गिर जाते और कभी खड़े हो कर ख़ुदा को पुकारते थे और आप की चादर आप के कंधों से गिर पड़ती थी। हज़रत अली रज़ि कहते हैं मुझे लड़ते लड़ते आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़्याल आता और मैं दौड़ के आप के पास पहुंच जाता तो देखता कि आप सिज्दा में हैं और आप की ज़बान पर या हय्यो या क़य्यूम के शब्द जारी हैं । हज़रत अबू बकर रज़ि जोश फ़दाईत में आप की इस हालत को देखकर बेचैन हो जाते और निवेदन करते हे रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों आप घबराएँ नहीं। अल्लाह ज़रूर अपने वादे पूरे करेगा परन्तु इस कथन के अनुसार कि ''हर आरिफ तरासत तर्सां " बराबर दुआ व्याकुलता में लीन रहे। आप के दिल में अल्लाह तआला का भय का इतना गहरा एहसास था कहीं ख़ुदा के वादों में कोई ऐसा पहलू छुपा न हो जिसके न जानने से तक़दीर बदल जाए।

(सही बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी दरइन्नबी)

इसी तरह आप की इलाही मुहब्बत का जलवा देखकर आपके बारे में मक्का वाले यह मशहूर करने लगे कि मुहम्मद अपने रब का दीवाना हो गया। वाक़ई इस में क्या शक है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने रब के सच्चे आशिक़ थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का ज़हूर नमाज़ों, इबादतों, दुआओं और जिक्रे इलाही से ख़ूब स्पष्ट है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत इलाही की यह हालत थी कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सालम की यह दुआ बड़े शौक़ से अपनी दुआओं में शामिल करते थे।

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلَ الَّذِی یُبَلِّغُنِی حُبَّکَ، اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَفْسِی وَمَالِی وَاَھْلِی وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ

अर्थात: हे अल्लाह मैं तुझ से तेरी मुहब्बत मांगता हूँ और उस की मुहब्बत भी जो तुझसे मुहब्बत करता है। मैं तुझ से ऐसे कर्म की तौफ़ीक़ मांगता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुंचा दे। हे अल्लाह अपनी इतनी मुहब्बत मेरे दिल में डाल दे जो मेरी अपनी ज़ात, मेरे माल, मेरे घर वालों और ठंडे पानी से भी अधिक हो।

(तिर्मिज़ी ,किताबुद्अवात, हदीस नम्बर 3412)

परन्तु मुहब्बते इलाही की जो दुआ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाई वह हज़रत दाऊद आलैहिस्सलाम की दुआ से कहीं सारगार्भित और बलीग़ है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने मौला के हुज़ूर करते :

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یَّنْفَعُنِی حُبُّہٗ عِنْدَکَ اَللّٰھُمَّ مَا رَزَقْتَنِی مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْہُ قُوَّۃً لِّی فِیْمَا تُحِبُّ، وَمَا زَوَیْتَ عَنِّی مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْہُ فَرَاغًا لِّی فِیْمَا تُحِبُّ

अर्थात हे अल्लाह मुझे अपनी मुहब्बत प्रदान कर और उसकी मुहब्बत जिसकी मुहब्बत मुझे तेरे हुज़ूर लाभ बख़्शे। हे अल्लाह मेरी दिल पसंद चीज़ें जो तू मुझे प्रदान करे उनको अपनी महबूब चीज़ों की प्राप्ति के लिए शक्ति का माध्यम बना दे। और मेरी वे प्यारी चीज़ें जो तू मुझसे अलग कर दे उनके बदले अपनी पसंदीदा चीज़ें मुझे प्रदान फ़र्मा दे।"

(तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात हदीस 3413)

वफ़ात से पहले आख़री इच्छा

यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीद की स्थापना के लिए आख़िरी कोशिश भी थी और इच्छा भी। तभी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ किया करते थे

اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْ قَبْرِیْ وَثَنًا। अर्थात हे अल्लाह मेरी क़ब्र को बुतपरस्ती की जगह न बनाना। (मस्नद अहमद, भाग 2 पृष्ठ 246 प्रकाशन बेरूत)

फिर देखो ख़ुदा ने अपने इस तौहीद वाले बंदे की ग़ैरत तौहीद की कैसे लाज रखी कि तौहीद परस्तों के बादशाह का मुबारक रोज़ा (कब्र) हर किस्म के शिर्क की मिलावट और बुत परस्ती से पवित्र है।

अल्लाह तआला हम सब के दिलों को इश्क़े इलाही के नूर से प्रकाशित करे और हमारे दिलों को भी अल्लाह तआला का भय और मुहब्बत से परिपूर्ण करे। आमीन

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

23 फ़रवरी 2020 को हुज़ूर अन्वर मस्जिद दारुस्सलाम का उद्घाटन फ़रमाते हुए।

मस्जिद दारुस्सलाम साऊथ हाल, यूनाइटेड किंगडम की एक सुन्दर तस्वीर।

मस्जिद दारुस्सलाम साऊथ हाल के उद्घाटन पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए।

मस्जिद दारुस्सलाम साऊथ हाल के उद्घाटन के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज से सम्माननीय अतिथि भेंट करते हुए।

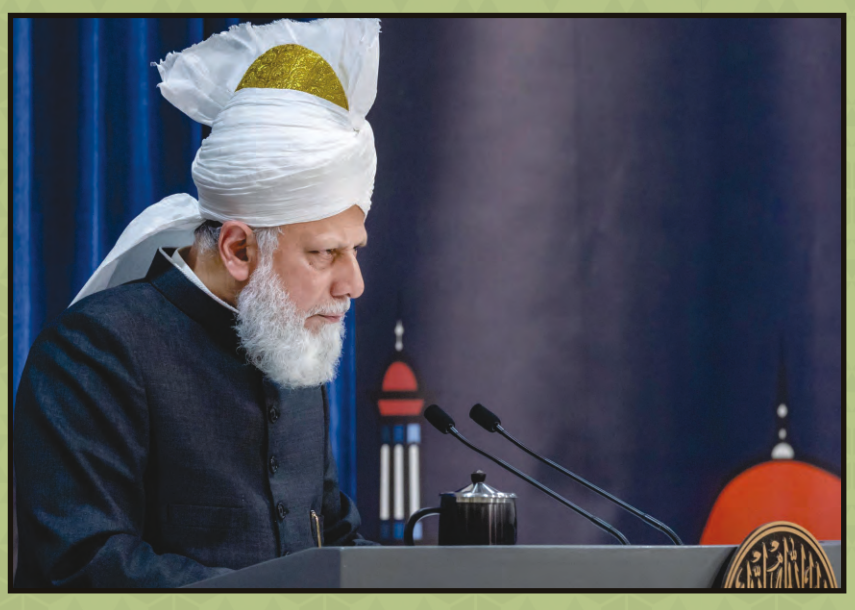

22 दिसम्बर 2019 को आयोजित नेशनल क़ायदीन फोरम मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यूनाइटेड किंगडम से हुज़ूर अनवर सम्बोधित होते हुए।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No. GDP 45/2020-2022 Vol. 5 | Thursday 24-31 December 2020 Issue No. 52-53

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

एक हदीस कुदसी में सय्यदना आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की विशेषताओं के बारे में फ़रमाते हैं

अनुवाद : हज़रत अबूज़र (रज़ि) वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की तरफ़ से यह बताया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। हे मेरे बंदो ! मैंने अपने ऊपर अत्याचार हराम कर रखा है। तुम सब राह खो गए हो सिवाय उन लोगों के जिन को मैं सही रास्ते की हिदायत दूं। इसलिए मुझ से हिदायत मांगो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा। हे मेरे बंदो ! तुम सब भूखे हो सिवाय इसके जिस को मैं खाना खिलाऊं इसलिए मुझ से ही रिज़्क तलाश करो। मैं तुम्हें रिज़्क दूंगा। हे मेरे बंदो! तुम सब नंगे हो सिवाए इसके जो मैं कपड़े पहनाऊं इसलिए मुझसे कपड़े मांगों में तुम्हें कपड़े पहनाऊंगा। हे मेरे बंदो ! तुम दिन रात त्रुटियां करो तो भी मैं तुम्हारे गुनाह माफ कर सकता हूं। इसलिए मुझ से माफी मांगो मैं तुम्हें बख्श दूंगा हे मेरे बंदो ! तुम मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते कि नुकसान पुहंचाने का इरादा करो और न ही तुम मुझे लाभ पहुँचा सकते हो कि लाभ पहुंचाने की कोशिश करो। हे मेरे बंदो! अगर तुम्हारे सब अगले और पिछले जिन्न और इन्स सबके सब पहले दर्जे के परहेज़गार और संयमी बन जाऐं और उस व्यक्ति की तरह बन जाएं जो तुम में से सबसे अधिक संयम रखता है तो तुम्हारा ऐसा हो जाना भी मेरी बादशाहत में एक कण भर भी वृद्धि नहीं कर सकता। हे मेरे बंदो ! अगर तुम्हारे सब अगले और पिछले जिन्न और इन्स सब के सब सबसे बदकार और बुरे हृदय वाले की तरह हो जाएं तो भी मेरी बादशाहत में किसी चीज़ की कमी नहीं कर सकते। हे मेरे बंदो ! अगर तुम्हारे सब अगले और पिछले जिन्न और इन्स एक मैदान में इकट्ठे हो जाएं और मुझ से ज़रुरतें मांगें और मैं प्रत्येक व्यक्ति की ज़रुरतें पूरी कर दूं तो मेरे ख़जाने में इतनी कमी नहीं आएगी जितनी समुद्र में सूई डालकर उसे बाहर निकालने से समुद्र के पानी में कमी आती है। हे मेरे बंदो ! यह तुम्हारे कर्म हैं जिनकी मैंने गणना की है। मैं तुम्हें उनका पूरा पूरा बदला दूंगा इसलिए जिस व्यक्ति का अच्छा परिणाम निकले वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे और जो व्यक्ति इसके अलावा कोई और चीज़ पाए अर्थात् विफलता का मुंह देखे तो वह अपनी ही ज़ात को बुरा कहे कि अपने ही बुरे कर्मों का परिणाम है। (मुस्लिम किताबुल्बिर वस्सिलह बाब तहरीम:)

सच्चा एकेश्वरवाद

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"स्मरण रहे कि सच्चा एकेश्वरवाद जिस को ख़ुदा तआला हम से स्वीकार कराना चाहता है और जिस के स्वीकार करने से मोक्ष सम्बद्ध है वह यह है कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व को प्रत्येक भागीदार चाहे मूर्ति हो या मनुष्य, सूर्य हो अथवा चन्द्रमा, या अपने प्राण या अपना उपाय अथवा छल-कपट हो, से पवित्र समझना उसके समक्ष किसी को सर्वशक्तिमान न ठहराना, किसी को प्रतिपालक न स्वीकार करना, किसी अन्य को सम्मान प्रदान करने वाला अथवा अपमानित करने वाला न समझना, किसी अन्य को सहायक स्वीकार न करना और यह कि अपना प्रेम विशेष उसी से सम्बद्ध करना, अपनी प्रार्थना विशेष उसी से सम्बद्ध करना। अत: किसी प्रकार का भी एकेश्वरवाद इन तीन प्रकार की विशिष्टताओं के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। प्रथम अस्तित्व की दृष्टि से एकेश्वरवाद अर्थात यह कि उसके अस्तित्व की तुलना में समस्त सृष्टि को ऐसा समझना कि उस का अस्तित्व ही नहीं है, और समस्त सृष्टि को नश्वर और अवास्तिवक विचार करना। द्वितीय विशेषताओं की दृष्टि से एकेश्वरवाद अर्थात यह कि प्रतिपालन और ख़ुदा होने का गुण परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य जीव में विद्यमान होना न स्वीकार करना, तथा जो बाह्य रूप में जीवों के रब्ब अथवा लाभ पहुंचाने वाले दिखाई देते है, इनको उसी (ख़ुदा) के हाथ का एक प्रबन्ध होने का विश्वास करना। तृतीय अपने प्रेम, सच्चाई और शुद्धता की दृष्टि से एकेश्वारवाद अर्थात प्रेम, उपासना आदि के शिष्टाचार में किसी अन्य को अल्लाह तआला का भागीदार न समझना और उसी में लीन होते जाना।"

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों के जवाब, रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 349)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad